मा बाद करबला

मौलाना रौदा कमाली





पब्लिशर

रज़वी किताब घर

425, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

بسم الله الرحمن الرحيم

मेरे क़ातिल ही बयाबान से बस्ती-बस्ती
ले गये मेरी शहादत की ख़बर नेज़ों पर

मा-बअ़्दे करबला

लेखक

मौलाना शैदा कमाली

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

425, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006 Phone : 011-23264524

 ISBN 0 1-89201-40-1

नाम किताब : मा-बअ्दे करबला

लेखक : मौलाना शैदा कमाली

बाएहतेमाम : हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली-6

प्रूफ़-रीडिंग : मंज़ूरुल-हक़ जलाल निज़ामी

हिन्दी एडीशन : पहली बार 2011

प्रकाशक : रज़वी किताब घर, दिल्ली-6

पेज : 160

तादाद : 1100

क़ीमत : 80

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

उनवानात	सफ़ा

उनवानात	सफ़ा

शाह अस्त हुसैन बादशाह अस्त हुसैन
दीन अस्त हुसैन दीन पनाह अस्त हुसैन
सर दाद नह दाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बनाए ला इलाहा अ़स्त हुसैन

(अज़ सरकार ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी अलैहिर्रहते वर्रिज़वान)

दीन की सदाक़त भी ख़त्म हो गई होती
आगही की कुव्वत भी ख़त्म हो गई होती
ज़िन्दगी तो बाक़ी है करबला के सदक़े से
वरना आदमीयत भी ख़त्म हो गई होती

रूह बीमार को दारूए शिफ़ा देना है
क़ल्बे तारीक को तनवीरे वफ़ा देना है
सुस्त है नब्ज़े बशर उसको उभारें आओ
ज़ीस्त को चाशनी आबे बक़ा देना है

शहज़ादा तसकीन वारसी

जिन किताबों से अखज़ किया गया है

1. कुरआने करीम
2. सहीह बुख़ारी
3. सहीह मुस्लिम
4. जामे तिर्मिज़ी
5. सुनने अबू दाऊद
6. अल–मुस्तद्रक
7. अल–मोअ्जमे कबीर
8. तफ़्सीरे रूहुल–बयान
9. सवाइके मुहरिक़ा
10. तफ़्सीरे कबीर
11. इरशादुल–बारी
12. शिफ़ा शरीफ़
13. कंज़ुल–उम्माल
14. शवाहिदुन्नुबुव्वह
15. दैलमी
16. अल–बिदाया वन्निहाया
17. इब्ने असीर
18. शरह अक़ाइद
19. मनाक़िबे अह्ले बैत
20. तारीख़े तबरी
21. तारीख़ इब्ने ख़ल्दून
22. तारीख़े ख़ुल्फ़ा
23. तारीख़े करबला
24. मिराअतुल–असरार
25. अल–हुसैन
26. फतावा रज़वीया
27. शहादत इमाम हुसैन
28. तफ़्सीर रूहुल–मआनी
29. वसील–ए–नजात
30. नूरुल–ऐन
31. जज़्बुल–क़ुलूब
32. सिर्रुश्शहादतैन
33. बैहक़ी
34. ग़ायतुल–इजाबा फी मनाक़िबुल–क़राबा

शर्फ़े इंतिसाब

सानीए ज़हरा हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा के नाम जिन्होंने इस्लाम का सारा बोझ बअ्दे शहादते इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु अपने कन्धों पर उठाया और कभी अली, कभी फातिमा, कभी हुसैन, कभी ज़ैनब बन कर इस्लाम की हिफ़ाज़त फरमाई।

कभी हुसैन कभी फातिमा कभी ज़ैनब
जहां पर जैसी ज़रूरत थी बन गई ज़ैनब

फ़क़त
असीरे अह्ले बैत
मुहम्मद फ़ख़्रे आलम शैदा कमाली

सलाम

सुल्ताने करबला को हमारा सलाम हो
जानाने मुस्तफ़ा को हमारा सलाम हो

अक्बर से नौजवान भी रन में हुये शहीद
हम शक्ले मुस्तफ़ा को हमारा सलाम हो

अब्बास नामदार हैं ज़ख़्मों से चूर चूर
उस पैकरे रज़ा को हमारा सलाम हो

असग़र सी नन्हीं जान पर लाखों सलाम हो
मासूम व बेगुनाह को हमारा सलाम हो

दरिया रवां है जोश में आँखों के सामने
प्यासों के पेशवा को हमारा सलाम

विलाये शाह में कहते हैं बार-बार
मेहमान करबला को हमारा सलाम हो



दीबाचा

अल्हम्दु लिल्लाहे रब्बिल–आलमीन वस्सलातु वस्सलाम अला रसूलेही व आलेही व अस्हाबेहिल–करीम।

मिटे जो हक़ की राह में फ़क़त वही शहीद है
हुसैन की मुख़ालिफ़त का नाम ही यज़ीद है
दरे हुसैन छोड़ कर चलें तो किस तरफ़ चलें
यह सारी काइनात तो हुसैन की ख़रीद है

हज़रात हमारी किताब सैय्यदना इमाम हुसैन और सैय्यदा ज़ैनब छप कर जब अवाम व ख़्वास की निगाहों से गुज़री तो अल्हम्दु लिल्लाह लोगों ने काफी पसन्द फरमाया और इस बात की फरमाइश की कि अब आप माबअ्दे करबला भी लिखिए। अवाम तो अवाम कुछ अह्ले इल्म भी मा बअ्दे करबला से नावाक़िफ़ नज़र आए। मैंने भी उसकी ज़रूरत महसूस की ताकि जदीद नस्ल वाक़या मा बअ्दे करबला से आगाह हो सके और जब मैदाने महशर में मेरी पेशी बारगाहे रब में हो तो यह किताब मेरे लिए ज़रीआ नजात बन सके। यह मेहनतें हैं मेरे वालिदैन की जिन्होंने मुझे इस लाइक़ बनाया मौला उन्हें शुहदाए करबला के साये में रखे और उन्हें असीराने करबला के सदक़े जन्नत में आला से आला मक़ाम अता फरमाए। आमीन!

वाक़ए करबला अपनी जाज़बीयत तासीर की वजह से हमेशा शेअ्र व मुफ़क्केरीन और वाइज़ीन के लिए मौज़ूअ़े सुख़न बना रहा। यह एक हक़ीक़त है कि वाक़ए करबला पर नज़्म व नस्र, तहरीर व तक़रीर के ज़रिए जितना इज़्हारे ख़्याल किया गया है, दुनिया के किसी वाक़ए पर नहीं किया गया।

वाक़ए करबला को इस्लाम से वही तअल्लुक़ है जो जिस्म को रूह से है। जिनको इससे इत्तिफ़ाक़ नहीं गोया वह आज तक इस्लाम की

हक़ीक़त को नहीं समझ सके। हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा दुनियाए इस्लाम की वह मुक़द्दस हस्तियां हैं, जिन्होंने सैंकड़ों तल्वारें, हज़ारों मसाइब बर्दाश्त करके, भूखे प्यासे रह कर अपने अज़ीज़ व अक़ारिब हत्ता कि नन्हें–नन्हें को ऐड़ियां रगड़ते हुए देखा मगर ईमान में ज़ुंबिश न हुई। इतनी सख़्ती के बावजूद भी अपने इरादे पर क़ायम रहे। ज़ुल्म करने वाले थक गये मगर ज़ुल्म सहने वाले न थके।

यज़ीद का सिर्फ़ और सिर्फ़ यही मन्शा था कि दीने मुहम्मदी का ख़ातमा कर दिया जाए और अपना मन मानी क़ानून नाफ़िज़ करके, शराब नोशी, ज़िनाकारी, रक़्स व सुरूर को आम कर दिया जाए। उन्हीं हालात के पेशे नज़र हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अपना क़दम आगे बढ़ाया और यज़ीद के नापाक मन्सूबे को ख़ाक में मिला दिया। ख़ुद तो शहीद हो गये अपने अह्लो अयाल को भी क़ुरबान कर दिया मगर इस्लाम को हमेशा के लिए हयाते जावेदानी बख़्श दिया। ताकि अब कोई भी यज़ीदी क़्यामत तक ऐसा कोई नापाक मन्सूबा न बना सके और इस्लाम के तक़द्दुस को पामाल न कर सके और हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने भी बड़ी बरजस्तगी से दरबारे यज़ीदी में यज़ीद के नापाक मन्सूबे को ख़ाक में मिला कर इमाम पाक के मिशन को दाइमी क़ुव्वत बख़्श दी।

अब कोई भी यज़ीद न बैठेगा तख़्त पर
ज़ैनब ने क़स्रे शाम पे ताला लगा दिया

फ़क़त : शैदा कमाली

दुआइया

अज़ कलम : पीरे तरीक़त मअ्दने असरारे सदाक़त व हिदायत हुज़ूर सैय्यदी मुर्शिदे बरहक़

हज़रत अल्लामा व मौलाना हाफ़िज़ व क़ारी अश्शाह शैख़

मुहम्मद हमीदुर्रहमान शाह क़ादरी

मद्दा ज़िल्लहू अन्नूरानी, गुलबरगा शरीफ़

नहमदुहू वनुसल्ली व सल्लिम : अम्मा बअ्द

अल्लाह तआला का लाख–लाख शुक्र व एहसान है कि जिसनें मौलाना शैदा कमाली को यह किताब "मा बअ्दे करबला" लिखने की तौफ़ीक़ अता फरमाई, इस किताब के ज़रीए मुसन्निफ़ ने बड़ी अज़ीम दीनी ख़िदमत अंजाम दी है अयां राचा बयां यह किताब अवामुन्नास के लिए बेहद सूदमन्द साबित होगी।

फ़क़ीर राक़िमुल–हुरूफ़ ने जस्ता–जस्ता उसे मुताला किया। अल्हम्दुलिल्लाह सुम्मा अल्हम्दु लिल्लाह क़ुरआनी आयात व अहादीस व बयानात के हवालाजात से यह मा बअ्दे करबला मुदल्लल व मबरहन है।

मेरी दुआ है कि मौला तआला इस किताब को मक़्बूलियत अता फ़रमाए और मुसन्निफ़ को दौलते ईमान से दीन व दुनिया में माला माल करे। आमीन!

शैख़ मुहम्मद हमीदुर्रहमान शाह क़ादरी
गुलबरगा शरीफ।
21 ज़ी–क़अ्दा 1430 हिज.

पेशे लफ़्ज़

बकीयतुस्सलफ़ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सूफ़ी मुहम्मद निज़ामुद्दीन साहब क़िबला सिद्दीक़ी नूरी ख़लीफ़–ए–मुफ़्तीए आज़म अलैहिर्रहमा व शैख़ुल–हदीस दारुल–उलूम ग़रीब नवाज़ बरगदवा सैफ़, पचपेड़वा, बलरामपुर, यू.पी.

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम

नहमदुहू वनुसल्ली व सल्लिम : अम्मा बअ्द

आईने जवां मरदां हक़ गोई व बेबाकी
अल्लाह के शेरों को आती नहीं रूबाही
दारा और सिकन्दर से वह मर्द फ़क़ीरे ऊला
हो जिस की फ़क़ीरी में बूए अस्दुल्लाही
अत्तार हो रुमी हो राज़ी हो ग़ज़ाली हो
कुछ हाथ नहीं आता बे आहे सहर गाही

हज़रात मुहिब्बीन अह्ले बैत व तालिबाने हक़ व सदाक़त हज़रत अल्लामा मुहम्मद फ़ख़रे आलम शैदा कमाली साहबे जिन्न की विलादत सर ज़मीने भोजपुर ज़िला बलराम पुर, यूपी, इंडिया में हुई। उनके वालिदे गिरामी आमिले कामिल पीरे तरीक़त ख़लीफ़ा हज़रत बाबा सैय्यद ऐनुल–कमाल शाह अलैहिर्रहमा बस्तवी यानी हज़रत हाफ़िज़ मुहम्मद यासीन साहब अलैहिर्रहमा ने इंकिशाफ़े हक़ीक़त फरमाते हुए फ़ख़रे आलम नाम रखा और जो तालीम व तर्बियत और रूहानी फ़ुयूज़ व बरकात अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में 12 साल रह कर हासिल किया था वह अता फरमा कर भोजपुर की सरज़मीन में इंतिक़ाल फरमा कर क़रीब करबला क़ब्रिस्तान में दफ़न हुए। हज़रत अल्लामा शैदा कमाली साहब बचपन ही से अह्ले बैत की मुहब्बत में डूबे रहते थे। इल्मे ज़ाहिर से फ़ारिग़ होने के बाद ज़िला बस्ती के मशहूर दारुल–उलूम

अह्ले सुन्नत नूरुल–उलूम टंडवा में 1978 ई. से 1987 ई. तक ख़िदमते दीन अंजाम देते रहे और मुहब्बते अह्ले बैत का मिशन फैलाते रहे।

लेकिन इस मिशन को फ़रोग़ देने में रुकावटें आने लगीं तो आप ने टंडवा को ख़ैरबाद कह दिया और मुख़्तलिफ़ ख़ानक़ाहों की सैय्याही शुरू कर दी और कई सलासिल के मशाइख़ से इक्तिसाबे फ़ैज़ हासिल करने के बाद बअ़्द अह्ले बैत का मिशन फैलाना शुरू किया।

आपकी की पांचवीं तस्नीफ़ "मा बअ़्दे करबला" नज़र नवाज़ हुई जो अह्ले इल्म के लिए एक बेबहा ख़ज़ाना है और जुहला के लिए एक मीनार–ए–नूर है। इबारत साफ़ और सलीस दर्द से पुर असर व मुस्तनद अक़्वाल से मुज़ैयन है। एक–एक सतर से मुहब्बते अह्ले बैत का चशमा फूटता है और हर जुमले से हक़ीक़त का जाम छलकता है।

क्यों न हो यह मौरूसी फन और अताई इल्म है। यही वजह है कि कम सिनी और कम उम्री ही में मुहब्बते आले रसूल का जज़्बा उनके रग व ख़ून में सरायत कर चुका था।

जिसका इज़्हार कभी शेअ़्र व सुख़न की शक्ल में, कभी तस्नीफ़ की शक्ल में कभी ख़िताबत की शक्ल में पेश करते रहे जिन्हें दुनियाए सुन्नियत में ख़तीब अह्ले बैत के नाम से याद किया जाता है और उनका ख़िताब सुनने वाला कह उठता है।

गर्म नमूद है जो मुहब्बते हुसैन की
आंखें हों ठण्डी देख लूं सूरत हुसैन की
तशरीह दास्ताने नुबुव्वत था मुद्दआ
वरना कभी न होती शहादत हुसैन की

ग़र्ज़ेकि इस किताब का मक़सद हुसैनियत और यज़ीदीयत का फ़र्क़, सच्चे और झूठे नज़रियात में इम्तियाज़, जन्नतियों और दोज़ख़ियों की पहचान, मज़्लूम और ज़ालिम की शनाख़्त और बेजा मोअ़्तरेज़ीन की नक़ाब

कुशाई है जिसकी ज़रूरत हर दौर में, हर मज्लिस में हर घर में महसूस की जाएगी और शाही महल में या गुर्बत व इफ़्लास की वादी में हर जगह मुहब्बते हुसैन का पैग़ाम देती रहेगी और अल्लामा मौसूफ़ की आवाज़ से आवाज़ मिला कर हर शख़्स पुकारेगा।

जिधर जिधर उठे नज़र हुसैन ही हुसैन है
शजर शजर समर समर हुसैन ही हुसैन है
नमाज़ को अज़ान को रसूल के बयान को
किया है जिसने मोतबर हुसैन ही हुसैन है

अल्लाह तबारक व तआला की बारगाह में दस्ते बदुआ हूं कि मुसन्निफ़ को अज्रे अज़ीम अता फरमाए और हम सबको हज़रत इमाम आली मक़ाम सैय्यदना इमाम हुसैन अली जद्देही व अलैहिस्सलाम के ज़िक्र व फ़िक्र में मशग़ूल रखे और आख़िरत में उनके गुलामों के साथ हश्र फरमाए। आमीन सुम्मा आमीन बजाहे सैय्यिदल करीम।

असीरे अह्ले बैत
मुहम्मद निज़ामुद्दीन साहब क़िबला सिद्दीक़ी नूरी
पचपेड़वा, बलरामपुर, यू.पी.
5/शव्वालुल–मुकर्रम 1431 हिज.

नक़्शे तहरीर

अमीरुल–क़लम शैखुल–फ़ुरक़ान ख़तीबे अरब व अजम हज़रत अल्लामा मक़्बूल अहमद सालिक मिस्बाही साहब
बानी व मुहतमिम जामिया ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी, नई दिल्ली।

बिस्मिल्लाहिर–रहमानिर–रहीम

नहमदुहू वनुसल्ली व सल्लिम : अम्मा बअ्द

करबला के मौज़ूअ् पर अरबाबे फ़िक्र व क़लम और अस्हाबे ज़बान व बयान पिछली चौदह सदियों से मुसलसल लिख और बोल रहे हैं उसके अस्बाब व अवामिल पर बहस व मुबाहिसा कर रहे हैं। उसके अंजाम व अवाक़िब की नई–नई ताबीरात तलाश कर रहे हैं मगर मेरा ग़ालिबे गुमान यह है कि करबला की जो तशरीह ख़ुद साहबे करबला, फ़ातेहे करबला यानी राकिबे दोशे मुस्तफ़ा, शहज़ाद–ए–गलगूं, कबा, नवास–ए–रसूल, जिगर गोश–ए–बतूल यानी ख़ूने रसूल और गुलशने फातमी के महकते फूल, सैय्यद शबाबे अह्ले जन्नह, हज़रत इमाम आली मक़ाम शहीदे आज़म, सैय्यदुश्शोहदा और हुसैन इब्ने अली रज़ि अल्लाहु अन्हु करबला की ज़मीन को देख कर की थी, इससे बेहतर तशरीह अब तक तलाश न की जा सकी। तारीख़ के सफ़्हात मे आपका वह तारीख़ी जुमला अब तक महफ़ूज़ है। लीजिए मुर्तइश निगाहों और लरज़ती पल्कों से इस अन्दोहनाक मंज़र को मुलाहिज़ा करते हुए एक बार इस जुमला को पढ़ लीजिए।

हाज़ा मौज़अल–करबु वल–बलाओ।

यह तक्लीफ़ों और आज़माइशों की जगह है।

इसमें कोई शक नहीं कि हज़रत इमाम आली मक़ामे करबला में फूलों की सेज पर सोने के लिए नहीं गये थे बल्कि करबला के कांटों

को सरफराज़ करने और बातिल के दहकते अंगारों को अपने ख़ून से हमेशा के लिए सर्द करने गये थे।

करबलाए मुअ़ल्ला में आपकी आमद किसी इत्तिफ़ाक़ी हादसे का नतीजा न थी जैसा कि यज़ीद पलीद के नुत्फ़–ए–तहक़ीक़ की कुछ लाइक़ व फ़ाइक़ औलादें साबित करने पर लगी हुई हैं। हुसैने आज़म करबला में पूरे होश व हवास के साथ गये थे और अला वज्हिल–बसीरत गये थे।

इसमें किसी तरह के शक व शुबह में मुबतला न थे, नाना जान की रूहानी विरासत आपके सीने में मोजज़न थी। आप अपनी बातिन की निगाहों से बराहे रास्त आने वाले वाक़ेआत का मुशाहिदा फरमा रहे थे और आपकी निगाहों में वह सारी अहादीसे करीमा थीं जिन में नाना जान ने आपकी शहादत की बशारत दी थी। यही वजह है कि मज़्कूरतुस्सदूर जुमले में इज़ाफ़ा फरमाते हुए इरशाद फरमाया :

"सवारियां कहां बैठेंगी? कजावे कहां रखे जाएंगे? ख़ेमे कहां नसब किए जाएंगे" और जवानाने जन्नत कहां–कहां शहीद होंगे? सब कुछ साफ़–साफ़ बता दिया फिर अपने दिल में न रखा बल्कि बरमला अस्हाब व आवान को भी बता दिया और लाजुर्म अहबाब व अक़ारिब को भी पेश आने वाली शहादत का इल्म हो गया उसके बावजूद एक भी नफ़्से करबला से जाने के लिए वापस न हुआ। मालूम हुआ कि इमामे हुसैन के साथ–साथ आपके अस्हाब व आवान की शहादत भी मज्बूरी की शहादत न थी बल्कि इख़्तियारी सरफराज़ी थी जो उन्होंने आगे बढ़ कर मौला की बारगाहे करम से मोल ले लिया था।

चुनांचे शबे शहादत बार–बार बइसरार इमाम मम्दूह ने फरमाया कि मेरी तरफ़ से तमाम अहबाब को इख़्तियार है कि जो चाहे रात की तारीकी में निकल जाए, यज़ीदियों को तुम से कुछ सरोकार नहीं, वह मुझे क़त्ल कर लेंगे तो मुत्मइन हो जाएंगे। मगर बयक ज़बान अहबाब

ने कहा कि ख़ुदा हमारी ज़िन्दगी में वह दिन न लाए जब हम ज़िन्दा हों और आप हमारे दर्मियान न हों। यहां अहबाब की ग़ैरते दीनी और ग़ैरते क़ौमी दोनों ग़ालिबन बेदार हो गई थी बाज़ अस्हाब ने कहा भी कि हम लोगों को मुंह क्या दिखाएंगे जब आपके बेग़ैर वापस जाएंगे। हालांकि अभी हमने ने न कोई तीर चलाया और न शम्शीर ज़नी की। इस तरह उन्होंने भी जामे शहादत नोश करने का अपना पुख़्ता इरादा ज़ाहिर कर दिया। जान किसे अज़ीज़ नहीं होती जान की कीमत मालूम करनी हो तो हर शख़्स अपने गरीबान में झांक कर देखे कि वह अपने मां–बाप के लिए भी अपनी गर्दन कटा सकता है।

मां के सामने बेटा, बेटे के सामने बाप ज़िबह हो जाता है और इंसान अपनी जान बख़्शी के लिए दुम दबा कर भाग जाता है।

इसलिए इन सर फ़रोशाना वाक़ेआत की क़द्र व कीमत को कम करने की कोशिश बदबख़्ती और दज्जालियत व शैतानियत व कमीनगी के सिवा कुछ नहीं। यक़ीनन बक़ौल इमाम आली मक़ाम करबला आले रसूल के लिए एक इम्तिहानगाह था और इम्तिहान बहुत सख़्त होता है। मक़ाम जितना बुलन्द होता है इम्तिहान उतना ही सख़्त होता है। इमाम सैय्यदे शबाब अह्लुल–जन्नह हैं और जन्नत का रास्ता तल्वार है। हुसैन जन्नत में जाएंगे मगर तल्वारों की धार को चूमते हुए, नेज़ों की अनियों को चखते हुए, तीरों की नोक को परखते हुए, घोड़ों की टापों को होंटों से लगाते हुए। हर अहम मक़ाम पर पहरा होता है जन्नत पर तल्वारों, तीरों, नेज़ों और तफ़ंगों का पहरा है। जो जवान शरीअ़ते मुस्तफ़वी की रौशनी में उन्हें सर करने की हिम्मत रखता है वही जन्नत में जा सकता है।

हज़रत इमाम आली मक़ाम ने इस इम्तिहान में जो सरख़ुरूई हासिल की है वह अब क़यामत तक किसी और के लिए मुम्किन नहीं कि अब कोई दूसरा सैय्यद शबाबे अह्लुल–जन्नह भी नहीं आने वाला।

फ़क़ीर राक़िमुस्सुतूर पिछले 6 सालों से मुसलसल वाक़ेआते करबला पर बोल रहा है मगर होता यह है कि हर साल नया उनवान नए रंग व आहंग के साथ बोलता है और कोशिश करता है कि यज़ीदी जरासीम को हुसैनी कीमिया से तड़पा–तड़पा कर मारे क्योंकि यह जरासीम मुस्लिम नौजवानों को नामर्द बनाने में अहम रोल अदा कर रहे हैं। शहादत के नाम से आज का मुस्लिम नौजवान थर्राने लगता है जबकि इमाम हुसैन की शहादत का मक़्सद ही उम्मते मुस्लेमा की बक़ा के लिए हर कुरबानी देकर गुज़रने का जज़्बा पैदा करना था।

कई बार इरादा हुआ कि रटे रटाए वाक़ेआत और ख़ुश्क तारीख़ी जुज़्ईयात की बजाए वाक़ेआते करबला को उसके वसीअ् पसे मंज़र में पेश करने के लिए कोई किताब लिख डालूं मगर जामिया ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी के एहतमाम की ज़िम्मेदारी बिल–यक़ीन सैफ़ व क़लम की बहुत सी ज़िम्मेदारियों से ओहदा बर आ होने की राह में हाइल है। और यह मेरी ज़िन्दगी की एक तल्ख़ हक़ीक़त बन चुकी है और यह तल्ख़ी भी अब ग़ालिबन शीरीनी में बदल चुकी है इसलिए अब इससे राहे मुफ़र नहीं। अब जो कुछ करना है इस हक़ीक़त को मद्दे नज़र रखते हुए ही करना है। 6 सालों के तजरबात के बाद अन्दाज़ा हुआ कि ग़ालिबन हम अभी तक करबला के साथ वाक़ेआती और तारीख़ी सतह पर इंसाफ़ नहीं कर सके हैं। जिस दिन हमारे अन्दर वाक़ेआते करबला का सामना करने का जज़्बा बेदार हो जाएगा हमारी तारीख़ का रुख़ बदल जाएगा। साले गुज़िश्ता मेरा इरादा हुआ कि मा बअ्दे करबला पर एक ख़ुसूसी तजरबाती मक़ाला क़लम बन्द करूं जो इस मौज़ूअ् पर जामे और माने हो। कम्प्यूटर पर उसका ख़ाका भी तैयार कर लिया, किताब का टाइटल वग़ैरह भी वजूद में आ गया, तीस चालीस सफ़्हात लिख भी डाले फिर सर्द ख़ाने में चला गया। शुदह–शुदह यह ख़बर मुहिब्बे गिरामी ख़तीबे अह्ले बैत अल्लामा शैदा कमाली भोजपूरी के कानों तक जा पहुंची। चुनांचे किसी तजरबेकार शिकारी की तरह हज़रते वाला ने साल भर तक मेरी पेश रफ़्त का इंतिज़ार

किया मगर जब मुसलसल मेरीं तरफ़ से ख़ामोशी रही तो उन्होंने फिर अपने जज़्बात का इज़्हार कर डाला और इस तरह "मा बअ्दे करबला" के नाम से एक मुफ़स्सल किताब वजूद में आ गई। अल्बत्ता उन्होंने जज़्बात और हक़ाइक़ दोनों के दर्मियान एतदाल क़ायम करने की कामयाब कोशिश की है। जगह–जगह तारीख़ी हवाले भी नज़र आते हैं। वाक़ेआत के इंतिख़ाब में इख़्तिसार के साथ–साथ एहतियात को भी मल्हूज़े ख़ातिर रखा है।

बसा औक़ात ख़ुतबा मा बअ्दे करबला के वाक़ेआत को एक ततिम्मा के तौर पर ग्यारहवीं शब में इख़्तिसार के साथ बयान करने पर इक्तिफ़ा करते हैं हालांकि मेरे ख़्याल में असल जंग का आग़ाज़ ही करबला के बाद होता है। और इसी जंग में यज़ीद की फ़तह व शिकस्त का फ़ैसला भी हो जाता है। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि पहली जंग जवानाने जन्नत के सरदार ने लड़ी थी। (1) चुनांचे उबैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद और कबरला के साथ पेश आने वाले मज़ालिम और दमिश्क़ के दरबार में यज़ीद की ज़िल्लत व रुस्वाई के जो मनाज़िर तारीख़ ने महफ़ूज़ किए हैं जिस वक़्त हुसैनी फतह का परचम कूफ़ा व दमिश्क़ में ही नहीं बल्कि आलमे इस्लाम की फ़सील से क़्यामत तक के लिए लहरा दिया था। आज यज़ीदी गुरगे ख़ूने हुसैन की क़ीमत को कम करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं ताकि आलमे इस्लाम में फिर कोई हुसैन पैदा न हो सके और शैतानी ताक़तों को इस्लामी आला क़द्रों के साथ "इबलीसी रक़्स" करने का खुला हुआ मौक़ा मिल जाए। लेकिन उनका यह मन्सूबा कभी कामयाब न हो सकेगा। शहीदाने करबला का लहू हमेशा उनका तआक़ुब करता रहेगा और उनको ज़लील व रुस्वा करता रहेगा। शहीदाने करबला का लहू इतना हल्का नहीं जिन्हें यज़ीदी ताक़तें आसानी के साथ करबला के दरो दीवार से खुरच कर मिटा दें। ख़ूने हुसैन की क़ीमत में उसी दिन से इज़ाफ़ा शुरू हो गया था जब क़ुदरत ने क़ातेलीने हुसैन से इंतिक़ाम लेने का सिलसिला शुरू किया था और यह सिलसिला ताहुनूज़ जारी है और रहेगा। और ज़ालिम अपने

कैफरे किरदार तक पहुंचते रहेंगे और गुस्ताख़ाने अह्ले बैत के लिए इबरत का सामान बनते रहेंगे। और अल्लामा शैदा कमाली जैसे मुहिब्बीने अह्ले बैत, अह्ले क़लम की इन नाबकारियों की दास्तान को क़लम की सियाही में मिला कर उनके चेहरे पर पोतते रहेंगे। और उनको उनकी शामते आमाल का आईना दिखाते रहेंगे। मैं अपना वादा कभी न कभी वफ़ा ज़रूर करूंगा और अभी इस मौज़ूअ़ पर लिखने के लिए बहुत कुछ बाक़ी है।

"मा बअ्दे करबला" के वाक़ेआत की तहक़ीक़ी पेशकश के लिए ग़ालिबन मुस्तक़िल तसानीफ़ का एहतमाम नहीं किया गया है। अल्लामा शैदा कमाली ने एक रस्ता दिखाया है। अब दूसरे आशिक़ाने अह्ले बैत भी उनकी तक़्लीद करके बारगाहे हुसैने आज़म में ख़राजे अक़ीदत पेश करने की तहरीक ज़रूर हासिल करेंगे। मैं इस वक़्त मुम्बई में मुक़ीम हूं और आज ही दिल्ली के लिए पाबा रुकाब हूं। बउज्लत शदीद यह तहरीर सुपुर्दे क़लम कर रहा हूं। और उम्मीद कर रहा हूं कि मुम्किन है मेरी इतनी सी मामूली हिमायत व ताईद भी मेरे नाम–ए–आमाल में इज़ाफ़े का बाइस हो जाए। ख़तीबे अह्ले बैत मौलाना फ़ख़्रे आलम शैदा कमाली भोजपूरी तमाम मुहिब्बीने अह्ले बैत की तरफ़ से क़ाबिले मुबारकबाद हैं।

फ़क़ीर दुआ गो है कि मौला तआला हुसैने आज़म के सदक़े में इस किताब को क़बुले आम अता फरमाए। आमीन

मक़बूल अहमद सालिक मिस्बाही
मुक़ीम हाल रज़ा मस्जिद रेलवे कॉलोनी
कुरला ईस्ट, मुम्बई
27 ज़ी क़अ्दा 1431 हिज. मुताबिक़ 2010 ई.

तक़रीज़

पीरे तरीक़त रहबरे राहे शरीअ़त हज़रत अल्लामा व मौलाना सैय्यद अली अहमद साहब क़िबला क़ादरी अशरफ़ी ख़लीफ़ा हुज़ूर अशरफुल–उलमा ख़तीब हकीम दाइम मस्जिद सुर्ती मुहल्ला व सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे क़ादरीया अशरफ़ीया फ़िर्दौसिया, बकवा दरगाह, ज़िला गोंडा, यूपी, इंडिया।

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल–करीम–अम्मा बअ्द!

ज़ेरे नज़र किताब "मा बअ्दे करबला" जिसकी तालीफ़ क़ाबिले क़द्र मौलाना शैदा कमाली साहब भोजपूरी ने बड़ी अर्क़ रेज़ी से की है। मैंने जस्ता–जस्ता कहीं–कहीं से मुताअला की है।

माशा अल्लाह क़ौम के नौ निहालों के लिए नफ़अ् बख़्श और कार आमद है। ज़रूरत है कि आज के दौर में ऐसी किताबें ख़रीद कर तालिबे इल्मों को ख़ुसूसन और आम मुसलमानों को बतौर हदिया पेश करें और इस तरह इशाअते इल्मे दीन का ज़रीआ बनें और ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक मुअल्लिफ़ का पैग़ाम पहुंचाएं ताकि कसीर तादाद में लोग इस्तिफ़ादा करें। दुआ है कि अल्लाह तआला मुअल्लिफ़ को जज़ाए ख़ैर अता फरमाए और मौसूफ़ के मक़ासिदे हसना में कामयाबी दे। नीज़ मौलाना शैदा कमाली के इल्म में, अमल मे जाइज़, मक़ासिद में कामयाबी व कामरानी अता फरमाए।

आमीन बेजाहे सैय्यिदिल–मुरसलीन अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम।

अल–अहक़र सैय्यद अली अहमद
ख़तीब हकीम दाइम मस्जिद सुर्ती मुहल्ला मुम्बई

तक़रीज़

अज़ क़लम : हज़रत अल्लामा मुफ़्ती महबूब रज़ा मिस्बाही साहब क़िबला खादिम नूरी दारुल–इफ़्ता, सुन्नी जामा मस्जिद कोटर गेट, भिवन्डी।

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल–आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलेही व आलेही व अस्हाबेहिल–करीम। अम्मा बअ्द!

बिस्मिल्लाहिर–रहमानिर–रहीम

मौलाना मोहतरम शैदा कमाली की किताब " मा बअ्दे करबला" जनाब आबिद रज़ा ने दिखाई किताब के चन्द मशमूलात का मुताला किया तबीअत खुश हो गई क्योंकि मौलाना ने इस मौज़ूअ् पर क़लम उठा कर आम मुक़र्रिरों पर एहसान किया है। मज्मूई एतबार से यह किताब बेहतर और अवाम के लिए मुफ़ीद है। किताब के शुरू में शर्फ़े इंतिसाब और दीबाचा के अलावा हज़रत शैख़ हमीदुर्रहमान शाह क़ादरी, सूफ़ी मुहम्मद निज़ामुद्दीन, मौलाना सैय्यद अली अहमद के दुआइया कलिमात भी शामिल हैं, और अल्लामा सालिक मिस्बाही की तहरीर तो इस किताब की ज़ीनत बनी हुई है।

इन क़ाबिले क़द्र शख़्सियतों के तअस्सुरात इस किताब को सनदे एतबार फराहम कर रहे हैं। बारगाहे रब्बुल–आलमीन में दुआ है कि शुहदाए करबला के सदक़े मुसन्निफ़ की इस ख़िदमत को क़बूल फरमा कर उनके इल्म और उम्र में बरकतें अता फरमाए और इस किताब के नाशिर को भी अज्रे जज़ील से नवाज़ा है। आमीन।

अहक़र : मुहम्मद महबूब रज़ा मिस्बाही
भिवन्डी
22, रबीउन्नूर 1431 हिज.

अज़्मे हुसैन (रज़ि अल्लाहु अन्हु)

हुसैन दर्द को दिल को दुआ को कहते हैं
हुसैन असल में दीने ख़ुदा को कहते हैं
हुसैन हौसला इंक़ेलाब देता है
हुसैन शमअ् नहीं आफ़ताब देता है
हुसैन लश्करे बातिल का ग़म नहीं करता
हुसैन अज़्म है माथे को ख़म नहीं करता
हुसैन हुस्ने पयम्बर की ज़ू को कहते हैं
हुसैन सीन–ए–हैदर की को लौ कहते हैं
हुसैन जज़्ब–ए–आज़ादी हर आदम है
हुसैन हुर्रियते ज़िन्दगी का परचम है
दिले हुसैन की गर्मी से दिल मचलते हैं
उस इक चिराग़ से लाखों चिराग़ जलते हैं
हुसैन सुबहे जहां ताब की अलामत है
हुसैन ही की भुला दें यह क्या क़यामत है
बरोज़े हश्र नशाते दवाम बख़्शेगा
हुसैन दर्शन तिशना को जाम बख़्शेगा

दरशाने हज़रत सैय्यदा ज़ैनब(रज़ि अल्लाहु अन्हा)

शब्बीर के मक्सद की निगहबान है ज़ैनब
हर ज़ुल्म पे इक फतह का ऐलान है ज़ैनब
अब तक जो मुसलमानों में पर्दे का चलन है
यह आपकी चादर ही का एहसान है ज़ैनब
गूंजा हुआ वह शाम के दरबार में ख़ुतबा
बातिल के लिए मौत का फरमान है ज़ैनब
औरत ने शहनशाह की ताक़त को झुकाया
तारीखे असीरी का इक उनवान है ज़ैनब
तक्रीर में तहरीर में ख़ुतबों में अमल में
जो फ़ातेहे ख़ैबर की थी वह शान है ज़ैनब
चेहरे से झलकता हुआ किरदारे पयम्बर
इस्लाम से ईमान है कुरआन है ज़ैनब
सज्जाद को जलते हुए खे़मे से निकाला
रस्सी बंधे हाथों में बड़ी जान है ज़ैनब
इस्लाम नुमा कुफ़्र की बुनियाद हिला दी
शब्बीर के सीने का इक अरमान है ज़ैनब
आंसू के सिवा हर्फ़े शिकायत नहीं लब पर
क़तरे में समेटे हुए तूफ़ान है ज़ैनब
छाया हुआ दुनिया पे है शब्बीर का पैग़ाम
यह आपकी तबलीग का फ़ैज़ान है ज़ैनब
बचपन में जवानी में ज़ईफ़ी के दिनों में
ज़हरा के तसव्वुर की निगहबान है ज़ैनब
अब साए में चादर के छुपा लीजिए शफ़क़ को
यह आपके भाई का सना ख़्वान है ज़ैनब

फज़ाइले अह्ले बैत

बिस्मिल्लाहिर–रहमानिर–रहीम

तरजमा : ऐ महबूब तुम फरमाओ मैं उस पर तुमसे कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की मुहब्बत।

तमाम तारीफ़ उस ख़ालिक़ की है कि जिसने हमें अशरफ़ बना कर हमारे सर पर अशरफ़ीयत का ताज रखा और बेशुमार दुरूद नाज़िल हो प्यारे महबूब हुज़ूर पुर नूर जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी आल पर जिनकी मुहब्बत को तमाम उम्मत पर वाजिब किया गया।

इस दर की ग़ुलामी है ऐने इबादत
जो आले मुहम्मद हैं वह तौक़ीरे बशर हैं

अल्लाह के नज़्दीक आले रसूल का मक़ाम, उनकी इंफिरादियत और फ़ज़ीलत समझे बेग़ैर ईमान की समझ पैदा हो यह मुम्किन नहीं, इसलिए चन्द आयात और अहादीसे रसूल पेशे नज़र हैं :

हज़रत इमाम राज़ी रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं कि जब यह आयते करीमा नाज़िल हुई जो ऊपर दी हुई है तो सहाब–ए–किराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके वह कौन रिश्तेदार हैं जिनकी मुहब्बत हम पर वाजिब कर दी गई। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया वह अली और फातिमा और उनके दोनों फ़रज़न्द यानी हसन व हुसैन हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं।

यानी आले रसूल की एक दिन की मुहब्बत एक साल की इबादत से बेहतर है। (अश्शरफ़ुल–मुअय्यिद, स. 87)

हज़रत सलमान फ़ार्सी रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है आप फरमाते थे कि हसन व हुसैन दोनों मेरे बेटे हैं।

जिसने उन दोनों को महबूब रखा उसने मुझको महबूब रखा और जिसने मुझ को महबूब रखा उसने अल्लाह को महबूब रखा और जिसने अल्लाह को महबूब रखा अल्लाह ने उसको जन्नत में दाख़िल किया और जिसने उन दोनों से बुग्ज़ रखा उसने मुझ से बुग्ज़ रखा और जिसने मुझ से बुग्ज़ रखा उसने अल्लाह से बुग्ज़ रखा और जिसने अल्लाह से बुग्ज़ रखा अल्लाह ने उसको दोज़ख़ में दाख़िल किया।

जो अह्ले बैत की मुहब्बत में मरा उसने शहादत की मौत पाई।

आगाह हो जाओ जो आले मुहम्मद की मुहब्बत में मरा उसके गुनाह बख़्श दिए गये।

ख़बरदार हो जाओ जो अह्ले बैत की मुहब्बत में मरा वह मुकम्मल ईमान के साथ इंतिक़ाल किया।

आगाह हो जाओ जो अह्ले बैत की मुहब्बत में मरा उसको ऐसी इज़्ज़त के साथ जन्नत में ले जाया जाएगा जैसे दुल्हन को उसके घर से ले जाया जाता है।

ख़बरदार हो जाओ जो अह्ले बैत की बुग्ज़ में मरा वह काफिर हो कर मरा। (तफ़्सीरे कबीर, स. 166)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने मेरे अह्ले बैत के किसी आदमी से बुग्ज़ रखा वह मेरी शफ़ाअत से महरूम रहेगा।

(सवाइक़े मुहरिक़ा, स. 794)

हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने उसके लिए जन्नत हराम कर दी है जो मेरे अह्ले बैत पर ज़ुल्म करे या उन से लड़े या उनको लूटे या उनको बुरा कहे। (मुसनद इमाम रज़ा)

तबरी ने एक रिवायत नक़्ल फरमाई है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि अल्लाह तआला ने तुम पर जो मेरा अज्र मुक़र्रर किया है वह मेरे अह्ले बैत से मुहब्बत करता है। और कल मैं तुमसे उसके बारे में दरयाफ़्त करूंगा मैदाने महशर में।

(सवाइक़े मुहरिक़ा, स. 53)

हज़रत सैय्यदना उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस शख़्स ने दुनिया में औलादे अब्दुल–मुत्तलिब या औलादे बनी हाशिम यानी अह्ले बैत से कुछ नेकी या अच्छा सुलूक या एहसान किया फिर वह अह्ले बैत उसका बदला न दे सके तो क़्यामत के दिन उस सैय्यद की तरफ़ से मैं पूरा–पूरा बदला अदा करूंगा।

(सवाइक़े मुहरिक़ा, स. 792)

हज़रत मौला अली रज़ि अल्लाहु अन्हु इरशाद फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हसनैन करीमैन के हाथ को अपने दस्ते अक़्दस में लेकर फरमाया जो मेरे दोनों फ़रज़न्दों और उनके वालिदैन से मुहब्बत करेगा वह क़्यामत के दिन मेरे साथ होगा। और जन्नत में उस दरजा में रखा जाएगा जहां मैं रहूंगा।

(शिफ़ा शरीफ़, जिल्द दोम, स. 59)

हज़रत अल्लामा निबहानी रहमतुल्लाह अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत मुहब्बत करने के सबब इस हाल में बग़दाद से ले जाए गये कि उनके पैरों में बेड़ियां पड़ी थीं।

बल्कि अह्ले बैत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनकी मुहब्बत यहां तक पहुंची कि कुछ लोगों ने उन्हें राफ़ज़ी कह दिया तो आपने उनको जवाब देते हुए फरमाया।

यानी अगर आले रसूल ही की मुहब्बत का नाम राफ़ज़ी होना है तो तमाम जिन्न व इन्स गवाह हो जाएं कि मैं राफ़ज़ी हूं।

क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़–ए–क़ुदरत में मेरी जान है जिस किसी ने भी हमारे अह्ले बैत से बुग्ज़ रखा अल्लाह ने उसको जहन्नम में दाख़िल किया।

अली इब्ने अबी तालिब की मुहब्बत गुनाहों को इस तरह ख़त्म कर देती है जिस तरह आग लकड़ी को।

मेरे अह्ले बैत की मिसाल कश्ती–ए–नूह की तरह है जो उसमें सवार हो उसने नजात पाई और जो बाहर हुआ ग़र्क़ हुआ।

और मुझे महबूब रखो अल्लाह की मुहब्बत की वजह से और मेरे अह्ले बैत को महबूब रखो मेरी मुहब्बत की वजह से।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली हज़रत फातिमा हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम की तरफ़ देखा और फरमाया जो तुमसे लड़ेगा मैं उससे लड़ूंगा और जो तुम से सुलह करेगा मैं उस से सुलह करूंगा तो जो तुम्हारा दुश्मन है वह मेरा दुश्मन है। जो तुम्हारा दोस्त है वह मेरा दोस्त है।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं दरख़्त हूं फातिमा उसकी टहनी है अली उसका शगूफ़ा और हसन व हुसैन उसका फल हैं। और अह्ले बैत से मुहब्बत करने वाले उसके पत्ते हैं। यह सब जन्नत में होंगे, यह हक़ है यह हक़ है।

हज़रत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक दफ़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम से मुख़ातब हुए पस मैंने आपको फरमाते हुए सुना ऐ लोगो! जो हमारे अह्ले बैत से बुग्ज़ रखता है अल्लाह तआला उसे रोज़े क़्यामत यहूदियों के साथ जमा करेगा। तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगरचे वह नमाज़ रोज़ा का पाबन्द ही क्यों न हो और अपने आपको मुसलमान गुमान ही क्यों न करता हो तो आपने फरमाया हां अगरचे वह रोज़ा और नमाज़ का पाबन्द ही क्यों न हो। और ख़ुद को मुसलमान तसव्वुर करता हो। ऐ लोगो! यह लबादा ओढ़ कर उसने अपने ख़ून को मुबाह होने से बचाया और यह कि वह अपने हाथ से जिज़या दें दर आंहालेकि वह घटिया और कमीने हों। पस मेरी उम्मत मुझे मेरी मां के पेट में दिखाई गई पस मेरे पास से झुण्डों वाले गुज़रे तो मैंने हज़रत अली और शीआ़ने अली के लिए मग़्फ़िरत तलब की। इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है। (तबरानी स. 212)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तीन चीज़ें ऐसी हैं वह जिस

में पाई जाएंगी न वह मुझ से है और न मैं उस से हूं वह यह हैं अली से बुग्ज़ रखना मेरे अह्ले बैत से दुश्मनी रखना और यह कहना कि ईमान फ़क़त कलाम का नाम है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम में बेहतरीन वह है जो मेरे बाद मेरी अह्ल के लिए बेहतरीन है इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम अबू यअ्ला ने बयान किया।

तरजमा : हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया बेशक फातिमा ने अपनी इस्मत की हिफ़ाज़त की तो अल्लाह तआला ने उसकी औलाद को आग पर हराम कर दिया। इस हदीस को इमाम हाकिम ने रिवायत किया और कहा कि यह हदीस सहीहुल–अस्नाद है।

तरजमा : हज़रत अब्दुर्रहमान इब्ने अबी लैला रज़ि अल्लाहु अन्हु अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कोई बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके नज़्दीक उसकी जान से महबूब तर न हो जाऊं और मेरे अह्ले बैत उसे उसके अह्ले ख़ाना से महबूब तर न हो जाएं और मेरी औलाद उसे अपनी औलाद से बढ़ कर महबूब न हो जाए और मेरी ज़ात उसे अपनी ज़ात से महबूब तर न हो जाए। उसे इमाम तबरानी और इमाम बैहक़ी ने रिवायत किया।

तरजमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आपने फरमाया अह्ले बैते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक दिन की मुहब्बत पूरे साल की इबादत से बेहतर है और जो उसी पर फौत हुआ तो वह जन्नत में दाख़िल हो गया। उसको इमाम दैलमी ने रिवायत किया।

तरजमा : हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हा मरफूअन रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं दरख़्त हूं और फातिमा उसके फल की इब्तिदाई

हालत है और अली उसके फूल को मुन्तक़िल करने वाला है और हसन व हुसैन इस दरख़्त का फल हैं और अह्ले बैत से मुहब्बत करने वाले उस दरख़्त के औराक़ हैं वह यक़ीनन यक़ीनन जन्नत में दाख़िल होने वाले हैं इस हदीस को इमाम दैलमी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अबू मस्ऊद अन्सारी रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने नमाज़ पढ़ी और मुझ पर और मेरे अह्ले बैत पर दुरूद न पढ़ा उसकी नमाज़ क़बूल न होगी। हज़रत अबू मस्ऊद अन्सारी रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं अगर मैं नमाज़ पढ़ूं और उसमें हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद पाक न पढ़ूं तो मैं नहीं समझता कि मेरी नमाज कामिल होगी। उसे इमाम दारे क़ुतनी और बैहक़ी ने रिवायत की।

तरजमा : हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सितारे अह्ले आसमान के लिए अमान हैं पस जब सितारे चले गये तो अह्ले आसमान भी चले गये और मेरे अह्ले बैत ज़मीन वालों के लिए अमान हैं। पस जब मेरे अह्ले बैत चले गये तो अह्ले ज़मीन भी चले गये। इस हदीस को इमाम दैलमी ने रिवायत किया है।

(8) तरजमा : हज़रत सअ्द बिन अबी वक़ास रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जब आयते मुबाहिला नाज़िल हुई : "आप फरमा दें आओ हम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे" तो हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली, हज़रत फातिमा, हज़रत हसन और हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम को बुलाया, फिर फरमाया : या अल्लाह! यह मेरे अह्ले (बैत) हैं।" इसे इमाम मुस्लिम और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और इमाम तिर्मिज़ी ने फरमाया कि यह हदीस हसन सही है।

(9) तरजमा : हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली, हज़रत फातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम से

फरमाया : तुम जिस से लड़ोगे मैं उसके साथ हालते जंग में हूं और जिससे तुम सुलह करने वाले हो मैं भी उस से सुलह करने वाला हूं। इसे इमाम तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

(10) तरजमा : हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : मैं तुम में ऐसी दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूं कि अगर मेरे बाद तुम ने उन्हें मज़्बूती से थामे रखा तो हरगिज़ गुमराह न होगे। उनमें से एक दूसरी से बड़ी है। अल्लाह तआला की किताब आसमान से ज़मीन तक लटकी हुई रस्सी है और इतरत यानी अह्ले बैत और यह दोनों हरगिज़ जुदा न होंगे यहां तक कि दोनों मेरे पास हौज़े कौसर पर आएंगे पस देखो कि तुम मेरे बाद उन से क्या सुलूक करते हो? इसे इमाम तिर्मिज़ी, निसई और अहमद ने रिवायत किया और इमाम तिर्मिज़ी ने उसे हसन क़रार दिया है।

(11) तरजमा : हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परवरदह हज़रत उमर बिन अबी सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि जब उम्मुल–मुमिनीन उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा के घर हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आयत "ऐ अह्ले बैत! अल्लाह तो यही चाहता है कि तुम से (हर तरह) की आलूदगी दूर कर दे और तुम्हें ख़ूब पाक व साफ़ कर दे" नाज़िल हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सैय्यदा फ़ातिमा और हसनैन करीमैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम और मौला अली को बुलाया और उन्हें अपनी कमली में ढांप लिया, फिर फरमायाः ऐ अल्लाह! यह मेरे अह्ले बैत हैं, पस इनसे हर क़िस्म की आलूदगी दूर फरमा और इन्हें ख़ूब पाक व साफ़ कर दे। सैय्यदा उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ की : ऐ अल्लाह के नबी! मैं (भी) उनके साथ हूं, फरमाया : तुम अपनी जगह रहो और तुम तो बेहतर मुक़ाम पर फाइज़ हो। इसे इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और फरमाया कि यह हदीस हसन सही है।

हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अह्ले बैत और क़राबतदारों के जामे मनाक़िब का बयान

तरजमा : हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह के वक़्त एक अदना मुनक़्क़श चादर ओढ़े हुए बाहर तशरीफ़ लाए तो आपके पास हज़रत हसन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा आए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें उस चादर में दाख़िल कर लिया, फिर हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु आए और वह भी उनके हम्राह चादर में दाख़िल हो गये, फिर सैय्यदा फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा आईं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें भी उस चादर में दाख़िल कर लिया, फिर हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू आए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें भी चादर में ले लिया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयते मुबारका पढ़ीः "ऐ अह्ले बैत! अल्लाह तआला तो यही चाहता है कि तुम से (हर तरह की) आलूदगी दूर कर दे और तुम को (गुनाहों से) ख़ूब पाक व साफ़ कर दे। इसे इमाम मुस्लिम और हाकिम ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जो शख़्स मेरे अह्ले बैत और अन्सार और अरब का हक़ नहीं पहचानता तो उसमें तीन चीज़ों में से एक पाई जाती है। या तो वह मुनाफ़िक़ है या वह हरामी है या वह ऐसा आदमी है जिसकी मां बेग़ैर तुहुर के उस से हामिला हुई। इस हदीस को इमाम दैलमी ने अपनी मुसनद में रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ऐ अल्लाह जो मुझ से और मेरे अह्ले बैत से बुग्ज़ रखता है

उसे कसरते माल और कसरते औलाद से नवाज़। यह उनकी गुमराही के लिए काफी है कि उनका माल कसीर हो जाए पस (इस कसरते माल की वजह से) उनका हिसाब तवील हो जाए और यह कि उनकी वज्दानियात (जज़्बाती चीजें) कसीर हो जाएं ताकि उनके शयातीन कसरत से हो जाएं। इसको इमाम दैलमी ने रिवायत किया है।

"हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ऐ बनू अब्दुल–मुत्तलिब बेशक मैंने तुम्हारे लिए अल्लाह तआला से दस चीजें मांगी हैं पहली यह कि वह तुम्हारे क़्याम करने वाले को साबित क़दम रखे और दूसरी यह कि वह तुम्हारे गुमराह को हिदायत दे और तीसरी यह कि वह तुम्हारे जाहिल को इल्म अता करे और मैंने तुम्हारे लिए अल्लाह तआला से यह भी मांगा है कि वह तुम्हें सख़ावत करने वाला और दूसरों की मदद करने वाला और दूसरों पर रहम करने वाला बनाए पस अगर कोई रुक्न और मक़ाम के दर्मियान दोनों पांव क़तार में रख कर खड़ा हो जाए और नमाज़ पढ़े और रोज़ा रखे और फिर (विसाल की शक्ल में) अल्लाह से मिले यहां तक कि वह अह्ले बैत से बुग्ज़ रखने वाला हो तो वह दोज़ख़ में दाख़िल होगा।" इस हदीस को इमाम हाकिम और तबरानी ने रिवायत किया है नीज़ इमाम हाकिम ने फरमाया कि यह हदीस हसन सही है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : बनू हाशिम और अंसार से बुग्ज़ रखना कुफ़्र है और अह्ले अरब से बुग्ज़ रखना मुनाफ़िक़त है।" इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अबू सईद ख़ुद्री रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : बेशक

अल्लाह तआला की तीन हुरमात हैं जो उनकी हिफ़ाज़त करता है अल्लाह तआला उसके लिए उसके दीन व दुनिया के मुआमलात की हिफ़ाज़त फरमाता है और जो इन तीन को ज़ाए कर देता है। अल्लाह तआला उसकी किसी चीज़ की हिफ़ाज़त नहीं फरमाता। सो अर्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह! वह कौन सी तीन हुरमात हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : इस्लाम की हुरमत, मेरी हुरमत और मेरे नसब की हुरमत। इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : सितारे अह्ले ज़मीन को ग़र्क़ होने से बचाने वाले हैं और मेरे अह्ले बैत मेरी उम्मत को इख़्तिलाफ़ से बचाने वाले हैं और जब कोई क़बीला उनकी मुख़ालिफ़त करता है तो उसमें इख़्तिलाफ़ पड़ जाता है यहां तक कि वह शैतान की जमाअत में से हो जाता है। रिवायत किया इसको हाकिम ने इस हदीस की सनद सही है।

तरजमा : हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : मेरे रब ने मुझ से मेरे अह्ले बैत के बारे में वादा किया है कि उनमें से जो भी मेरी तौहीद का इक़रार करेगा उसे यह बात पहुंचा दी जाए कि अल्लाह तआला उसे अज़ाब नहीं देगा। इस हदीस को इमाम हाकिम ने रिवायत किया और कहा कि इस हदीस की सनद सही है।

हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपने अह्ले बैत को जन्नत की बशारत देने और उन से नेकी करने वालों को जज़ा देने का बयान

तरजमा : हज़रत अबू राफ़े बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली से फरमाया : बेशक पहले चार अश्ख़ास जो जन्नत में दाखि़ल होंगे वह मैं, तुम, हसन और हुसैन होंगे और हमारी औलाद हमारे पीछे होगी (यानी हमारे बाद वह दाखि़ल होगी) और हमारी बीवियां हमारी औलाद के पीछे होंगी (यानी उनके बाद जन्नत में दाखि़ल होंगी) और हमारे चाहने वाले (हमारे मददगार) हमारी दाएं जानिब और बाएं जानिब होंगे। इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अबान बिन उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि अल्लाहु अन्हु को फरमाते हुए सुना कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जिस शख़्स ने औलादे अब्दुल–मुत्तलिब में से किसी के साथ कोई भलाई की और वह उसका बदला इस दुनिया में न चुका सका तो उसका बदला चुकाना कल (क़्यामत के रोज़) मेरे ज़िम्मे है जब वह मुझ से मुलाक़ात करेगा। इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया।

तरजमा : हज़रत अली बिन हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ऐ अली! बेशक अल्लाह तआला ने तुझे और तेरी औलाद को और तेरे घर वालों को और तेरे मददगारों को और तेरे मददगारों के चाहने वाले को बख़्श दिया है पस तुझे यह खुशख़बरी मुबारक हो। इस हदीस को इमाम दैलमी ने रिवायत किया है।

हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इत्तिबा में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अह्ले बैत पर दुरूद भेजने का बयान

तरजमा : हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जिसे यह ख़ुशी हासिल करना हो कि उसके नाम–ए–आमाल का पूरा–पूरा बदला दिया जाए जब वह हम अह्ले बैत पर दुरूद भेजे तो उसे चाहिए कि यूं कहे : ऐ अल्लाह! तू दुरूद भेज हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़्वाजे मुतह्हरात उम्महातुल–मुमिनीन पर और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुर्रियत और अह्ले बैत पर जैसा कि तूने दुरूद भेजा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर बेशक तू बहुत ज़्यादा तारीफ़ किया हुआ और बुज़ुर्गी वाला रब है। इस हदीस को इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अब्दुर्रहमान अबी लैला रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि कअ्ब बिन अजरा रज़ि अल्लाहु अन्हु मुझे मिले और कहा क्या मैं तुम्हें वह (हदीस) हदिया न करूं जो मैंने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी है? मैंने कहा क्यों नहीं। रावी बयान करते हैं मैंने कहा कि वह मुझे हदिया करो तो उन्होंने कहा : हमने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया। सो हमने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आपके अह्ले बैत पर दुरूद कैसे भेजें? तो हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : (यूं) कहो : ऐ अल्लाह तू (बसूरते रहमत) दुरूद भेज। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आल पर जैसा कि तूने दुरूद भेजा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और

आप अलैहिस्सलाम की आल पर बेशक तू हमीद मजीद है और ऐ अल्लाह तू बरकत अता कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आंल को जैसा कि तूने बरकत अता की इब्राहीम अलैहिस्सलाम और आप अलैहिस्सलाम की आल को बेशक तू हमीद मजीद है। इस हदीस को इमाम हाकिम और तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत वासेला अस्क़अ् रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु की तलाश में बाहर निकला तो मुझे किसी ने कहा कि वह हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हैं पस. मैंने (वहा) उन (के पास जाने) का इरादा किया (और जब मैं वहां पहुंचा) तो मैंने उन्हें हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चादर के अन्दर पाया और हज़रत अली, हज़रत फातिमा और हसन और हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम उन सबको हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक कपड़े के नीचे जमा कर रखा था पस आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ऐ अल्लाह! बेशक तूने अपने दुरूद और अपनी रिज़्वान को मुझ पर और उन पर ख़ास कर दिया है। इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत हुसैन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : हम अह्ले बैत की मुहब्बत को लाज़िम पकड़ो पस वह शख़्स जो इस हाल में अल्लाह से (विसाल के बाद) मिला कि वह हम से मुहब्बत करता हो तो वह हमारी शफ़ाअत के वसीले से जन्नत में दाख़िल होगा और उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़–ए–क़ुदरत में मुझ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जान है किसी भी शख़्स को उसका अमल हमारे हक़ की मारफ़ित हासिल किए बेग़ैर फाइदा नहीं देगा। इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अबू राफ़े रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु से फरमाया : ऐ अली! तू और तेरे (चाहने वाले) मददगार (क़्यामत के रोज़) मेरे पास हौज़े कौसर पर चेहरे की शादाबी और सैराब हो कर आएंगे और उनके चेहरे (नूर की वजह से) सफ़ेद होंगे और बेशक तेरे दुश्मन (क़्यामत के रोज़) मेरे पास हौज़े कौसर पर बदनुमा चेहरों के साथ और सख़्त प्यास की हालत में आएंगे। इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि अल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : बेशक मैंने अपनी बेटी का नाम फातिमा रखा है क्योंकि अल्लाह तआला ने उसे और उसके चाहने वालों को आग से छुड़ा (और बचा) लिया है। इस हदीस को इमाम दैलमी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : अह्ले बैते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक दिन की मुहब्बत पूरे साल की इबादत से बेहतर है और जो इसी मुहब्बत पर फौत हुआ तो वह जन्नत में दाख़िल होगा। इस हदीस को इमाम दैलमी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत ज़ैद बिन अरक़म से मरफूअन रिवायत है कि पांच चीज़ें ऐसी हैं कि अगर किसी को नसीब हो जाएं तो वह आख़िरत के अमल का तारिक नहीं हो सकता (और वह पांच चीज़ें यह हैं) : नेक बीवी, नेक औलाद, लोगों के साथ हुस्ने मुआशरत और अपने मुल्क में रोज़गार और आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत। इस हदीस को इमाम दैलमी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अन्हु मरफ़ूअन रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : चार शख़्स ऐसे हैं क़यामत के रोज़ जिनके लिए मैं शफ़ाअत करने वाला हूंगा (और वह यह हैं :) मेरी औलाद की इज़्ज़त व तक्रीम करने वाला, और उनकी हाजात को पूरा करने वाला, और उनके मुआमलात के लिए तग व दौ करने वाला जब वह मजबूर हो कर उसके पास आएं तो दिलो जान से उनकी मुहब्बत करने वाला। इस हदीस को इमाम मुतक़ी हिन्दी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि आले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक ख़ादिमा थी जो उनकी ख़िदमत में बजा लाती उसे 'बरीरह' कहा जाता था पस उसे एक आदमी मिला और कहा : ऐ बरीरह अपनी चोटी को ढांप कर रखा करो बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से कुछ फाइदा नहीं पहुंचा सकते। रावी बयान करते हैं पस उसने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस वाक़या की ख़बर दी पस आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी चादर को घसीटते हुए बाहर तशरीफ़ लाए दरआं हालेकि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोनों रुख़्सारे मुबारक सुर्ख़ थे और हम (अन्सार का गरोह) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुस्से को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चादर के घसीटते और रुख़्सारों के सुर्ख़ होने से पहचान लेते थे पस हमने अस्लहा उठाया और हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आ गये और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप जो चाहते हैं हमें हुक्म दें पस उस ज़ात की क़सम जिसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हक़ के साथ मबऊस फरमाया है अगर आप हमें हमारी माओं, आबा और औलाद के बारे में भी कोई हुक्म फरमाएंगे तो हम उनमें भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ौल को नाफ़िज़ कर देंगे पस आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और अल्लाह तआला की हम्दो सना बयान की और फ़रमाया : मैं कौन हूं? हमने अर्ज़ किया : आप मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल-मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मनाफ़ हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मैं हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद का सरदार हूं लेकिन कोई फ़ख़्र नहीं, मैं वह पहला शख़्स हूं जिससे क़ब्र फटेगी लेकिन कोई फ़ख़्र नहीं और मैं वह पहला शख़्स हूं जिसके सर से मिट्टी झाड़ी जाएगी लेकिन कोई फ़ख़्र नहीं और मैं सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होने वाला हूं लेकिन कोई फ़ख़्र नहीं। उन लोगों को क्या हो गया है जो यह गुमान करते हैं कि मेरा रहम (नसब व तअल्लुक़) फ़ाइदा नहीं देगा ऐसा नहीं है जैसा वह गुमान करते हैं। बेशक मैं शफ़ाअत करूंगा और मेरी शफ़ाअत क़बूल भी होगी यहां तक कि जिसकी मैं शफ़ाअत करूंगा वह यक़ीनन दूसरों की शफ़ाअत करेगा और उसकी भी शफ़ाअत क़बूल होगी यहां तक कि इब्लीस भी अपनी गर्दन को बुलन्द करेगा शफ़ाअत में तमअ् की ख़ातिर (या किसी तौर उसकी शफ़ाअत भी कोई कर दे)। इस हदीस को इमाम तबरानी ने बयान किया है।

हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लोगों को अह्ले बैत की मुहब्बत पर उभारने का बयान

तरजमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : अल्लाह तआला से मुहब्बत करो उन नेमतों की वजह से जो उसने तुम्हें अता फरमाईं और मुझ से मुहब्बत करो अल्लाह की मुहब्बत के सबब और मेरे अह्ले बैत से मेरी मुहब्बत की ख़ातिर मुहब्बत करो। इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी और हाकिम ने रिवायत किया नीज़ इमाम तिर्मिज़ी ने फरमाया कि यह हदीस हसन है।

तरजमा : हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान फरमाते हैं कि हम जब क़ुरैश की जमाअत से मिलते और वह बाहम गुफ़्तगू कर रहे होते तो गुफ़्तगू रोक देते हमने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में इस अम्र की शिकायत की तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : लोगों को क्या हो गया है जब मेरे अह्ले बैत से किसी को देखते हैं तो गुफ़्तगू रोक देते हैं? अल्लाह रब्बुल–इज़्ज़त की क़सम! किसी शख़्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल नहीं होगा जब तक उन से अल्लाह तआला के लिए और मेरे क़राबत की वजह से मुहब्बत न करे। उसे इमाम इब्ने माजा और हाकिम ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अब्बास बिन अब्दुल–मुत्तलिब रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि मैंने बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क़ुरैश जब आपस में मिलते हैं तो हसीन मुस्कुराते चेहरों से मिलते हैं और जब हम से मिलते हैं तो ऐसे चेहरों से मिलते हैं जिन्हें हम नहीं जानते (यानी जज़्बात से आरी चेहरों के साथ) हज़रत अब्बास फरमाते हैं : हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम यह सुन कर शदीद जलाल में आ गये और फरमाया : उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़–ए–क़ुदरत में मेरी जान है किसी भी शख़्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल नहीं हो सकता जब तक अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मेरी क़राबत की ख़ातिर तुम से मुहब्बत न करे। इसे इमाम अहमद, निसई, हाकिम और बज़्ज़ार ने रिवायत किया है।

एक रिवायत में है कि फरमाया : ख़ुदा की क़सम किसी शख़्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल न होगा जब तक कि वह अल्लाह तआला और मेरी क़राबत की वजह से तुम से मुहब्बत न करे।

तरजमा : हज़रत अबू सईद ख़ुद्री रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिंबर पर फरमाते हुए सुना उन लोगों का क्या होगा जो यह कहते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नसबी तअल्लुक़ क़यामत के रोज़ उनकी क़ौम को कोई फाइदा नहीं देगा। क्यों नहीं! अल्लाह की क़सम बेशक मेरा नसबी तअल्लुक़ दुनिंया व आख़िरत में आपस में बाहम मिला हुआ है और ऐ लोगो! बेशक (क़यामत के रोज़) मैं तुम से पहले हौज़ पर मौजूद हूंगा पस जब तुम आ गये तो एक आदमी कहेगा या रसूलुल्लाह! मैं फुलां बिन फुलां हूं पस हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : उसका फुलां बिन फुलां कहना पाय–ए–सुबूत को पहुंचेगा और रहा सब तो तहक़ीक़ उसकी पहचान मैंने तुम्हें करा दी है लेकिन मेरे बाद तुम अहदास करोगे और उलटे पांव फिर जाओगे। इस हदीस को इमाम अहमद बिन हंबल और इमाम हाकिम ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : तुम में से

बेहतरीन वह है जो मेरे बाद मेरी अह्ल के लिए बेहतरीन है। इस हदीस को इमाम हाकिम और इमाम अबू यअ्ला ने बयान किया है।

तरजमा : हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का फतह किया फिर तायफ़ का रुख़ किया और उसका आठ या सात दिन मुहासरा किए रखा फिर सुबह व शाम के वक़्त उसमें दाख़िल हो गये फिर पड़ाव किया फिर हिजरत फरमाई : ऐ लोगो! बेशक मैं तुम्हारे लिए तुम से पहले हौज़ पर मौजूद हूंगा और बेशक मैं तुम्हें अपनी इतरत के साथ नेकी की वसीयत करता हूं और बेशक तुम्हारा ठिकाना हौज़ होगा। सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। इस हदीस को इमाम हाकिम ने रिवायत किया है और फरमाया कि यह हदीस सही है।

तरजमा : हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ऐ लोगो! मैं तुम में दो चीज़ें छोड़ कर जाने वाला हूं और अगर तुम उनकी इत्तिबा करोगे तो कभी गुमराह नहीं होगे और वह दो चीज़ें किताबुल्लाह और मेरे अह्ले बैत हैं। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : क्या तुम जानते हो मैं मुमिनीन की जानों से बढ़ कर उनको अज़ीज़ हूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा तीन मरतबा फरमाया। सहाब–ए–किराम ने अर्ज़ किया : हां या रसूलुल्लाह! तो हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जिसका मैं मौला हूं अली भी उसका मौला है। इस हदीस को इमाम हाकिम ने रिवायत किया है और कहा कि यह हदीस सही है।

तरजमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि जब यह आयत कु़ल ला अस्अलुकुम अलैहि अजरन इल्लल–मवद्दतु फ़िल–कुरबा। नाज़िल हुई तो सहाबा किराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आपकी क़राबत कौन हैं जिनकी मुहब्बत हम पर

वाजिब है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : अली, फ़ातिमा और उनके दो बेटे (हसन व हुसैन)। इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि अल्लाहु अन्हु एक तवील रिवायत में बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : पस यह देखो कि तुम दो भारी चीज़ों में मुझे कैसे बाक़ी रखते हो। पस एक निदा देने वाले ने निदा दी या रसूलुल्लाह! वह दो भारी चीज़ें क्या हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : अल्लाह तआला की किताब जिसका एक किनारा अल्लाह के हाथ में और दूसरा किनारा तुम्हारे हाथों में है पस अगर तुम उसे मज़्बूती से थामे रहो तो कभी भी गुमराह नहीं होगे और दूसरी चीज़ मेरी इतरत है और बेशक इस लतीफ़े ख़बीर रब ने मुझे ख़बर दी है कि यह दोनों चीज़ें कभी भी जुदा नहीं होंगी यहां तक कि यह मेरे पास हौज़ पर हाज़िर होंगी और ऐसा उनके लिए मैंने अपने रब से मांगा है। पस लोगो तुम उन पर पेश क़दमी न करो कि हलाक हो जाओ और न ही उन से पीछे रहो कि हलाक हो जाओ और न उनको सिखाओ क्योंकि यह तुम से ज़्यादा जानते हैं फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ लिया और फरमाया : पस मैं जिसकी जान से बढ़ कर उसे अज़ीज़ हूं तो यह अली उसका मौला है ऐ अल्लाह! जो अली को अपना दोस्त रखता है तू उसे अपना दोस्त रख और अली से अदावत रखता है तू उस से अदावत रख। इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपने अह्ले बैत के बारे में वसीयत का बयान

तरजमा : हज़रत अबू सईद खुद्री रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : आगाह हो जाओ! मेरा जामा दान जिससे मैं आराम पाता हूं मेरे अह्ले बैत हैं और मेरी जमाअत अन्सार हैं। उनके बुरों को मुआफ़ कर दो और उनके नेकोकारों से (अच्छाई को) क़बूल करो। इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी और इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया है नीज़ तिर्मिज़ी ने फरमाया कि यह हदीस हसन है।

हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हसनैन करीमैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा का नाम रखने, उनके कानों में अज़ान देने और उनकी तरफ़ से अक़ीक़ा करने का बयान

तरजमा : हज़रत अबू राफ़े रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सैय्यदा फ़ातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा के हां हसन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा की विलादत होने पर उनके कानों में नमाज़ वाली अज़ान दी। इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी, अबू दाऊद और अहमद बिन हंबल ने रिवायत किया है और इमाम तिर्मिज़ी ने फरमाया कि यह हदीस हसन सही है।

तरजमा : हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : हज़रत अली का ज़िक्र भी इबादत है। इस हदीस को इमाम दैलमी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि मैंने अपने वालिद हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु को देखा कि वह कसरत से हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु के चेहरे को देखा करते। पस मैंने आपसे से पूछाः ऐ अब्बा जान! क्या वजह है कि आप कसरत से हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु के चेहरे की तरफ़ तकते रहते हैं? हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया : ऐ मेरी बेटी! मैंने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना है कि अली के चेहरे को तकना भी इबादत है। इस हदीस को इमाम इब्ने असाकिर ने बयान किया है।

तरजमा : हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ फरमा थे कि हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु से फरमाया : यह जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलाम हैं जो मुझे ख़बर दे रहे हैं कि अल्लाह तआला ने फातिमा से तुम्हारी शादी कर दी है। और तुम्हारे निकाह पर (मलए आला में) चालीस हज़ार फ़रिश्तों को गवाह के तौर पर मज्लिसे निकाह में शरीक किया, और शजरहाए तूबा से फरमाया : उन पर मोती और याक़ूत निछावर करो, फिर दिलकश आंखों वाली हूरें उन मोतियों और याक़ूतों से थाल भरने लगीं। जिन्हें (तक़रीबे निकाह में शिर्कत करने वाले) फ़रिश्ते क़्यामत तक एक दूसरे को बतौर तहाइफ़ देते रहेंगे। इसको मुहिब्बुत्तबरी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हसनैन

करीमैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा की तरफ़ अक़ीक़े में दो–दो दुंबे ज़बह किए। इस हदीस को इमाम निसई ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत इकरमा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब सैय्यदा फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा के हां हसन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हु की विलादत हुई तो वह उन्हें हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लायीं, लिहाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका नाम हसन रखा और जब हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की विलादत हुई तो उन्हें हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में ला कर अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह यह (हुसैन) इस (हसन) से ज़्यादा ख़ूबसूरत है लिहाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके नाम से अख़ज़ करके उसका नाम हुसैन रखा। इस हदीस को इमाम अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने रिवायत किया है।

हसनैन करीमैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा का अह्ले बैत में से होने और नसब के एतेबार से तमाम लोगों से बेहतर होने का बयान

तरजमा : हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी नेअ़म रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक इराक़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से पूछा कि कपड़े पर मच्छर का ख़ून लग जाए तो क्या हुक्म है? हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने फरमाया : उसकी तरफ़ देखो, मच्छर के ख़ून का मस्अला पूछता है हालांकि उन्होंने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेटे (हुसैन) को शहीद किया है और मैंने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

को फरमाते हुए सुना : हसन और हुसैन ही तो मेरे गुलशने दुनिया के दो फूल हैं। इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी, निसई और अहमद ने रिवायत किया है और इमाम तिर्मिज़ी ने फरमाया कि यह हदीस सही है।

तरजमा : हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जब आयते मुबाहिला : आप फरमा दें आओ हम अपने बेटों को बुलाते हैं और तुम अपने बेटों को बुलाओ, नाज़िल हुई तो हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम को बुलाया, फिर फरमाया : या अल्लाह! यह मेरे अह्ल (बैत) हैं। इस हदीस को इमाम मुस्लिम और इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और इमाम तिर्मिज़ी फरमाते हैं कि यह हदीस हसन सही है।

तरजमा : हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परवरदा हज़रत उमर बिन अबी सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि जब हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा के घर हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आयत, ऐ अह्ले बैत! अल्लह तो यही चाहता है कि तुमसे (हर तरह) की आलूदगी दूर कर दे और तुम को ख़ूब पाक व साफ़ कर दे, नाज़िल हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सैय्यदा फातिमा और हसनैन करीमैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा को बुलाया और उन्हें एक कमली में ढांप लिया, फिर फरमाया : ऐ अल्लाह! यह मेरे अह्ले बैत हैं, पस उन से हर क़िस्म की आलूदगी दूर फ़रमा और इन्हें ख़ूब पाक व साफ़ कर दे। इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और फ़रमाया कि यह हदीस हसन है।

तरजमा : हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना : हर औरत के बेटों की निस्बत उनके बाप की तरफ़

होती है मासिवाए फातिमा की औलाद के, कि मैं ही उनका नसब हूं और मैं ही उनका बाप हूं। इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना : क़्यामत के दिन मेरे हसब व नसब के सिवा हर सिलसिल–ए–नसब मुन्क़ता हो जाएगा। हर बेटे की निस्बत बाप की तरफ़ होती है मासिवाए औलादे फ़ातिमा के कि उन का बाप भी मैं ही हूं और उनका नसब भी मैं ही हूं। इस हदीस को इमाम अब्दुर्रज़्ज़ाक़, बैहक़ी और तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: ऐ लोगो! क्या मैं तुम्हें उनके बारे में ख़बर न दूं जो (अपने) नाना नानी के एतेबार से सब लोगों से बेहतर हैं? क्या मैं तुम्हें उनके बारे में न बताऊं जो (अपने) चचा और फूफी के लिहाज़ से सब लोगों से बेहतर हैं? क्या मैं तुम्हें उनके बारे में न बताऊं जो (अपने) मामू और ख़ाला के एतेबार से सब लोगों से बेहतर हैं? क्या मैं तुम्हें उनके बारे में न ख़बर दूं जो (अपने) मां–बाप के लिहाज़ से सब लोगों से बेहतर हैं? वह हसन और हुसैन हैं, उनके नाना अल्लाह के रसूल, उनकी नानी ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद, उनकी वालिदा फातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह, उनके वालिद अली बिन अबी तालिब, उनके मामू क़ासिम बिन रसूलुल्लाह और उनकी खाला रसूलुल्लाह की बेटियां ज़ैनब, रुक़य्या और उम्मे कुलसूम है, उनके चचा जाफर बिन अबी तालिब, उनकी फूफी उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब, उनके नाना, वालिद, चचा, फूफी, मामूं और ख़ाला (सब) जन्नत में होंगे और वह दोनों (हसनैन करीमैन) भी जन्नत में हूंगे। इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुआ तो (देखा कि) हसन और हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने या गोद में खेल रहे थे। मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन से मुहब्बत करते हैं? हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मैं उन से मुहब्बत क्यों न करूं। हालांकि मेरे गुलशने दुनिया के यही तो दो फूल हैं जिनकी महक को सूंघता रहता हूं (और इन्हीं फूलों की खुशबू से कैफ़ व सुरूर पाता हूं) इस हदीस को इमाम तबरानी ने बयान किया है।

हसनैन करीमैन से मुहब्बत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत और हसनैन करीमैन से बुग़्ज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बुग़्ज़ होने का बयान

तरजमा : हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हसन और हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा का हाथ पकड़ा और फरमाया : जिसने मुझ से और इन दोनों से मुहब्बत की और उनके वालिद से और उनकी वालिदा से मुहब्बत की वह क़्यामत के दिन मेरे साथ मेरे ही ठिकाना पर होगा। इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी और अहमद ने रिवायत किया है और इमाम तिर्मिज़ी ने फरमाया कि यह हदीस हसन है।

तरजमा : हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम से फरमाया : जिस से तुम लड़ोगे मेरी भी उससे लड़ाई होगी, और जिससे तुम सुलह करोगे मेरी भी इससे सुलह होगी। इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी और इमाम इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

एक और रिवायत में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली, हज़रत फातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम की तरफ़ देखा और फरमाया : जो तुमसे लड़ेगा मैं उससे, लडूंगा, जो तुम से सुलह करेगा मैं उससे सुलह करूंगा (यानी जो तुम्हारा दुश्मन है वह मेरा दुश्मन है और जो तुम्हारा दोस्त है वह मेरा भी दोस्त है) इस हदीस को इमाम अहमद बिन हंबल ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जिस ने हसन और हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से मुहब्बत की, उसने दर हक़ीक़त मुझ ही से मुहब्बत की और जिस ने हसन और हुसैन से बुग्ज़ रखा उसने मुझ से बुग्ज़ रखा। इस हदीस को इमाम इब्ने माजा, निसई और अहमद ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जिसने मुझ से मुहब्बत की, उस पर लाज़िम है कि वह उन दोनों से मुहब्बत करे। उस हदीस को इमाम निसई और इब्ने ख़ुज़ैमा ने रिवायत किया है।

हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में हसनैन करीमैन के मक़ाम व मरतबा का बयान

तरजमा : हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हसनैन करीमैन रज़ि अल्लहु अन्हुमा की तरफ़ देख कर फरमाया : ऐ अल्लाह! मैं उनसे मुहब्बत करता हूं तू भी उन से मुहब्बत कर, इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और फरमाया कि यह हदीस हसन सही है।

तरजमा : हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि उन्होने फरमाया : मैं एक रात किसी काम के लिए हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और आप किसी चीज़ को अपने जिस्म से चिमटाए हुए थे जिसे मैं न जान सका जब मैं अपने काम से फारिग़ हुआ तो अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आपने क्या चीज़ चिमटा रखी है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कपड़ा उठाया तो वह हसन और हुसैन थे। फरमाया : यह मेरे बेटे हैं। ऐ अल्लाह! मैं इनसे मुहब्बत करता हूं तू भी इन से मुहब्बत कर और उन से मुहब्बत करने वाले से भी मुहब्बत कर। इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी और इब्ने हिब्बान ने रिवायत किया है और इमाम तिर्मिज़ी ने फरमाया कि यह हदीस हसन है।

तरजमा : हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया गया: आपको अह्ले बैत में से सबसे ज़्यादा कौन महबूब है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : हसन और हुसैन और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत फ़ातिमा से कहा करते थे मेरे बेटों को बुलाओ

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें चूमते और उन्हें अपने साथ लिटा लेते। इस हदीस को इमाम तिर्मिजी और अबू यअ्ला ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अबू बुरैदह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें ख़ुतबा दे रहे थे, इतने में हसनैन करीमैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा तशरीफ़ लाए, उन्होंने सुर्ख़ रंग की क़मीस पहनी हुई थी और वह (कम उम्र होने की वजह से) लड़ खड़ा कर चल रहे थे। हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (उन्हें देख कर) मिंबर से नीचे तशरीफ़ ले आए, दोनों (शहज़ादों) को उठाया और अपने सामने बिठा लिया, फिर फरमाया : अल्लाह तआला का फरमान कितना सच है : 'बेशक तुम्हारे अम्वाल और तुम्हारी औलाद आज़माइश ही हैं, मैंने इन बच्चों को लड़ खड़ा कर चलते देखा तो मुझ से रहा न गया हत्ता कि मैंने अपनी बात काट कर उन्हें उठा लिया।' इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी और निसई ने रिवायत किया है और कहा है कि यह हदीस हसन है।

तरजमा : हज़रत यअ्ला बिन मुर्रह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हसनैन करीमैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ चल कर आए, पस उनमें से जब एक पहुंचा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना बाज़ू उसके गले में डाला, फिर दूसरा पहुंचा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना दूसरा बाज़ू उसके गले में डाला, बादे अज़ां एक को चूमा और फिर दूसरे को चूमा और फ़रमाया : ऐ अल्लाह! मैं इनसे मुहब्बत करता हूं तू भी इनसे मुहब्बत कर। इस हदीस को तबरानी ने रिवायत किया है।

सैय्यदा फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा के घराने का अह्ले बैत और अह्ले कसा होने का बयान

तरजमा : हज़रत अबू बरज़ह रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : आदमी के दोनों क़दम (रोज़े क़्यामत) उस वक़्त तक इस्तिक़ामत नहीं पा सकते जब तक उस से चार चीज़ों के बारे में सवाल न कर लिया जाए उसके जिस्म के बारे में कि किस चीज़ में उसने उसको इम्तिहान में डाला और उसके उम्र के बारे में कि किस चीज़ में उसने उसको फना किया और उसके माल के बारे में कि कहां से उसने उसे कमाया? और किस चीज़ में उसने उसको ख़र्च किया? और अह्ले बैत की मुहब्बत के बारे में। पस अर्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपकी मुहब्बत की क्या अलामत है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना दस्ते अक़्दस हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु के कन्धे पर मारा।" इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : "हज़रत अब्दुल्लाह बिन हनब रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक दफ़ा हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जहफ़ा के मक़ाम पर हम से मुख़ातब हुए और फरमाया : क्या मैं तुम्हारी जानों से बढ़ कर तुम्हें अज़ीज़ नहीं हूं? सहाबा ने अर्ज़ किया : क्यों नहीं या रसूलुल्लाह! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : पस मैं तुम से दो चीज़ों के बारे में सवाल करने वाला हूं। कुरआन के बारे में और अपनी इतरत अह्ले बैत के बारे में। आगाह हो जाओ कि कुरैश पर पेश क़दमी न करो कि तुम गुम्राह हो जाओ और न उन्हें सिखाओ कि वह तुम से ज़्यादा जानने वाले हैं और अगर कुरैश फ़ख़्र न करते तो मैं ज़रूर उनको अल्लाह के हां उनके मक़ाम के बारे बताता कुरैश में बेहतरीन लोग तमाम लोगों से बेहतरीन हैं।" उसे इमाम अबू नईम ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ब्यान करते हैं कि वह हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुए। दरआं हालेकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चादर बिछाई हुई थी। पस उस पर हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (बनफ़्से नफ़ीस) हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम बैठ गये फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस चादर के किनारे पकड़े और उन पर डाल कर उसमें गिरह लगा दी। फिर फरमायाः ऐ अल्लाह! तू भी उन से राज़ी हो जा, जिस तरह मैं उन से राज़ी हूं। उसे इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि आख़िरी चीज़ जो हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाई वह यह थी कि मुझे मेरे अह्ले बैत में तलाश करो। इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

तरजमा : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "अपनी उम्मत में से सबसे पहले जिसके लिए मैं शफ़ाअत करूंगा वह मेरे अह्ले बैत हैं, फिर जो क़ुरैश में से मेरे क़रीबी रिश्तेदार हैं, फिर अन्सार की फिर उनकी जो यमन में से मुझ पर ईमान लाए और मेरी इत्तिबा की, फिर तमाम अरब की, फिर अजम की और सबसे पहले मैं जिनकी शफ़ाअत करूंगा वह अह्ले फ़ज़ल होंगे।" इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है।

यह शेअ़र वाक़ेआते करबला के पांच सौ साल पहले एक गिरजा घर पर लिखा हुआ था

तरजमा : जिस क़ौम ने प्यारे हुसैन को क़त्ल किया वह क्या उनके नाना से शफ़ाअत की उम्मीद रख सकती है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : सच्चा मुसलमान वह है जिसके ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।

और सच्चा मोमिन वह है जिससे लोग अपने जान व माल के बारे में मुत्मइन रहें और उन्हें ख़ौफ़ व ख़तर न हो। (तिर्मिज़ी, निसई)

करबला में शरीक होने वाले अह्ले बैते किराम के नामों की फ़ेहरिस्त

1. हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु।
2. हज़रत सैय्यदना इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु।
3. हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु।
4. हज़रत सैय्यदना अली अकबर रज़ि अल्लाहु अन्हु।
5. हज़रत सैय्यदना अली असग़र रज़ि अल्लाहु अन्हु।
6. हज़रत सैय्यदना अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु।
7. हज़रत जाफर इब्ने मौलाए काइनात रज़ि अल्लाहु अन्हु।

8. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मौलाए काइनात रज़ि अल्लाहु अन्हु।

9. हज़रत उस्मान इब्ने मौलाए काइनात रज़ि अल्लाहु अन्हु।

10. हज़रत मुहम्मद इब्ने मौलाए काइनात रज़ि अल्लाहु अन्हु।

11. हज़रत सैय्यदना क़ासिम इब्ने इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु।

12. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु।

13. हज़रत उमर इब्ने इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु।

14. हज़रत अबू बकर इब्ने हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु।

15. हज़रत औन इब्ने अब्दुल्लाह पिसर हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा।

16. हज़रत मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह पिसर हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा।

17. हज़रत जाफर इब्ने अक़ील रज़ि अल्लाहु अन्हु।

18. हज़रत अब्दुर्रहमान इब्ने अक़ील रज़ि अल्लाहु अन्हु।

19. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अक़ील रज़ि अल्लाहु अन्हु।

20. हज़रत सैय्यदना इमाम मुहम्मद बाक़र रज़ि अल्लाहु अन्हु (जिन से नस्ले हुसैनी चली)

21. हज़रत सैय्यदना हसन मुसन्ना रज़ि अल्लाहु अन्हु (जिन से नस्ले हसनी चली)

22. हज़रत शहर बानो रज़ि अल्लाहु अन्हा (ज़ौजा हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु)

23. हज़रत उम्मे रुबाब ज़ौजा हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा।

24. हज़रत उम्मे लैला ज़ौजा हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा।

25. हज़रत उम्मे फरवा ज़ौजा हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा।

26. हज़रत फातिमा बिन्ते इमाम हसन ज़ौजा हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हुम।

27. हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा बिन्ते हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु।

28. हज़रत सैय्यदा उम्मे कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा बिन्ते हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु।

29. हज़रत सैय्यदा हमीदा बिन्ते इमाम मुस्लिम रज़ि अल्लाहु अन्हु।

जांनिसारों के नामों की फ़ेहरिस्त

1. हज़रत हबीब इब्ने मज़ाहिर असदी।
2. हज़रत मुस्लिम बिन औसजा असदी।
3. हज़रत सुलेमान गुलाम आज़ाद इमाम पाक।
4. हज़रत क़ारिब गुलाम आज़ाद इमाम पाक।
5. हज़रत ज़ुहैर बिन हस्सान मुहम्मदी।
6. हज़रत अमर बिन ख़ालिद सैदादी।
7. हज़रत मुहम्मद बिन हंज़ला तमीमी।
8. हज़रत शुरैह बिन उबैद मक्की।
9. हज़रत बशीर बिन उमर हज़रमी।
10. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उरवा ग़फ़्फ़ारी।
11. हज़रत वक़ास इब्ने मालिक अहमदी।
12. हज़रत हाशिम बिन उतबा मक्की।
13. हज़रत क़ैस बिन रबीई अन्सारी।
14. हज़रत करदूस बिन ज़ुहैर सअ़्लबी।
15. हज़रत यज़ीद बिन मुसबत क़ैसी।
16. हज़रत ज़रनाम बिन मालिक अन्सारी।
17. हज़रत कअ़्ब बिन ज़रआ नमरी।
18. हज़रत ज़ुबैर बिन बशीर हबज़ी।
19. हज़रत अम्मार बिन हस्सान मदनी।

20. हज़रत हस्सान बिन हिसार शा।

21. हज़रत ताहिर ग़ुलाम आज़ाद इब्नुल–हक ख़ुज़ाई।

22. हज़रत ज़ुबैर बिन सलीम अज़दी।

23. हज़रत अबू तमामा अन्सारी।

24. हज़रत वहब बिन अब्दुल्लाह कलबी।

25. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर कलबी।

26. हज़रत अमर बिन अब्दुल्लाह साइदी।

27. हज़रत बिलाल बिन नाफ़े बिजली।

28. हज़रत ज़ुहैर बिन कैस बिजली।

29. हज़रत हरीर आज़ाद करदह ग़ुलाम हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ि अल्लाहु अन्हु।

30. हज़रत नईम बिन अज्लान अन्सारी।

31. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन उरवा ग़फ़्फ़ारी।

32. हज़रत किनाबा बिन अतीक़ अन्सारी।

33. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुस्बत क़बसी।

34. हज़रत उमर बिन हनफ़ीया सफ़ी।

35. हज़रत सालिम ग़ुलाम आज़ाद करदह।

36. हज़रत बद्र बिन मुफ़फ़्फ़ल जअ्फ़ी।

37. हज़रत मुजाहिद बिन मरूक़।

38. हज़रत जुन्दुब बिन हज़र ख़ौलानी।

39. हज़रत जबिल्ला बिन अली शैबानी।

40. हज़रत कासिम बिन हबीब अज़्दी।

41. हज़रत अमर बिन अब्द साइदी।

42. हज़रत ख़ालिद बिन अमर व मक्की।

43. हज़रत तबरेज़ बिन हकीर हम्दानी।

44. हज़रत हम्माद बिन अनस मज्दी।

45. हज़रत कैस बिन मनीया मदनी।

46. हज़रत फासित बिन ज़ुहैर सअ्लबी।

47. हज़रत मुर्रह बिन अबी मुर्रह ग़फ़्फ़ारी।

48. हज़रत अनस बिन काहिद असदी।

49. हज़रत शीस इब्ने अब्दुल्लाह बहिश्ती।

50. हज़रत जरीद बिन मालिक अन्सारी।

51. हज़रत आमिर बिन मुस्लिम अन्सारी।

52. हज़रत आमिर बिन मुस्लिम।

53. हज़रत सफ़ बिन मालिक अन्सारी।

54. हज़रत सऊद बिन हुज्जाज अन्सारी।

55. हज़रत मज्मा बिन अब्दुल्लाह।

56. हज़रत यज़ीद बिन ज़्यादा बिन मज़ाहिर किन्दी।

57. हज़रत अस्लम बिन कसीर आरज अज़्दी।

58. हज़रत उमर बिन जुन्दुब हज़री।

59. हज़रत हन्ज़ला बिन अस्अद शैबानी।

60. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह कुन्दी औजी।

61. हज़रत शौज़ब ग़ुलाम आज़ाद शाकिर अन्सारी।

62. हज़रत मुहम्मद बिन अन्नसी अन्सारी।

63. हज़रत अली बिन जरीद बिन रियाही।

64. हज़रत अम्मार बिन इस्लाम अन्सारी।

65. हज़रत शैब बिन हारिस बिन सरीअ् अन्सारी।

66. हज़रत मिक्दाद अन्सारी।

67. हज़रत उरवा बिन ग़ुलाम आज़ाद हुर बिन यज़ीद रियाही।

68. हज़रत अब्बास बिन आल हबीब शाकरी।

69. हज़रत मालिक शरीअ् अन्सारी।

70. हज़रत सअद बिन अब्दुल्लाह उतबकी।

71. हज़रत हुर बिन यज़ीद रियाही।

72. हज़रत मुस्अब बरादर हुर बिन यज़ीद रियाही।

जिन्हें करबला में 11 मुहर्रम को कैदी बनाया गया

1. हज़रत सैय्यदा ज़ैनब बिन्त हज़रत सैय्यदा ख़ातूने जन्नत रज़ि अल्लाहु अन्हा।
2. हज़रत सैय्यदा उम्मे कुल्सूम बिन्त हज़रत सैय्यदा ख़ातूने जन्नत रज़ि अल्लाहु अन्हा।
3. हज़रत सैय्यदना इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु इब्ने हज़रत इमाम पाक।
4. हज़रत सैय्यदना इमाम मुहम्मद बाक़र, उम्र मुबारक 5 साल की थी।
5. हज़रत शहर बानो रज़ि अल्लाहु अन्हा, ज़ौजा हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु।
6. हज़रत उम्मे रुबाब ज़ौजा हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु।
7. हज़रत उम्मे लैला ज़ौजा हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु।
8. हज़रत उम्मे फरवा ज़ौजा हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु।
9. हज़रत फ़ातिमा बिन्ते इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु ज़ौजा हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु।
10. हज़रत सैय्यदा सकीना बिन्ते हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु।
11. हज़रत सैय्यदा हमीदा बिन्ते हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ि अल्लाहु अन्हु, जिसके सर पर इमाम पाक ने हाथ फेरा था करबला के सफर में।
12. हज़रत फ़िज़्ज़ा ख़ादिम हज़रत सैय्यदा ख़ातूने जन्नत रज़ि अल्लाहु अन्हा।
13. हज़रत शीरीं ख़ादिमा हज़रत शहर बानो रज़ि अल्लाहु अन्हा।
14. हज़रत हसन मुसन्ना इब्ने इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु जिन से हसनी नसल चली।

बअ़्द शहादते करबला का हौलनाक मन्ज़र

मैदाने करबला में जब यज़ीदी दरिन्दे तमाम आवान व अन्सार और औलादे अक़ील दीगर बनी हाशिम का ख़ून बहा चुके अब इब्ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यानी फातिमा का लाल अपनी आख़िरी क़ुरबानी पेश करने के लिए और इस्लाम के दरख़्त को अपने ख़ून से सींचने के लिए तैयार कर चुका ताकि क़यामत तक के लिए इस्लाम का दरख़्त हरा हो जाए। शबे आशूरा से दस्वीं की सुबह तक यह मुसीबतें इमाम हुसैन के ऊपर कि हर शहीद की लाश को ख़ेमे तक लाए जिसमें बराबर का भाई और जवान बेटा व छेः माह का बच्चा शामिल था।

रिवायतों से पता चलता है कि नौ मुहर्रम तक हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के सर के बाल और दाढ़ी के बाल सियाह थे मगर आशूरा के अस्र तक आपके तमाम बाल ग़मों से सफेद हो गये।

तारीख़ कहती है कि हज़रत इमाम हुसैन दुश्मनों की चमकती हुई हज़ारों तल्वारों और बेशुमार नेज़ों और बरछियों के बीच में आए।

क्या हालत होगी उस इंसान की जिसका ज़ालिमों ने सब कुछ छीन लिया हो। अपनी निगाहों के सामने पूरे घर को ख़ाक व ख़ून में एड़ियां रगड़ कर दम तोड़ते देख कर यही नहीं बल्कि दिल पर सब्र व ज़ब्त का पत्थर रख कर एक–एक लाश उठा कर ख़ेमा तक लाने वाले हज़रत इमाम हुसैन के अब दिल की हालत क्या रही होगी।

मैदाने करबला में फौजे अश्क़िया ने सरकारे इमाम हुसैन को हर तरफ़ से घेर लिया तीरों की बारिश होने लगी इमाम घोड़े पर डगमगाने लगे इतने तीर जिस्म में पैवस्त हो गये कि आप घोड़े से ज़मीन पर आ गये, और सज्दे में गिर गये। शिम्र ख़ंजर लेकर आगे बढ़ा और सीन–ए–अक़्दस पर सवार हो गया और गर्दन पुश्त की जानिब से ठहर–ठहर कर काटने

लगा यहां तक कि सरे अक़्दस को तने पाक से जुदा कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

सरकार इमाम आली मक़ाम के सरे पाक का तने अक़्दस से जुदा होना था बस करबला में क़्यामत आ गई। ज़लज़ले पे ज़लज़ले आने लगे। आसमान में अन्धेरा छा गया। सिर्फ़ दरियाए फ़ुरात ही का पानी नहीं बल्कि दुनिया भर के दरियाओं और समुन्द्रों के पानी उछलने लगे। मौजें सर को पटकने लगीं।

मौजें तमाम सर को पटकती हैं आज भी
आले नबी के पास जो पानी न ज़ा सका

दिन ही में सितारे नमूदार हो गये। उधर यज़ीदी दहशत गर्दों ने अह्ले बैते अत्हार के ख़ेमों में आग लगा दी और सामान लूटने लगे। हज़रत सकीना के कानों की बालियां नोच लीं। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब और सैय्यदा उम्मे कुल्सूम के सरों से रिदाओं को छीन लिया।

इक रिदाए ज़ैनब को छीन कर यज़ीदों ने
जाने कितनी सदियों को बेरिदा बना डाला

बेसहारा बीवियां किस को पुकारें। बच्चे भाग-भाग कर माओं को पुकारने लगे।

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने हज़रत सैय्यद सज्जाद से पूछा कि बेटा तुम इमामे वक़्त हो बताओ कि हम लोग ख़ेमों में जल कर मर जाएं या कि बाहर निकलें।

दुश्मन के एक सिपाही का बयान है कि जब ख़ेमे जल रहे थे तो मैंने देखा कि एक बुलन्द क़ामत ख़ातून कभी ख़ेमे के अन्दर जाती हैं और कभी बाहर आती हैं। कभी दाएं तरफ़ देखती हैं कभी बाएं तरफ़ और कभी आसमान की तरफ़ और फिर अपने हाथ पर हाथ मारती हैं।

सिपाही कहता है कि मैंने कहा कि ऐ ख़ातून दूर हो जाइए आग बहुत तेज़ है। उस पर उस ख़ातून ने जवाब दिया कि ऐ शैख़ हमारा एक बीमार भतीजा ख़ेमे के अन्दर है जो शिद्दते मरज़ की वजह से उठने पर क़ादिर नहीं है। मैं उसे तन्हा आग के शोअ्लों में कैसे छोड़ सकती हूं।

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा जलते हुए ख़ेमों के भड़कते हुए शोअ्लों के अन्दर जा कर हज़रत सैय्यद सज्जाद को अपने पुश्त पर लाद कर बाहर लायीं। इतने में इमाम ज़ैनुल–आबेदीन ने आंखें खोलीं और देखा कि मेरे बाबा का सरे पाक नेज़े की नोक पर है। ख़ेमे जलने लगें बीवियां एक ख़ेमे से दूसरे ख़ेमे में जाने लगीं, जब आख़िरी ख़ेमे में गईं तो उसमें भी आग लगा दी गई। इमाम हुसैन का पूरा घर आलमे गुरबत में लुट गया।

सर तन से जुदा होते ही आलमे बाला में कुहराम मच गया। इमाम आली आली मक़ाम की शहादत के बाद ही फ़ौरन आसमान के किनारों से सुर्ख़ गुबार उठा और देखते–देखते तमाम जहान तारीक हो गया।

और इस क़द्र अन्धेरा छा गया कि पास ही में खड़े हुए की सूरत नज़र न आती थी। इतने में आसमान से ख़ून की बारिश शुरू हो गई और तीन दिन तक मुसलसल ख़ून की बारिश होती रही और दुनिया भर में जहां जिस चीज़ को उठाया जाता ख़ून ही ख़ून नज़र आता। मदीने में उम्मुल–मुमिनीन जनाब उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा के पास जो करबला की मिट्टी वाली शीशी थी वह ख़ून से लब्रेज़ हो गई। हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम का कुर्ता जो एक ज़माना से ख़ुश्क था वह ख़ून आलूद हो गया। यज़ीदी फौजों में ख़ुशी के बाजे बजने लगे। फौरन सियाह आंधियां चलने लगीं।

तरजमा : जब सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया तो सूरज को शदीद गहन लग गया हत्ता कि दोपहर के वक़्त तारे नमूदार हो गये यहां तक कि उन्हें इत्मीनान हो गया कि यह रात है।

जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया तो आसमान सुर्ख़ हो गया। (मोअ़जमें कबीर स. 282)

तरजमा : हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के वक़्त आसमान पर सुर्ख़ी हो गई। (मोअ़जमें कबीर स. 282)

तरजमा : जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया तो बैतुल–मक़्दिस को जो भी पत्थर उठाया जाता उसके नीचे ताज़ा ख़ून पाया जाता। (मोअ़जमें कबीर स. 283)

तरजमा : शहादत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के दिन मुल्क शाम में जो भी पत्थर उठाया जाता वह ख़ून आलूद होता।

अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती फरमाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के दिन सूरज ग्रहण में आ गया था और फिर मुसलसल आसमान छेः माह तक सुर्ख़ रहा। बाद में वही सुर्ख़ी आहिस्ता–आहिस्ता शफ़क़ बन गई अब यह निशानी सुबह क़्यामत तक बाक़ी रहेगी जो शहादते इमाम से पहले मौजूद न थी।

(सवाइक़े मुहरिक़ा स. 645, तारीख़े ख़ुलफ़ा स. 304)

मुहद्देसीन बयान करते हैं कि इमाम आली मक़ाम की शहादत पर न सिर्फ़ दुनिया रोई बल्कि ज़मीन व आसमान ने भी आंसू बहाए। शहादत हज़रत इमाम हुसैन पर आसमान भी नौहा कुनां था। इंसान तो इंसान जिन्नातों ने भी मज़्लूमे करबला की नौहा ख़्वानी की। मुहद्देसीन बयान करते हैं कि नवास–ए–रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शहादत के वक़्त बैतुल–मक़्दिस से जो पत्थर उठाया गया। उसके नीचे से ख़ून

निकला। शहादते हज़रत इमाम हुसैन के बाद भी मुल्क शाम में जिस पत्थर को हटाया गया उसके नीचे से ख़ून का चश्मा उबल पड़ा। मुहद्देसीन का कहना है कि शहादते इमाम हुसैन पर पहले आसमान सुर्ख़ हो गया। फिर सियाह हो गया। सितारे एक दूसरे के टकराने लगे। यूं लग रहा था जैसे काइनात टकरा कर ख़त्म हो जाएगी। यूं लगा जैसे क़्यामत क़ायम हो गई हो। दुनिया में अन्धेरा छा गया।

ईसा बिन हारिस अल–किन्दी से मरवी है :

तरजमा : जब इमाम हुसैन को शहीद कर दिया गया हम सात दिन तक ठहरे रहे जब हम अस्र की नमाज़ पढ़ते तो हम दीवारों के किनारों से सूरज की तरफ़ देखते तो गोया वह ज़र्द रंग की चादरें महसूस होता और हम सितारों की तरफ़ देखते तो उनमें से बाज़ बाज़ से टकराते।

शामे ग़रीबां

बाद शहादते इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु जो दिल सोज़ रात करबला में आई उसी को शामे ग़रीबां कहते हैं।

करबला की धरती पर आशूरा के सूरज ने सुबह से शाम तक दुनिया का पहला और आख़िरी ख़ूंरेज़ मअ़्रका देखा और शर्म से सहम कर जल्द अज़ जल्द ग़ुरूब होने लगा और उसके हल्के अन्धेरे में हज़रत सैय्यदा ज़ैनब और जुमला अह्ले हरम ग़मगीन हो गये।

करबला के वहशतनाक सहरा में कहीं सर छुपाने तक की जगह ज़ालिमों ने न रखी। दिन रो–रो कर कटा, रात एक नई मुसीबत लेकर आई। मैदाने करबला में हर तरफ़ वहशत और दूर–दूर तक भयानक सन्नाटा तारी था दरिन्दों की ख़ौफ़नाक आवाज़ें बच्चों को निढाल किए जा रही थीं।

दूसरी तरफ़ आंखों के सामने मामता के जलते हुए दिए हमेशा–हमेशा के लिए बुझ चुके हैं। ज़मीने करबला पर जगह–जगह शुहदाए किराम के ख़ून के धब्बे पड़े हैं। अब कोई सहारा नहीं बचा, ज़ालिमों की तमांचा खाई हुई निढाल सकीना अपनी यतीमी पर आंसू बहा रही हैं और हज़रत अली की शहज़ादियां हज़रत सैय्यदा ज़ैनब और हज़रत सैय्यदा उम्मे कुल्सूम करबला की ख़ाक पर अन्धेरे में बैठी रो रही हैं। ग़ुर्बत की शाम कितनी भयानक होती है, इन मुसीबत ज़दह बीवियों से पूछो कल तक जिनका घर बच्चों से भरा था, भाई भतीजे और भांजे आंखों के सामने थे। आज वह रात है कि करबला की ज़मीन पर हर तरफ़ ताज़ा ख़ून जमा हुआ है, करबला का वीरान सुनसान मैदान, रात का अन्धेरा, आबादियों का सैंकड़ों मील तक कोई नाम व निशान मौजूद नहीं।

हवा के झोंकों की सनसनाहट और दरिन्दों की ख़ौफ़नाक आवाज़ें, उजड़ी हुई गोदी, खुले हुए सर, एक जली हुई क़नात का पर्दा, बग़ैर शामियाना के बीवियां सर झुकाए बैठी हैं। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा एक मज़्बूत चट्टान की तरह ज़मीने करबला पर खड़ी हुईं। अब ज़ैनब, ज़ैनब भी और हुसैन भी हैं और फातिमा भी हैं।

कभी हुसैन कभी फ़ातिमा कभी ज़ैनब
जहां पे जैसी ज़रूरत थी बन गईं ज़ैनब

अब हज़रत इमाम हुसैन की सारी ज़िम्मेदारियां हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने अपने कन्धे पर उठा लीं हज़रत ज़ैनब रात में उठीं हाथ में टूटा ख़ंजर लिया और पहरा देने लगें। आधी रात के वक़्त करबला के सन्नाटे में जहां हर तरफ़ लाशें बिखरी हुई थीं इतने में किसी के सिसकने की आवाज़ आई। हज़रत ज़ैनब और हज़रत कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा ने क्या देखा कि हज़रत सकीना एक लाश पर पड़ी सिसक रही हैं। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने हज़रत सैय्यदा सकीना को गोद में उठा लिया और पूछा बेटी किस की लाश पर तुम लेटी हुई थीं? हज़रत सकीना ने कहा बाबा के ऊपर। हज़रत ज़ैनब ने पूछा कि बेटी तुम को कैसे मालूम कि यह तुम्हारे बाबा लेटे हैं? हज़रत सकीना ने कहा फूफी जब मैं बाबा, बाबा कह के आगे बढ़ी तो कहा बाबा कहां हो सकीना को तुम्हारे ऊपर लेटे बग़ैर नींद नहीं आएगी? तो उसी कटे हुए जिस्म से आवाज़ आई ऐ बेटी इधर आओ। मैं समझ गई कि यही मेरे बाबा हैं।

इधर फौजे यज़ीद में शादियाने बज रहे थे। जब अश्क़िया गिज़ाए लज़ीज़ और ख़ूब ठण्डा पानी पी कर सैराब हो चुके तो किसी ने पिसरे सअ्द से कहा कि जो औरतें हज़रत इमाम हुसैन के हमराह आईं थीं अब उनका कोई वारिस नहीं है। उनके साथ छोटे–छोटे बच्चे हैं जो कई रोज़ से भूखे और प्यासे हैं कहीं ऐसा न हो कि वह हलाक हो जाएं, उनके लिए थोड़ा पानी भिजवा दें।

इस ख़िदमत के लिए हुर्र की बीवी को तैयार किया गया। हुर्र की बीवी आधी रात को एक मश्कीज़ा में पानी लेकर चली किसी को आते देख कर हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने बढ़ कर डांटा कि ठहर जा तो उसने बताया कि में हुर्र की बीवी हूं। आपके बच्चों के लिए खाना और ठन्डा पानी लाई हूं। यह सुन कर हज़रत ज़ैनब रोने लगीं और फरमाया बहन तेरी मुहब्बत का शुक्रिया देख जिसके भाई, भतीजे और बेटे आंखों के सामने पानी मांगते हुए ज़िबह कर दिए गये, वह पानी कैसे पी सकते हैं। यह पानी वापस ले जा। हुर्र की बीवी क़दमों में गिर पड़ी और बेहद मज्बूर कर देने पर ख़स्ता दिल ज़ैनब ने एक कूज़ह में पानी लिया और सबसे पहले अपने भाई की नन्हीं सकीना को जगाया और कहा मेरे लाल उठो और पानी पी लो। पानी का नाम सुनते ही सकीना ने आंखें खोल दीं और उठ कर बैठ गईं। और घबरा कर पूछा कि फूफी यह कैसा पानी है क्या चचा जान दरिया से वापस आ गये हैं? हज़रत ज़ैनब ने कहा बेटी वह तो दरिया पर सो रहे हैं यह पानी हुर्र की बीवी दे गई हैं। नन्हीं सकीना ने ग़ौर से फूफी का चेहरा देखा और पूछा कि फूफी आपने पानी पी लिया है? हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने भतीजी को सीने से चिमटा लिया और कहा मेरे लाल तमु सबसे छोटी हो पहले तुम पी लो फिर हम पी लेंगे। बस यह सुनना था कि हज़रत सकीना ने फूफी के हाथ से प्याला ले लिया और नन्हें-नन्हें पैरों से मक़्तल की तरफ़ बेतहाशा दौड़ पड़ीं। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने आवाज़ दी बेटी सकीना कहां जा रही हो इधर आओ सैय्यदा सकीना ने मुड़ कर फूफी को देखा और कहा फूफी जान आपने ही तो कहा है कि तुम सबसे छोटी हो, पहले तुम पी लो। अरे मुझ से छोटा मेरा भैया अली असग़र है और वह मुझ से ज़्यादा प्यासा है। पहले मेरा प्यासा भैया पानी पी लेगा फिर मैं पानी पियूंगी। यह सुन कर सारी बीवियां रोने लगीं और हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने सैय्यदा सकीना को सीने से लगा लिया। करबला के सुनसान

वीराने में अह्ले हरम ने न मालूम रात कैसे काटी, अह्ले बैत की पहाड़ जैसी रात बेबसी में तमाम हो गई।

रात गुज़र गई, जब आधी रात का वक़्त हुआ, जनाब ज़ैनब ने देखा कि रात की तारीकी में एक सवार चला आ रहा है और इसी तरफ़ बढ़ रहा है। ज़ैनब परेशान हो गईं और फरमाया ऐ सवार! इस तरफ़ का इरादा न करना। हमारे बच्चे अभी–अभी सोए हैं। लूटना है तो दिन के उजाले में लूट लेना। अब बचा ही क्या है तुम तो सब लूट चुके हो, अब क्या लूटोगें जब सवार न रुका तो हैदरे कर्रार की बेटी को जलाल आ गया पुकार कर कहा ख़बरदार अब आगे न बढ़ना तुझे ख़बर नहीं कि मैं शेरे खुदा की बेटी हूं। अभी शेरे खुदा को पुकारूंगी। सवार और आगे आया। ज़ैनब ने बढ़ कर घोड़े की लगाम को पकड़ लिया और फरमाया ख़बरदार जो आगे बढ़ा। सवार ने नक़ाब उठाई कहा ज़ैनब बेटी तुमने पहचाना नहीं मैं तेरी मदद को आया हूं ज़ैनब की नज़र शेरे खुदा अली मुर्तज़ा पर पड़ी, चिमट कर रोने लगीं कहा बाबा अब आप मदद को आए हैं जब पूरा ख़ानदान क़त्ल कर दिया गया, आप न आए। आपका प्यारा हुसैन ज़िबह हुआ आप न आए। फरमाया बेटी यह सब्र का इम्तिहान था अगर मैं हाथ बटा देता तो कोई यज़ीदी बच के न जाता। तुम लोग फेल हो जाते अब तुम पास हो गये।

मैदाने करबला में ग्यारह मुहर्रम की सुबह का मन्ज़र

करबला में जब ग्यारह मुहर्रम की सुबह नुमूदार हुई तो एक नई मुसीबत लेकर आई। दिन का उजाला फैलना था कि यज़ीदी गुन्डे बेदर्द हाथों में रस्सियां, हथकड़ियां और बेड़ियां लिए हुए टूट पड़े, अह्ले बैते अत्हार को क़ैदी बना लिया गया। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने इमाम हुसैन के अज़ीम मक़्सद के लिए ख़ुद को तैयार किया। उमर सअद के हुक्म पर तमाम शुहदा के सर काटे गये तो यज़दियों ने शुहदाए किराम के मुक़द्दस सरों को आपस में बांटना शुरू किया। बारह सर क़बीले हवाज़िन को दिए गये और तेरह सर इब्ने अशअत को दिए गये, चौदह सर बनी तमीम को, छेः सर बनी असद को, पांच बनी कुन्दह को।

इमाम पाक का सर ख़ौली ने लिया, आपका अमाम उमर बिन यज़ीद ने लिया, चादर यज़ीद बिन सअद ने लिया, ज़ेरह और अंगूठी सनान बिन नख़्ई ने लिया, ज़ुल–फ़िक़ार मालिक बिन बशीर ने लिया। क़मीस यहिया बिन कअ्ब ने, नअ्लैन मुबारक मालिक बिन कुन्दली के हाथ आया। उसके बाद ऐलान हुआ तमाम सरों को नोके नेज़ह चढ़ा दिया जाए। बाक़ी सर दूसरे क़बीला वालों ने लिया। सैय्यद सज्जाद हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु को सख़्त बुख़ार और बीमारी की शिद्दत के बावजूद भी यज़ीदियों ने उनके हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़ी और गले में ख़ारदार तौक़ पहना कर अह्ले हरम के ऊंटों के नकील को आपके दस्ते अक़्दस में दे दिया, हज़रत सैय्यदा सकीना को ऊंट की नंगी पीठ पर रस्सियों से जकड़ कर बांध दिया गया। जब अह्ले बैत उस पर सवार हो गये और तमाम बीवियां सवार हो गईं सिर्फ़ हज़रत सैय्यदा ज़ैनब तन्हा रह गईं तो एक बार अजीब निगाहे हसरत से मैदाने करबला की तरफ़ देखा लेकिन सिवाए कुचली हुई लाशों के कुछ दिखाई न पड़ा। बेइख़्तियार हो कर मक़्तल की तरफ़

दौड़ीं जैसे लाश-ए-सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु नज़र आई। दौड़ कर उस पर खुद को गिरा दिया और रोने लगीं। आवाज़ दी मेरे भैया उठो और ज़ैनब को सवार करो जब मैं मदीना से चली थी तो किस क़द्र पर्दे के एहतमाम से लाए थे, आज मैं इस ज़िल्लत से शाम जा रही हूं। मेरे भैया उठो और ज़ैनब को अपने हाथों का सहारा दे दो। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब के जुमले कुछ इस क़द्र दर्दनाक थे कि एक दफ़ा भाई की लाश हरकत में आई और ज़मीने गर्म पर तड़पने लगी, कटे हुए सर से आवाज़ आई मेरी बहन ज़ैनब! यह न समझना कि हुसैन शाम तक तुम्हें तन्हा जाने देगा। अगरचे मेरा जिस्म यहां है मगर मेरा सर शहर बशहर तुम्हारे साथ रहेगा। भाई का हुक्म पाते ही बेक़रार ज़ैनब ने दिल को संभाला और आंसू पोंछते हुए भाई की लाश से जुदा हो गईं। अह्ले हरम का यह लुटा हुआ क़ाफ़िला ग्यारह मुहर्रम को करबला से चल पड़ा। आगे-आगे नोके नेज़ह पर शुहदा के सर और लुटे हुए क़ाफ़िला के सरदार का सर था। सैय्यद सज्जाद के हाथों में हथकड़ी, पैर में बेड़ी और गले में ख़ारदार तौक़ जिसके वज़न से बदन झुका हुआ है। नंगे पैर ऊंटों की महार पकड़े जलती हुई ज़मीन पर चल रहे हैं। जिस वक़्त अह्ले बैत का यह मज़्लूम क़ाफ़िला मक़्तले शुहदा से गुज़रा तो उनकी चीख़ें बुलन्द हो गईं। अपने वारिसों के बिछड़ने का ग़म, अपनी बेबसी का मन्ज़र पेश करता हुआ यह क़ाफ़िला नामालूम मंज़िल की तरफ़ रवाना हुआ।

रूदादे करबला कोई जैनब से पूछ ले

किन किन को साथ लाई थीं और लेके क्या चलीं

क़ाफ़िला चलता रहा चलते-चलते अचानक क़ाफ़िला ठहर जाता है। इसलिए कि जिस नेज़े पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का सरे अनवर है वह नेज़ह आगे नहीं बढ़ता है। यज़ीदी लश्कर का सरदार

शिम्र मलऊन को जब उसकी खबर हुई कि जिस नेज़ह पर इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का सरे अनवर है वह ज़मीन में अचानक गड़ गया है आगे बढ़ने के लिए तैयार नहीं है। हर कोशिश के बावजूद नेज़ह जब आगे न बढ़ा। तो शिम्र उस नेज़ह के पास नहीं गया जिस पर हज़रत इमाम का सरे अनवर था बल्कि हज़रत सैय्यद सज्जाद के पास गया और कहा कि सैय्यद सज्जाद तुम जानते हो कि तुम्हारे बाप क्यों रुक गये हैं। अपने बाप से कह कि आगे बढ़ें। अगर नहीं बढ़ेंगे तो अभी मैं तुमको और क़ैदी को तड़पा दूंगा। सैय्यद सज्जाद ने अपनी हथकड़ी और बेड़ी संभालते हुए बाप की तरफ़ रुख़ करके आवाज़ दी बाबा आप क्यों रुक गये। हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के सरे अनवर से आवाज आई बेटा सैय्यदा सज्जाद मैं कैसे न रुक जाऊं मेरी बेटी सकीना रास्ते में ऊंट की नंगी पीठ से ज़मीन पर गिर गई है। क्योंकि यज़ीदियों ने उसे दुर्रे मार-मार कर ज़मीन पर गिरा दिया है। मेरे लाल सैय्यद सज्जाद कुछ भी हो जाए जब तक मेरी सकीना न आएगी मैं हरगिज़-हरगिज़ आगे न बढूंगा। जब यह खबर जनाब ज़ैनब को मालूम हुई तो वह अपने ऊंट से उतरीं और जिस रास्ते से क़ाफ़िला आया था उधर को चलीं। थोड़ी दूर चलती हैं, कभी दाहिने तरफ़ देखती हैं कभी बाएं तरफ़ देखती हैं। कभी आवाज़ देती हैं बेटी सकीना तेरी फूफी जंगल में तुझे ढूंढ रही है, अगर कहीं है तो तुझे आवाज़ दे दे। जब कोई आवाज न आई तो जनाब ज़ैनब बेचैन हो गईं।

इस ख़्याल से कि अगर सकीना मिलीं तो भैया को क्या जवाब दूंगी। अचानक जनाब ज़ैनब ने देखा कि रास्ते पर कोई मुअज़्ज़मा बैठी है। जो नक़ाब पोश हैं। ज़ैनब आगे बढ़ीं और उनके क़रीब जा कर पूछा कि आपने किसी बच्ची को देखा है? नक़ाब पोश मुअज़्ज़मा ने जब आंचल हटाया तो देखा कि सकीना रो रही हैं और बीबी आंसू पोछ रही हैं। सकीना दर्द से तड़प रही हैं और बीबी बहला रही हैं।

जनाब ज़ैनब ने उन से पूछा कि ऐ बीबी तुम यह बताओ कि तुम कौन हो जो हुसैन की बच्ची पर रहम आ गया। उसे तमांचे सबने मारे, ताज़ियाने सबने मारे, मगर किसी को रहम न आया। तुम कौन हो जिसे इस बच्ची पर रहम आ गया।

बस यह सवाल करना था कि बीबी ने बच्ची को ज़मीन पर बिठलाया और अपने चेहरे से नक़ाब उलट दी और कहा बेटी मैं तेरी मां फातिमा ज़हरा हूं। ज़ैनब लिपट गईं, ज़ब्त का बन्धन टूट गया, कहा अम्मां हम लुट गये मेरा भाई क़त्ल कर दिया गया। ज़ैनब बच्ची को लेकर क़ाफ़िले में आईं, क़ाफ़िला आगे बढ़ा।

असीराने हरम कूफ़ा में

रास्ता तय करता हुआ क़ाफ़िला कूफ़ा के क़रीब पहुंचा, लश्कर वालों की तरफ़ से फतह व नुसरत की बुलन्द आवाज़ें औरतों का गिरया व बुका और ज़ख़्मियों की कराहें मिली जुली थीं। यह क़ाफ़िला कूफ़ा पहुंचा जहां मौला अली ने अपना मरकज़े हुकूमत बनाया था, जहां आपने अपने अहकाम सादिर किए थे।

ग्यारह मुहर्रम को इब्ने ज़्यादा ने कूफ़ा में कर्फ़्यू नाफ़िज़ कर दिया कि ख़बरदार कोई शख़्स बाहर न निकले, न किसी चौराहे पर कोई मज्मा हो न ही कोई नज़र आए।

कूफ़ा की तमाम सड़कें मुसल्लह सिपाहियों से भर गईं, यह सारी तैयारियां सरहाए शुहदा और असीराने अह्ले बैत के लुटे हुए क़ाफ़िले की आमद पर थी। इमाम पाक की शहादत की ख़बर आम

होने पर कूफ़ा में ख़ौफ़ व दहशत की फ़ज़ा तारी थी। लोग एक दूसरे से आहिस्ता–आहिस्ता कहते कि हुसैन क़त्ल कर डाले गये, हुसैन मार डाले गये। अब क्या होगा? 12 मुहर्रम को हथियारों में डूबे फौजी कूफ़ा में दाख़िल हुए। आगे–आगे क़ातिले हुसैन था जिसके हाथों में हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का सर था। और यह रज्ज़ पढ़ता हुआ जा रहा था।

मेरी रुकाब को चांदी या सोने से भर दे, मैंने बड़े मोहतरम सैय्यद व सरदार को मार डाला, जो बाप और मां के लिहाज़ से तमाम ख़लाइक़ से बेहतर था।

उसके बाद दस सवारों का जत्था पहुंचा जिसके आगे–आगे इस्हाक़ बिन यज़ीद हूया था यह लोग अपने परचम बुलन्द किए हुए थे ताकि लोग उन्हें पहचान लें और इब्ने ज़्याद उनकी अहमीयत करे। यह लोग यह रज्ज़ पढ़ते हुए जा रहे थे।

हमने पीठ और सीना घोड़ों की टापों से रौंद डाला ऐसे घोड़ों से जिनकी टापें सख़्त पड़ती थीं।

यह वही लोग थे जिन्होंने इमाम हुसैन का सीना और पुश्त इब्ने ज़्याद और उमर बिन सअद के हुक्म पर रौंद डाला था। इस मन्ज़र को देख कर लोगों में दहशत की लहर दौड़ गई थी। फौजियों से गली कूचे भरे हुए थे। आदमियों की कसरत से तिल रखने की जगह कूफ़ा में न थी। यह सारी भीड़ क़ैदियों के क़ाफ़िले और कारवाने हुसैनी की आमद की मुन्तज़िर थी जो कूफ़ा के क़रीब आकर इस इंतिज़ार में ठहराया गया था कि तमाशाइयों का पूरा मज्मा इकट्ठा हो जाए।

जब अह्ले हरम का क़ाफ़िला क़रीब आया सारा मज्मा इस्तिक़्बाल के लिए आगे बढ़ा। इब्ने ज़्याद के सिपाही दीवार बने हुए थे कि कोई शख़्स क़ाफ़िले के क़रीब न पहुंच सके। यह वह नाज़ुक वक़्त था कि बड़े से बड़े बहादुर अपने आपको न संभाल सकते थे मगर सैय्यदा ज़ैनब ने

अह्ले कूफ़ा को बता दिया कि इमाम हुसैन किस मक़्सद को लेकर उठे थे और क्यों यज़ीद की बैअ़त से इंकार किया था।

जब यह लुटा हुआ क़ाफ़िला कूफ़ा के क़रीब पहुंचा तो क़ाफ़िले को शहर के बाहर रोक दिया गया। शहर के अन्दर सजावट होने लगी पूरे शहरे कूफ़ा को सजा दिया गया और गली कूचों में ऐलान होने लगा कि बाग़ियों को (मआज़ल्लाह) मार डाला गया और उनके सरों को काट कर नेज़ों पर बुलन्द कर दिया गया। और उनके बच्चों और औरतों को क़ैदी बना कर लाया गया है। लोग जूक़ दर जूक़ जमा होने लगे।

यह लुटा हुआ क़ाफ़िला शहर कूफ़ा में दाख़िल किया गया। कहीं–कहीं यह भी ऐलान हो रहा था कि बनी फ़ातिमा की औलाद का तमाशा देखने के लिए निकल पड़ो। कुछ कूफ़ी इकट्ठा हो कर तमाशा देखने लगे और बच्चों को रोटी और खुरमा देने लगे। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने उन्हें डांटा और फ़रमाया कि ऐ बेशरमो! अपनी–अपनी निगाहें नीची कर लो और हमारे बच्चों को सदक़ा न दो कि आले मुहम्मद पर सदक़ा ह़राम है। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब बच्चों के हाथों से सदक़ात छीन कर फेंक देती थीं। कहीं–कहीं कुछ कूफ़ी पत्थर भी फेंकते थे। बाख़ुदा जो मुसीबतें अह्ले बैत पर पड़ीं अगर वह पहाड़ों पर पड़तीं तो वह रेज़ह–रेज़ह हो जाता। समुन्द्रों पर पड़तीं तो वह ख़ुश्क हो जाते मगर अह्ले बैत ने बड़े सब्र व इस्तिक़्लाल से बर्दाश्त फ़रमाया, कभी ऐसा कोई कलिमा नहीं निकाला जिससे ख़ुदा की बारगाह में शिकायत या नाशुक्री हो।

याद रहे यह वही शहर कूफ़ा है जहां अभी चन्द ही दिन पहले हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ि अल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा थे।

मक़ामे ग़ौर है कि जिस दरबार का अभी–अभी बाप ख़लीफ़ा था और यही बेटियां शहज़ादियां थीं आज उसी दरबार में शहज़ादियां

बहैसियत मुज्रिम हैं। हाथ व पैर बंधे हुए हैं। ज़रा सन्जीदगी से ग़ौर करो कि उनके दिल पर क्या गुज़री होगी, क़ाफ़िला चलता रहा तमाशाई तमाशा देखते रहे।

मज्मा इतना ज़्यादा हो गया कि कूफ़ा के गली कूचों में तिल रखने की जगह बाक़ी न रह गई थी। इतने में हज़रत सकीना को प्यास से न रहा गया, उसी मकान की छत पर बैठी हुई एक औरत से पानी मांगा औरत ने पानी तो भेजवा दिया लेकिन उस औरत ने कहा कि मेरी भी कुछ हाजत है, पानी पी कर मेरी हाजत पूरी कर देना। इतना सुनना था कि हज़रत सय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने फरमाया कि बेटी पानी बाद में पीना पहले उस औरत की हाजत पूरी कर दो, पूछो क्या चाहती है। उस छत पे बैठी हुई औरत ने कहा : बेटी अल्लाह से दुआ कर दे कि मेरे बच्चे तेरी तरह यतीम न हों और हमें मेरे आक़ा हुसैन और शहज़ादी ज़ैनब (रज़ि अल्लाहु अन्हुम) की ज़्यारत नसीब हो। इतना सुनना था सैय्यदा ज़ैनब तड़प गईं और चेहरे से बालों को हटाया और फरमाया कि ऐ औरत जिस शहज़ादी के लिए तुमने कहा है वह ज़ैनब मैं हूं और वह आगे वाले नेज़ह पर मेरे भाई इमाम हुसैन का सर है। यह सुनना था कि उस औरत ने एक चीख़ मारी और बेहोश हो कर गिर पड़ी।

क़ाफ़िला इब्ने ज़्याद के दरबार में

असीराने हरम का यह क़ाफ़िला इब्ने ज़्याद के दरबार में पेश किया गया। इमाम आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु अन्हु का सरे मुबारक इब्ने ज़्याद के सामने एक तश्त में रखा गया। इब्ने ज़्याद के हाथ में एक छड़ी थी जिस से वह आपके लबहाए मुबारक पर बेअदबी करते हुए छड़ी मारने लगा और चाहा कि दन्दाने मुबारक को शहीद कर दे मशहूर सहाबी–ए–रसूल हज़रत अरक़म दरबार में मौजूद थे इब्ने ज़्याद की इस गुस्ताख़ाना हरकत को देख कर चीख़ पड़े और फरमाया "अरे ख़बीस इब्ने मरजाना अपनी नापाक छड़ी को लबहाए मुक़द्दस से फौरन हटा ले। रब्बे काबा की क़सम! मैंने बारहा उन पाक लबों को सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चूमते हुए देखा है।" यह सुन कर इब्ने ज़्याद गुस्से से पागल हो गया और कहा मुझे तुम्हारी ज़ईफ़ी देख कर रहम आता है वरना अभी तुम्हारी गर्दन मार देता। हज़रत ज़ैद इब्ने अरक़म रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि ऐ मरदूद तुझे जब आले रसूल पर रहम न आया तो मुझ पर क्या रहम आएगा और यह कहते हुए उठ कर वहां से चले गये कि ऐ अह्ले अरब आज से तुम सब गुलाम हो गये, तुमने फ़रज़न्दे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को क़त्ल किया और इब्ने मरजाना को अपना हाकिम बना लिया, उस पर ख़ुदा की मार हो। उसके बाद ही फौरन इब्ने ज़्याद की तरफ़ ऐलान हुआ कि सारे अह्ले शहर जामा मस्जिद में जमा हो जाएं। जब सारे लोग जमा हो गये, तो इब्ने ज़्याद ने मिंबर पर खड़े हो कर कहा अल्लाह का शुक्र है जिसने अमीरुल–मुमिनीन यज़ीदी बिन मुआविया (मआ़ज़ल्लाह) और उनके साथियों को कामयाबी अता फरमाई और मआ़ज़ल्लाह कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब हुसैन बिन अली और उनके गरोह को शिकस्त दी और उनको हलाक किया इतना सुनना था कि शेरे ख़ुदा की बेटी हज़रत सैय्यदा ज़ैनब को जलाल आ गया और आपने दरबारे ज़्याद में ऐसा तारीख़ साज़ ख़ुतबा दिया कि कूफ़े के दरो दीवार हिलने लगे, ऐसा लग रहा था कि जैसे क़यामत आ गई हो। आपका ख़ुतबा सुन कर तमाम कूफ़ी रोने लगे।

कूफ़े में हज़रत सैय्यदा ज़ैनब का ख़ुतबा

बअ़्द हम्द व सलात आपने इरशाद फरमाया ऐ कूफ़े वालो! ऐ अह्ले मक्र व दग़ा तुम रो रहे हो। ख़ुदा करे तुम्हारे आंसू कभी ख़ुश्क न हों और तुम्हारे नाला व फ़रियाद की सदा हमेशा बुलन्द रहे। तुम्हारी मिसाल उस औरत की सी है जिसने सूत काटने के बाद अपने काटे हुए सूत को रेज़ह–रेज़ह कर दिया हो। तुमने भी ईमान की क़समें खाईं और उसे ग़ारत कर दिया। कौन नहीं जानता कि तुम्हारे ईमान की बुनियाद ही मक्र व फ़रेब थी। वह कौन सी बुरी ख़स्लत है जो तुममें न हो। रो रहे हो बख़ुदा तुम्हें ज़्यादा से ज़्यादा रोना चाहिए और कम अज़ कम हंसना।

भला ख़ातमुल–अंबिया के पार–ए–जिगर मअ़्दने रिसालत मीनारे हिदायत सैय्यद शबाबे अह्ले जन्नत को क़त्ल करने के बाद तुम कैसे इस लानत से पीछा छुड़ा सकते हो।

आगाह हो जाओ तुमने अपने नफ़्स की ग़ुलामी के बाइस अल्लाह की नाराज़गी मोल ले ली है। अब तुम हमेशा अज़ाबे आख़िरत में मुब्तला रहोगे। क्या तुम जानते हो कि तुमने किस का ख़ून बहाया है? किन मख़्दूमाते इस्मत के सरों से चादरें छीन कर उन्हें रसन बस्ता करके तशहीर किया है। तुम ऐसे अमल के मुर्तकिब हुए हो जिसकी वजह से कहीं ऐसा न हो कि आसमान टूट पड़े, ज़मीन धंस जाए और पहाड़ अपनी जगह छोड़ दे।

आपने फ़रमाया ऐ मक्कारो! तुम्हारा रोना तुम्हारे दामन को साफ़ नहीं कर सकेगा और जो तुमने नवास–ए–रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत सैय्यदना इमाम आली मक़ाम को क़त्ल किया है उसके ख़ून के दाग़ कैसे धो सकोगे? कूफ़ियो! तुम्हें मालूम है कि तुमने किसके जिगर गोशे को टुक्ड़े–टुक्ड़े किया है। कौन से अहद को तोड़ा है,

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की किस बेटी की बेहुर्मती की है। यह तुम्हारा वह जुर्म है जिसकी तलाफ़ी कभी नहीं हो सकती। तुम दुनिया में भी रुसवा रहोगे और आख़िरत में तो तुम्हें ज़लील व ख़्वार और रुस्वा होना ही पड़ेगा।

दुनिया की दौलत के लालच में यज़ीद के हाथों फरोख़्त होने वालो! तुमने ख़ुद अपने हाथों से शमअ़ मुस्तफ़ाई को गुल कर दिया है। जिसका कोई मदावा नहीं हो सकता। अनक़रीब तुम पर ख़ुदा के क़हर व ग़ज़ब का अज़ाब नाज़िल होने वाला है।

जनाब ज़ैनब की इस इंके़लाबी तक़रीर ने कूफ़े वालों के दिल व दिमाग़ को झिंझोड़ कर रख दिया। हर शख़्स अपने ज़मीर की अदालत में अपने आपको मुज्रिम नज़र आने लगा। आंसुओं का सैलाब उमंड आया। जनाब ज़ैनब की इस ज़बरदस्त मुअस्सिर तक़रीर ने कूफ़ियों को अपने आपसे इतना शर्मिंदा कर दिया कि वह जिस तमाश बीनी और तफ़रीह के ख़्याल से जमा हुए थे वह सब उनके दिमाग़ों से हवा हो गया।

नाला व शुयून की आवाज़ें बुलन्द होने लगीं। जनाब ज़ैनब ने न सिर्फ़ अह्ले कूफ़ा को ख़िताब किया और क़त्ले हुसैन पर उनकी लानत व मलामत की बल्कि इब्ने ज़्याद के दारुल–अमान में निहायत बेबाकी के साथ ऐसा ख़िताब किया कि इब्ने ज़्याद की बोलती बन्द हो गई।

इब्ने ज़्याद ने जनाब ज़ैनब की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ी करना चाही तो मुतवज्जेह हुआ और कहा ख़ुदा का शुक्र कि उसने तुमको (मआज़ल्लाह) रुस्वा किया, तुम्हारे मर्दों को क़त्ल किया और तुम्हारे वही व पैग़ाम को झुठला दिया।

जनाब ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने इब्ने ज़्याद को लल्कारते हुए इरशाद फरमाया तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिसने हमें

अपने नबी के ज़रीए बुज़ुर्गी अता की और हम को हर रिज्स से दूर रखा। ऐ इब्ने मरजाना तू झूठा है। मैंने ख़ैर के अलावा कुछ नहीं देखा यह वह लोग हैं जिनके लिए अल्लाह ने शहादत लिख दी थी। अन क़रीब अल्लाह तुम्हें और उन लोगों को जमा करेगा और फिर उसकी बारगाह में तुम लोगों का फ़ैसला होगा।

तब इब्ने मरजाना देखना कि हक़ और कामयाबी किसके साथ है इमाम की शहादत के बाद इस्लाम का सारा बोझ हज़रत सैय्यदा ज़ैनब के कन्धे पर आ गया था इसलिए आपने अपने ख़ुतबात और बयानात के ज़रीए यज़ीदियों के मक्र व फरेब के नक़ाब को नोच कर फेंक दिया। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब का लेहजा बिल्कुल मौला अली जैसा था। इसी महफ़िल में एक सहाबीए रसूल जो मुहिब्ब अह्ले बैत थे जिन का नाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन अफ़ीफ़ था जो दोनों आंखों से नाबीना थे जब हज़रत सैय्यदा ज़ैनब का ख़ुतबा सुना तो चिल्ला कर बोले कि ऐ लोगो! यह तो अली बोल रहे हैं। मुझे क़ाफ़िले के सरदार के पास ले चलो। चुनांचे वह हज़रत सैय्यदा ज़ैनब के क़रीब पहुंचे और जब तमाम वाक़ेआते करबला मालूम हुआ तो अपनी बच्ची से इरशाद फ़रमाया कि ऐ मेरी बच्ची फौरन घर जा और मेरी वह तल्वार ले आ, जिस से मैंने कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन के छक्के छुड़ा दिए थे। बच्ची फौरन घर गई और तल्वार ले आई और उन्होंने बड़ी बहादुरी से लड़ कर काफी तादाद में कूफ़ियों को नारे जहन्नम में पहुंचा दिया और लड़ते–लड़ते ख़ुद भी शहीद हो गये।

(तारीख़ तबरी, स. 284)

कूफ़ा का क़ैदख़ाना

इब्ने ज़्याद के हुक्म से अह्ले हरम को कूफ़ा के ऐसे तारीक क़ैद ख़ाना में रखा गया जो ज़मीन दोज़ था। अन्धेरे की घुटन और ज़ख़्मों की बेइंतिहा तक्लीफ़ और यतीम बच्चों के कराहने की मुसलसल आवाज़ें तक़रीबन चौंतीस दिन क़ैदख़ाने में रहने के बाद 18 सफर को अह्ले हरम का यह क़ाफ़िला शाम की रवानगी के लिए क़ैदख़ाना से निकाला गया तो हालत यह हो गई थी कि सिर्फ़ हड्डियों के ढांचे रह गये थे। चेहरे पीले पड़ गये थे, लिबास बेहद बोसीदा हो गये थे। हद यह कि उन में से किसी की सूरत पहचानी न जाती थी। इतने में यज़ीद का हुक्म नामा पहुंचा कि उस क़ाफ़िले को फौरन शाम रवाना कर दो। हुक्म पाते ही यह अह्ले हरम का क़ाफ़िला शाम की तरफ़ रवाना कर दिया गया।

तारीख़े तबरी में है कि इब्ने ज़्याद ने शुहदाए किराम के सरों को और असीराने अह्ले बैत को, ज़हर बिन क़ैस, अबू बुर्दा बिन औफ़ अज़री और तारिक़ बिन अबू ज़िबयान अज़री के हमराह शिम्र की सरकरदगी में यज़ीद पलीद के पास दमिश्क़ इस हालत में रवाना किया कि हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु के हाथ पांव को ज़ंजीरों में जकड़ दिया गया था। (सआदतुल–कौनैन, स. 33) और बीवियों को ऊंटों की नंगी पीठ पर बिठाया गया था और फिर इब्ने ज़्याद ने हुक्म दिया कि सरों को नेज़ों पर चढ़ाए हुए आबादियों से गुज़रना ताकि लोगों को इससे इबरत हो और आइन्दा कोई भी यज़ीद की मुख़ालिफ़त पर आमादा न हो। असीराने हरम का यह नूरानी क़ाफ़िला शाम की तरफ़ रवाना हुआ। जिन में से चन्द शहर क़ाबिले ज़िक्र हैं :

करबला कूफ़ा, मूसल, सैसूर, क़नसरीन, हमात, हमस, मअ्मूरा, दमिश्क़

सफर शाम

पहली मंज़िल

झूठी बैअ़त के गले में तौक़े लानत डाल कर

ले गये आबिद अमीर शाम के दरबार तक

सैय्यद सज्जाद नंगे पैर ऊंटों की महार पकड़े चल रहे हैं दिन भर के सफर के बाद शाम को जब यज़ीदी अपनी पहली मंज़िल पर ठहरे तो अह्ले बैते अत्हार से छीना हुआ एक ऊंट ज़िबह किया लेकिन जब खाने बैठे तो सारा गोश्त ख़ून बन गया और उस से आग के भड़कते हुए शोअ्ले निकलने लगे, नाचार रात गुज़ारी और सुबह फिर सफर को कूच किया।

दूसरी मंज़िल :

यज़ीदी जब दूसरी मंज़िल पर पहुंचे तो सामने एक गिरजा नज़र आया ज़ालिमों ने नेज़ों को गिरजा की दीवार से खड़ा कर दिया। अचानक गिर्जे की दीवार शक़ हुई और उस से एक हाथ नुमूदार हुआ जिसमें लोहे का क़लम था। उस हाथ ने लोहे के क़लम को शुहदा के टपकते हुए ख़ून में डिबो कर गिर्जे की दीवार पर यह शेअ्र लिखा :

किया है जिन्होंने क़त्ल प्यारे हुसैन को। उन्हें क्या उम्मीदे शफ़ाअत है उनके नाना से। उसको देखते ही यज़ीदी बौखला गये यज़ीदियों के होश उड़ गये।

यहां से घबरा कर यज़ीदियों ने सफर को आगे बढ़ाया। आगे एक और गिरजा नज़र आया यही शेअ्र वहां की दीवार पर पहले ही से लिखा हुआ नज़र आया। यज़ीदियों ने वहां के फादर से जा कर पूछा

कि गिर्जे की दीवार पर यह शेअ्र किस ने लिखा है और कब लिखा है? पादरी ने जवाब दिया कि यह उस ज़माने का लिखा हुआ नहीं है बल्कि मैं अपने बाप, दादा, परदादा से सुनता चला आया हूं कि यह शेअ्र नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से पांच सौ साल पहले उस गिर्जे की दीवार पर लिखा हुआ पाया। और उस वक़्त से लेकर आज तक वैसा ही मौजूद है। पादरी ने पूछा लेकिन तुम लोग कौन हो और इस शेअ्र के मुतअल्लिक़ क्यों दरयाफ़्त कर रहे हो? पादरी ने शुहदाए किराम के सरों के मुतअल्लिक़ पूछा कि यह किन लोगों के सर हैं जिन्हें तुमने नेज़ों पर चढ़ा रखा है?

यज़ीदियों ने जवाब दिया कि यह सर अमीरुल–मुमिनीन यज़ीद के बाग़ियों के सर हैं। (मआ़ज़ल्लाह)।

पादरी ने बग़ौर देखा तो उसकी निगाह इमाम आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु अन्हु के सरे मुबारक पर पड़ी तो इमाम पाक के चेहर–ए–अनवर पर निगाह जमी की जमी रह गई। उसने बेताबाना पूछा यह किस का सर है। यज़ीदियों ने जवाब दिया कि यह सर हुसैन इब्ने अली का है। पादरी ने कहा कि वह अली जो तुम्हारे नबी के दामाद हैं। यज़ीदियों ने कहा हां।

पादरी ने कहा अरे ज़ालिमो! साफ़ क्यों नहीं कहते कि यह तुम्हारे नबी मुहतरम के नवासे का सर है। अरे ज़ालिमो! क्या तुम कभी अपने जुर्म को छुपा सकोगे। याद रखो मुन्तक़िम हक़ीक़ी का इंतिक़ाम बहुत सख़्त है।

पादरी ने कहा कि यह सर मुबारक दस हज़ार दिरहम के एवज़ रात भर के लिए मुझे दे दो सुबह वापस ले लेना।

पादरी का मुसलमान होना

यज़ीदी कुत्ते दस हज़ार दिरहम हम को ठुकरा न सके और ठुकराते भी कैसे जबकि इसी दुनियावी माल व ज़र की लालच में अपने दीन और आक़िबत को तबाह कर चुके थे फौरन राज़ी हो गये। और रात भर के लिए इमाम आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु अन्हु का सरे अक़्दस उस पादरी के हवाले कर दिया। पाद्री ने इमाम पाक के सरे मुबारक को लेकर गुलाब व केवड़े से धोया और एक सन्दल की चौकी मुश्क व अंबर से मुअत्तर कर के मख़्मली ग़िलाफ़ चढ़ा कर सरे मुबारक को रख दिया।

और रात भर मुअद्दबाना हाथ बांधे खड़ा रहा। और यह पुरकैफ़ मन्ज़र देख रहा था कि सरे अक़्दस से एक नूर निकल कर आसमान की जानिब बुलन्द हुआ।

जिस से ज़मीन व आसमान और सारी फ़िज़ा मुनव्वर हो गई। सुबह तक अनवार व तजल्लियात का मुशाहिदा करता रहा। इस मन्ज़र को देख कर बेसाख़्ता पुकार उठा कि ऐ इब्ने रसूल आप मरे नहीं बल्कि ज़िन्दा हैं। और पुकार उठा :

अशहदु अन ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह।

शहरे मअ्मूरा

असीराने हरम का यह नूरानी क़ाफ़िला आगे की तरफ़ रवाना हुआ। चलते-चलते जब यह क़ाफ़िला शहर मअ्मूरा के क़रीब पहुंचा तो एक अजीब व ग़रीब वाक़या रूनुमा हुआ।

शहरे मअ्मूरा का हाकिम एक यहूदी अज़ीज़ बिन हारून था वह रात में जब सोया तो उसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़्यारत नसीब हुई। अज़ीज़ ने देखा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मग़मूम हैं। अज़ीज़ ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर की तबीअ़त मग़मूम क्यों है।

आपने फ़रमाया अज़ीज़! महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवासे शहीद कर दिए गये हैं। उनका सरे मुबारक सुबह तेरे शहरे मन्नूरा के करीब से गुज़रेगा।

इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की आज़ाद करदह ख़ादिमा शीरीन तेरे दरवाज़े पर आएगी तुझे चाहिए कि उनकी ख़िदमत करे और सरे हुसैन को मेरा सलाम पहुंचाए। अज़ीज़ ने अर्ज़ किया कि क्या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि वह तो अंबिया के भी रसूल हैं। उन पर ईमान लाने का अल्लाह ने हम से वादा लिया है। वह जो उनको तस्लीम नहीं करता वह जहन्नम में जाएगा। इधर वह मुक़द्दस क़ाफ़िला जब करीब मन्नूरा पहुंचा तो एक पहाड़ी के दामन में रुका। तो शीरीं ने हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा से अर्ज़ किया कि हुज़ूर हमारे पास कुछ ज़ेवर है। अगर आप इजाज़त दें तो फ़रोख़्त करके आपके लिए कुछ कपड़े ले आऊं।

अह्ले हरम ने उसके काफ़ी असरार पर इजाज़त दे दी जब शीरीं शहर के दरवाज़े पर पहुंची तो दरवाज़ा बन्द था। शीरीं ने दस्तक दी तो उस वक़्त अज़ीज़ दरवाज़े पर पहुंच चुका था। उसने कहा शीरीं ठहरो दरवाज़ा खोलता हूं यह सुन कर शीरीं हैरान रह गई कि यह आदमी मेरा नाम कैसे जानता है। पूछने पर ख़्वाब का सारा वाक़या बयान किया और काफी सामान और कपड़े लेकर हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सरे इमाम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का सलाम पहुंचाया। सरे मुबारक से फ़ौरन सलाम का जवाब आया यह देख कर अज़ीज़ फ़ौरन मुसलमान हो गया। हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन ने चाहा कि शीरीं का निकाह अज़ीज़ से कर दिया जाए। मगर शीरीं ने अर्ज़ किया कि मौला मैं अह्ले हरम की जुदाई पसन्द नहीं करती। मुझे इन मसाइब व मुश्किलात में भी आराम है। शीरीं हज़रत शहर बानो की लौंडी थी। हज़रत शहर बानो के कहने से शीरीं ने तस्लीम कर लिया और शीरीं का निकाह अज़ीज़ के साथ हो गया।

असीराने हरम का क़ाफ़िला आगे रवाना हुआ। इख़्तिलाफ़ी रिवायात से क़तअ् नज़र यज़ीदी लश्कर ने कूफ़ा से दमिश्क़ तक उन्नीस मंज़िलें तय कीं। तवालत होगी अगर हम हर–हर मंज़िल लिखने की कोशिश करेंगे इसलिए कि हर मंज़िल की ख़ुसूसियात तक़रीबन यक्सां थी। आठ सौ मील का सफर तय किया अस्सी शहरों में फिराया गया। अट्ठाइस दिन के सफर के बाद असीराने हरम का यह क़ाफ़िला कूफ़ा से दमिश्क़ पहुंचा।

दर बदरी, बरहना सरी, असीरी, हुजूमे आम और इज़्देहाम हर मंज़िल पर, हर शहर में बस यही माहौल था। ज़ालिम जमाअत हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा को एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल तक कुशां–कुशां लिए फिरती थी। करबला से दमिश्क़ तक कोई क़रीब या आसान सफर न था। ख़राब व ख़स्ता ऊंट जिस पर मुहमल न था। अरब की रेत और धूप व ग़िज़ा की क़िल्लत और दिक़्क़त और बच्चों का भी साथ–साथ रहना।

सैय्यद सज्जाद की खतरनाक़ अलालत और कमज़ोरी, दिल चाहे तो इमाम हुसैन के मदीना से लेकर करबला तक के सफर का सैय्यदा ज़ैनब के करबला से दमिश्क़ तक के सफर का मुक़ाबला करो।

उस सफर में हज़रत ज़ैनब के साथ सब थे और इस सफर में कोई भी न था। उस सफर में ज़ैनब की अम्मारी पर पर्दा था और इस सफर में उनके सर पर चादर भी न थी। उस सफर में हज़रत इमाम हुसैन थे और इस सफर में उनका सर नोके नेज़ा पर था। उस सफर में हज़रत ज़ैनब आज़ाद थीं और इस सफर में असीर मगर हज़रत सैय्यदा ज़ैनब के क़दम ऐसे सख़्त सफर में किसी मंज़िल पे न कांपे और न थर्राए। सफर की इल्लत पर ग़ौर करो तो और हैरत होगी। इस तवील सफर को हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने किन जज़्बात से तय किया क़दम–क़दम पर ख़िल्क़त का हुजूम और तमाशाइयों का इज़्देहाम। एक शरीफ़ और साहबे इस्मत व इफ़्फ़त के हालात में कैसा हीजान और तमूज पैदा करता होगा।

भाईयों, बेटियों और भतीजों के सरों को नोके नेज़ह पर देख कर हज़रत सैय्यदा ज़ैनब को कितना तड़पाया होगा। चलते–चलते यह

मज़्लूमों का क़ाफ़िला जब दमिश्क़ के क़रीब पहुंचा दमिश्क़ के बाहर ला कर उन मज़्लूमों को रोक दिया गया। यह लोग छत्तीस घन्टा दमिश्क़ के बाहर खड़े रहे। तमाम शहर दमिश्क़ को आरास्ता व पैरास्ता किया गया, तमाम गली व कूचे सजाए गये। ख़ुसूसन यज़ीद का महल ऐसा सजा दिया गया कि देखने वालों की निगाहें ख़ैरह किए देती थीं। और शाहराहे आम जो दरबारे यज़ीद तक आता था उस पर सात सौ कुर्सियां लगा दी गई थीं। जिस पर हुकूमत के बड़े–बड़े तमाशाई बैठे हुए थे। यज़ीद अपने तख़्त पर बैठा हुए शराब पी रहा था। ऐसा मालूम होता था जैसे शामियों की ईद है। अब अह्ले हरम को यज़ीद के दरबार की तरफ़ लाया जा रहा था। आगे–आगे शुहदाए किराम के सर नोके नेज़ह पर हैं। और उनके पीछे सैय्यद सज्जाद एक क़ैदी के मानिन्द चल रहे हैं और उनके पीछे शहज़ादियां ऊंटों की नंगी पीठ पर बैठी हुई हैं। यह क़ाफ़िला उसी रास्ते से लाया जा रहा था जिस पर तमाशाई बैठे हुए थे। एक मुनादी आगे–आगे निदा दे रहा था कि यही अली व फातिमा की बेटियां हैं जिनको तमाशा देखना हो वह आकर देख ले।

बेटियां तेरे पयम्बर की हैं इस्लाम बता
बेरिदा शाम के बाज़ार में जाएं कैसे

हाए अफ़सोस मुश्किल कुशा शेरे ख़ुदा की बहू बेटियां इस्मत व इफ़्फ़त की जीती जागती तस्वीरें, शर्म व हया की चादरों में लिपटी हुई बरहना सर करके फिराई जा रही थीं।

असीराने हरम को बाज़ारे दमिश्क़ में गश्त कराया गया। बेशुमार तमाशाई तमाशा देख रहे थे। एक ख़ातून जिसका नाम हमीदा था वह और उसका बेटा सअ्द और उसकी ख़ादिमा रमीसा तमाशा देखने घर से बाहर आए और जब उन्हें करबला के असल वाक़या का पता चला तो रोते हुए घर वापस गये। तो लोगों ने उन से पूछा कि तुम लोग क्यों रो रहे हो तो उन लोगों ने कहा कि मैं क्यों न रोऊं मैंने अपनी आंखों से सैय्यदा ख़ातूने जन्नत की शहज़ादियों की ऊंटों की नंगी पीठ पर बंधा हुआ देखा है। इतना कह कर वह लोग बेहोश हो गये, उनकी

नज़र हज़रत सैय्यदा ज़ैनब पर पड़ी तो हमीदा ज़मीन पर गिर पड़ी और रो-रो कर कहने लगी ऐ मेरी शहज़ादी काश मैं अन्धी होती और आपको इस हालत में न देखती आपके भाई कहां चले गये।

आपके इस बेबसी के आलम में शाम में लाया गया है। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने फरमाया उस नेज़े की तरफ़ देख उस नेज़े पर सरे हुसैन है। जब हमीदा ने सरे इमाम देखा तो एक दम चीख़ मार कर गिर पड़ी और बेहोश हो गई। फिर उस का बेटा सअ्द और ख़ादिमा भी चीख़ मार कर गिर पड़े और तीनों इमाम पाक की मुहब्बत में जां बहक़ हो गये।

बनी उमैया ने अपने मक्र व फ़्रेब के हथकन्डों से काम लेकर इस बात का प्रोपेगन्डा कर रखा था कि हुकूमत के कुछ बाग़ियों ने हुकूमत के ख़िलाफ़ ख़ुरूज किया, रास्तों में मुसाफ़िरों को लूटा मारा जिनकी सरकूबी के लिए यज़ीद ने फौज भेजी और उन्हें गिरिफ़्त करने में यज़ीद कामयाब रहा, बाग़ियों को हलाक कर दिया गया और उनके अयाल को क़ैदी बना लिया गया वह लोग अनक़रीब शाम पहुंचने वाले हैं।

उन क़ैदियों का तमाशा देखने के लिए तमाम शामी औरतें, बच्चे और बूढ़े निकल पड़े। आख़िर कार ग़म का मारा यह क़ाफ़िला दमिश्क़ के क़रीब पहुंच गया।

उन्हें बाबुस्साआत पर रोक कर सबसे पहले एक खण्डर में ठहराया गया। तमाशाइखें की भीड़ लगी हुई थी, उनको रस्सियों में जकड़ा गया था और जानवरों के ग़ौल की तरह यक्जा कर दिया गया था। अगर कोई ठोकर लगने से ठहरता तो उसे ताज़ियाने मारे जाते। लोगों के अह्ले बैत के मुतअल्लिक़ कुछ पता न था सिवाए उसके कि यह बाग़ी हैं। इसी लिए लोगों ने अह्ले बैत का इस्तिक़्बाल बहुत ही एहानत आमेज़ और अज़ीयतनाक पैराए में किया। उस वक़्त का एक मंज़र हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबेदीन और एक बूढ़े शामी की गुफ़्तगू से अन्दाज़ा कीजिए।

हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन और एक बूढ़े शामी की गुफ़्तगू

एक बूढ़ा शामी हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु के पास आया और बेअदबाना अन्दाज़ में गुफ़्तगू की और सख़्त व सुस्त जुमले कहे। वह बूढ़ा हक़ीक़ते हाल से बिल्कुल बेख़बर था।

उस बूढ़े ने हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु से कहा कि तुम कौन हो। हज़रत ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि ऐ शैख़ तुमने कुरआन पढ़ा है।

उसने कहा : तुम्हें कुरआन से क्या मतलब ?

इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने कहा : मैं तुमसे पूछता हूं कि तुमने यह आयत पढ़ी है :

इमाम ने कहा बताओ वह कुर्बा कौन हैं।

बूढ़े ने कहा : वह आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

इमाम ने फरमाया ख़ुदा की क़सम हम वही आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

जब इतना सुना तो वह बूढ़ा बदहवास हो गया। उसने ग़ौर से इमाम ज़ैनुल–आबेदीन की शक्ल देखी और पूछा ख़ुदा की क़सम क्या आप ही लोग आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

इमाम ने फरमाया : हां हम ही आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

उस बूढ़े ने इमाम से रो–रो कर मआफ़ी मांगी और कहा : बख़ुदा हमें उसका इल्म न था। हम को तो कुछ और बताया गया था।

क़ाफ़िला आगे बढ़ा, लोगों का हुजूम बढ़ता जा रहा था। इब्ने असाकिर ने निहाल बिन अमर से रिवायत की है। वह कहते हैं वल्लाह मैंने बचश्म ख़ुद देखा कि जब सरे मुबारक इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु

अन्हु को यज़ीदी नेज़े पर लिए जा रहे थे उस वक़्त मैं दमिश्क़ में था सरे मुबारक के सामने एक शख़्स सूरः कहफ़ की तिलावत कर रहा था जब वह इस आयत पर पहुंचा।

अस्हाबे कहफ़ और अस्हाबे रक़ीम हमारी निशानियों में से थे। उस वक़्त सरे इमाम पाक ने फसीह ज़बान में इरशाद फरमाया :

असहाबे कहफ़ के वाक़ए से मेरा क़त्ल और मेरे सर को लिए फिरना अजीब तर है।

असीराने हरम और दरबारे यज़ीद

असीराने हरम तमाम कूचा व बाज़ार में गश्त कराते हुए दरबारे यज़ीद में लाए गये। दरबार को रंग बिरंग झण्डों से सजा दिया गया था। बहुत से लोग यज़ीद को मुबारकबाद देने के लिए दरबार में हाज़िर हुए थे। यज़ीद ख़ुशी से फूले नहीं समाता था। अपने ख़्याल में उसे बड़ी जीत हुई थी। और अब सलतनत के राह की तमाम रुकावटें ख़त्म हो गई थीं।

अह्ले बैत दरबारे यज़ीद में पहुंचे सरहाए शुहदा पहले ही आ चुके थे इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का सर यज़ीद के सामने रखा गया। अह्ले बैत दरबार के एक हिस्से में खड़े किए गये जो क़ैदियों के लिए मख़्सूस था। यज़ीद की नज़रें अह्ले बैत पर थीं ख़ुशी से फूले नहीं समाता था कि हमने आज अपने बाप दादा का बदला ले लिया है। दरबार में सन्नाटा था हर शख़्स यह सोच रहा था कि असल मुआमला क्या है किसी को पता नहीं था कि यह लोग किस क़ौम व क़बीला के हैं सब लोग यही समझते थे कि उन लोगों ने हुकूमत के ख़िलाफ़ खुरूज किया था या यह कि यह लोग चोर और डाकू थे जैसा कि हुकूमत के कारिन्दों ने मशहूर कर रखा था। हज़रत ज़ैनब ने अपनी तक़रीर से लोगों की आंखों से पर्दे हटा दिए।

उस वक़्त यज़ीद शराब पी कर मस्त हाथी की तरह झूम रहा था, असीराने हरम दरबारे यज़ीद में रसन बस्ता खड़े हैं, सारे लोगों के जिस्म आगे की तरफ़ झुके हुए थे। यज़ीद ने झुकने का सबब पूछा तो हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने जवाब दिया रस्सी एक है और गले चौदह हैं। उन क़ैदियों में सबसे कम्सिन सकीना है। हम लोग जब सीधे खड़े होते हैं तो उस बच्ची के छोटे–छोटे क़दम होने की वजह से रस्सी में लटक जाती है और उसका दुम घुटने लगता है, यज़ीद यह सुन कर हंस पड़ा। और सर इमाम को एक तश्त में रखने का हुक्म दिया। इमाम आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु अन्हु का सरे अनवर एक तश्त में रखा गया। यज़ीद के हाथ में एक छड़ी थी जिस से लबहाए इमाम आली मक़ाम के साथ बेअदबी करने लगा। यज़ीद की इस हरकत से तमाम लोग कांप उठे।

अल्लामा शैख़ मुहम्मद बिन अलस्सबान अलैहिर्रहमा फरमाते हैं :

तरजमा : पस इब्ने ज़ियाद ने हज़रत इमाम के सरे अनवर को मआ़ उनके अह्ले बैत के जिन में हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन और उनकी फूफ़ी हज़रत ज़ैनब भी थीं। यज़ीद के पास भेजा तो वह यज़ीद बहुत ज़्यादा ख़ुश हुआ और उसने उन क़ैदियों के मक़ाम पर खड़ा किया। और उनकी तौहीन की और लकड़ी की छड़ी से सरे अनवर को उलट पलट करता और मारता था और कहता था ऐ हुसैन तूने अपनी बग़ावत का अंजाम देख लिया और उसने ख़ुश व फ़रहत में मुबालेग़ा किया फिर वह नादिम हुआ। इस वजह से कि उसके इस फ़ेअ़्ल पर मुसलमान उस से बुग्ज़ रखेंगे और मख़्लूक़ उस से नफ़रत करेगी।

यहूदी आलिम

दरबारे यज़ीद में एक यहूदी आलिम बैठा हुआ था उसने यज़ीद से पूछा कि ऐ यज़ीद यह किस नौजवान का सर है? यज़ीद ने कहा हुसैन इब्ने अली का। आलिम ने उनकी मां का नाम क्या है? यज़ीदने कहा फातिमा बिन्ते मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)। आलिम ने कहा ऐ यज़ीद तूने बहुत बुरा काम किया है। तुमने हुर्मते रसूल ख़त्म कर दी।

मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूं कि अगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का बेटा आ जाए तो हम उसकी पूजा करेंगे। ओ नाबकार यज़ीद अभी तेरे पैग़म्बर को दुनिया से रुख़्सत हुए चन्द ही दिन हुए हैं और तूने यह हरकत कर डाली। तू कितना बड़ा ज़लील है। यज़ीद बौखला उठा और जल्लाद को हुक्म दिया कि उसकी गर्दन मार दी जाए। आलिम अपनी जगह से उठा और कहने लगा तुम मुझे क़त्ल करना चाहते हो। मैंने तौरेत में पढ़ा है कि जिस शख़्स ने भी ज़ुर्रियते रसूल को क़त्ल किया वह रहमते ख़ुदावन्दी से महरूम हो गया। और जो शख़्स भी आले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ून बहाएगा सीधा जहन्नम रसीद होगा। (जिल्दुल–उयून)

क़ैसरे रूम का सफीर

सरे अनवर यज़ीद के दरबार में रखा हुआ था। इतने में क़ैसरे रूम का सफीर राशिद जालूत उसके दरबार में दाख़िल हुआ। यह हालत देख कर उसने यज़ीद से पूछा कि ऐ यज़ीद यह किस का सर है?

यज़ीद गुस्ताख़ाना अन्दाज़ में कहता है कि यह एक ख़ार्जी का सर है जिसने हमारे ख़िलाफ़ ख़ुरूज किया था। सफीर ने पूछा यह कौन हैं? यज़ीद ने कहा यह सर हुसैन इब्ने अली का है।

सफीर ने पूछा कि उनकी मां का क्या नाम है। यज़ीद ने कहा फातिमा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) सफीर ने कहा वही फातिमा जो तेरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शहज़ादी हैं। यज़ीद ने कहा हां। सफीर ने कहा ऐ यज़ीद तुझ पर तुफ़ है। मैं हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की तैंतालीसवीं पुश्त में हूं।

लेकिन जब मैं चलता हूं तो यहूद व नसारा मेरे पैर की ख़ाक को तबर्रुक समझ कर अपनी–अपनी आंखों से लगाते हैं। मगर अभी तेरे रसूल और उनमें पुश्त भी नहीं गुज़री कि तूने उन्हें क़त्ल कर दिया ख़ुदा तेरे उमूर में कभी बरकत न अता फरमाए और तुझे और तेरे दीन को

नीस्त व नाबूद फरमाए। इतना कह कर सफीर उठा और सरे इमाम के सामने आकर पुकार उठा : अश्हदु अन ला इलाहा इल्ललल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कलिमा पढ़ कर मुशर्रफ़ बाइस्लाम हो गया। उसी मज्लिस में सहाबीए रसूल हज़रत समरा बिन जुन्दुब रज़ि अल्लाहु अन्हु भी मौजूद थे। यज़ीद की इस नापाक हकरत देख कर तड़प गये और यज़ीद को डांटा कि ऐ यज़ीद तुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब हो। तो उन लबों की तौहीन कर रहा है। जिन्हें सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बार–बार चूमा है।

यज़ीद झुंझला कर बोला कि अगर तुम सहाबीए रसूल न होते तो मैं अभी तुम्हें क़त्ल करा देता। आपने फरमाया ओ कमीने मेरीं सहाबियत का इतना ख़्याल और इमाम आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु अन्हु की अशरफ़ीयत का ज़र्रह बराबर ख़्याल नहीं। यज़ीद ने उन्हें अपने दरबार से बाहर निकलवा दिया।

जनाबे फ़िज़्ज़ह का जलाल

वहीं हज़रत फ़िज़्ज़ह भी मौजूद थीं, हज़रत फ़िज़्ज़ह को जलाल आ गया। उन्होंने फरमाया ऐ बदबख़्त यह वह होंठ हैं जिन्हें रसूलुल्लाह चूमते थे और तू बेअदबी कर रहा है।

यज़ीद ने गुस्से में आकर जल्लाद को हुक्म दिया कि उस औरत को क़त्ल कर दे। जल्लाद आगे बढ़ा लेकिन जनाब फ़िज़्ज़ह जो हबश की रहने वाली थीं दरबार के हबशी सिपाहियों को लल्कारा कि यह तुम्हारे क़ौम की बेटी और उसकी यह बेइज़्ज़ती। सिपाहियों को जलाल आ गया, सिपाही बिफर गये। और कहा कि ऐ यज़ीद अगर तूने उस ख़ातून का एक बाल भी बीका किया तो दरबार में ख़ून की नदियां बह जाएंगी। यज़ीद यह मंज़र देख कर अपनी हरकत से बाज़ आया।

जब दरबार में खड़े–खड़े ज़्यादा देर हो गई तो हज़रत इमाम जैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया मैं तेरे सामने खड़ा हूं और तू मेरी तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होता। यज़ीद मुतवज्जेह हुआ।

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने फरमाया ओ बेहया यज़ीद तुझ में शर्म व ग़ैरत की बू बाक़ी न रही कि तेरे घर की औरतें पर्दा में रहें। और हम वह हैं कि जिनके घर फ़रिश्ते भी बेइजाज़त दाख़िल न हों, उन्हें तू इस तरह बेपर्दा बेहिजाब भरे दरबार में बुला कर रुस्वा कर रहा है। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने यज़ीद के दरबार में ऐसी तक़रीर की जिस से यज़ीद के बदन पर लरज़ा तारी हो गया।

ख़ुतबा हज़रत सैय्यदा ज़ैनब

दरबारे यज़ीद पलीद में

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने दुनिया के सबसे बड़े दहशतगर्द यज़ीद के दरबार में बड़ी बरजस्तगी के साथ जो ख़ुतबा दिया उसका मुक़ाबला आज भी तारीख़े आलम न कर सकी। और न कभी कर पाएगी। जनाब ज़ैनब ने दरबारे यज़ीद में ऐसी वलवला अंगेज़ और इंक़ेलाबी तक़रीर की कि यज़ीद अपने ही दरबार में ज़लील व ख़्वार हो गया। हम्द व नअ्त के बाद आपने फरमाया कि ऐ यज़ीद तू यह समझता है कि तुने मुझ पर ज़मीन व आसमान तंग कर दिया है। तू जान ले कि अल्लाह ने तुमको मोहलत दी है। ताकि तुम्हारे गुनाहों में और इज़ाफ़ा हो जाए।

ऐ यज़ीद यही इंसाफ़ है कि तेरी औरतें और कनीज़ें पर्दे में रहें। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नवासियां असीरों की तरह शहर–शहर, क़रिया–क़रिया नंगे सर और नंगे पैर फिराई जाएं। ऐ यज़ीद अन क़रीब तू जान जाएगा कि कौन हक़ है और कौन बातिल है। उस दिन का हाकिम अल्लाह है जिस दिन तेरे मद्दे मुक़ाबिल हमारे जद्द होंगे। तेरे आज़ा तेरे ही ख़िलाफ़ गवाही देंगे।

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब के इस ख़ुतबा ने यज़ीद को ढेर कर दिया। यज़ीद चाहता था कि इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु को शहीद करके आपकी सदाए इंक़ेलाब को ख़ामोश कर दे। मगर हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने यज़ीद और यज़ीदियों के नापाक मन्सूबों पर पानी फेर दिया। आपने ऐसी तक़रीर की कि दमिश्क़ के दरो दीवार हिलने लगे। हज़रत ज़ैनब ने वह कारनामे अंजाम दिए कि दुश्मन बौखला उठा। न कूफ़ा ही में उन पर क़ाबू पा सका न शाम ही में, न शाम के दरबार व बाज़ार उनकी सदाए इंक़ेलाब को ख़ामोश कर सके और न शाम के क़ैदख़ाने। फिर यज़ीद हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु की तरफ़ मुख़ातिब हुआ हज़रत सैय्यद सज्जाद और यज़ीद से काफी बहस हुई। यज़ीद ने ग़ुस्से में आ कर इमाम ज़ैनुल–आबेदीन को क़त्ल करने का हुक्म दे दिया।

जल्लाद आगे बढ़ा हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने बुलन्द आवाज़ से फरमाया :

"ऐ यज़ीद क्या तेरे लिए वह ख़ून जिनको तू बहा चुका काफी नहीं। अगर तू उस बीमार को क़त्ल कराना चाहता है। तू पहले मुझे क़त्ल कर दे।"

जब जल्लाद ने चाहा कि इमाम ज़ैनुल–आबेदीन को क़त्ल करे। तो अचानक ग़ैब से दो हाथ नुमूदार हुए और जल्लाद की गर्दन पकड़ कर झिंझोड़ डाली, जल्लाद ख़ौफ़ज़दा हो कर भाग गया। और यज़ीद को इस हालत से बाख़बर किया यज़ीद अपनी इस हरकत से बाज़ आया।

इसी ग़ुस्से में यज़ीद ने खड़े हो कर यह अश्आर पढ़े।

तरजमा : काश मेरे वह बुज़ुर्ग जो बद्र व उहुद में क़त्ल किए गये। आज मौजूद होते तो ख़ुश हो कर मुझे दाद देते कि मैंने किस तरह आले मुहम्मद से उनका बदला लिया है, और बनी हाशिम को क़त्ल किया है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर न कोई फ़रिश्ता आया था न कोई वहीए इस्लाम उनका अपना मनघड़त ढोंग था। (मआज़ल्लाह) इस्लाम को हासिल करने के लिए एक खेल खेला था।

उसके बाद यज़ीद ने कहा कि मैं दीने मुहम्मदी से बेज़ार हूं और ईसा इब्ने मरयम के मज़्हब में दाख़िल हो गया हूं। (मिरातुल–असरार : स. 204)

दमिश्क़ में यज़ीद का क़ैदख़ाना

फिर उसके बाद यज़ीद ने अह्ले हरम को क़ैदख़ाने में डलवा दिया। ऐसा क़ैदख़ाना, ऐसी अन्धेरी कोठरी में रखा गया जहां यह पता चलना दुश्वार था कि रात कब हुई, दिन कब हुआ।

बाप के सीने पर पुरसुकून की नींद पाने वाली सकीना अन्धेरे क़ैदख़ाने की घटी हुई फ़िज़ा में अपने बाप को याद करके रोती रहती थीं।

क़ैदख़ाने में रहते जब एक अरसा गुज़ार गया तो एक दिन अ़ब्दुल्लाह नामी एक शख़्स का उधर से गुज़र हुआ। वहां उसने कुछ नहीफ़ व नातवां बच्चों की सिस्कियां सुनीं, ठहर गया। और कान लगा के सुनने लगा तो सुना कि एक बच्ची बार–बार तड़प कर कह रही है कि फूफ़ी जान मेरे बाबा मुझे अब कब लेने आएंगे, हमें अपने वतन जाना कब नसीब होगा।

अब्दुल्लाह रहम दिल आदमी था इन जुमलों से दिल पर चोट लगी, पलट कर फौरन अपने घर आया और अपनी बीवी से कहने लगा कि आज मैं क़ैदख़ान–ए–यज़ीद से गुज़र रहा था। तो वहां मैंने कुछ बच्चों की सिस्कियां सुनीं, मुझे ऐसा लग रहा है कि वह यतीम व बेसहारा बच्चे शायद भूखे और प्यासे हैं।

तब से मेरा दिल बेचैन है। ऐ बीवी तेरा मामूल है जब शबे जुमा नज़रे हुसैन का खाना मिस्कीनों और यतीमों को खिलाती है आज वह खाना जब तैयार हो तो उन क़ैदियों तक पहुंचा देना।

औरत मोमिना थी। ख़ुशी–ख़ुशी खाना तैयार किया और ख़्वान सर पर रखा और क़ैदख़ाने में आई जैसे ही क़ैदख़ाने की चौखट पर क़दम रखा। देखा तो एक बहुत कमज़ोर लाग़र बीमार है। जिसके हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़ी पड़ी है। गले में ज़ख़्म और ज़ख़्मों में ख़ार दार

तौक़ पड़ा है। औरत ने तड़प कर कुछ पूछना चाहा मगर उस बीमार ने गर्दन की तरफ़ कुछ इशारा किया। मतलब यह था कि ज़ख़्म की तक्लीफ़ से कुछ बोला नहीं जाता।

वह औरत आगे बढ़ी तो देखा कि खुले सर एक बीबी बैठी हैं। जिनकी पुश्त पर जा बजा ख़ून के धब्बे पड़े हैं और उनकी रानों पर सर रखे एक पांच साल की बच्ची लेटी हुई है। जो आंखें बन्द किए हुए है।

यह वह मंज़र था जिसे देख कर बेइख़्तियार उस औरत का दिल भर आया। खाने का ख़्वान वहीं रख कर बैठ गई।

तमांचे खाई और प्यासी यतीम सकीना ने आहट पाकर अपनी आंखें खोल दीं। और सर उठा कर एक दफ़ा खाने की तरफ़ देखा और फिर अपनी फूफ़ी का चेहरा देखने लगीं।

वह औरत तड़प कर आगे बढ़ी और सकीना को गोद में उठा लिया। और बड़े प्यार से कहा बेटा यह खाना मैं तुम्हारे वास्ते ही लाई हूं, ख़ूब सैर हो कर खा लो। मगर पहले अपना नाम व पता बता दो कि तुम कहां की रहने वाली हो और किस जुर्म में यह सज़ा मिली है।

यह सुन कर हज़रत ज़ैनब ने फ़रमाया कि ऐ औरत तुझे मेरी हालत पर रहम आ गया। उसका शुक्रिया अब उस खाने को वापस ले जा। हम सादात पर सदक़ा हराम है।

औरत ने जवाब दिया कि ऐ बीबी यह सदक़े का खाना नहीं है। यह तो हमारे आक़ा हुसैन की नज़्र व सलामती का खाना है। आप भी खाइए और अपने बच्चों को भी खिलाइए।

बीबी मैं हर शबे जुमा हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की नज़्र का खाना तक़्सीम करती हूं। और फिर उनकी ज़िन्दगी व सलामती की दुआएं करती हूं क्योंकि मेरे आक़ा ने ही मुझे दोबारा ज़िन्दगी अता की है। मैं तो ख़त्म हो चुकी थी। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने पूछा वह कैसे? तो उस औरत ने कहा कि मैं अपने वालिदैन की इक्लौती बेटी थी, मेरा बाप मुझ से बेहद मुहब्बत करता था। एक दफ़ा मैं बहुत सख़्त बीमार हुई दवा इलाज के बाद भी ठीक न हुई हालत अबतर हो गई।

जब तमाम मुआलिजों ने ला इलाज कह कर मुझे जवाब दे दिया तो मेरा बाबा मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाया और उनके क़दमों में गिर कर रो–रो कर मेरी ज़िन्दगी की भीख मांगी। इतने में मैंने देखा कि सब्ज़ पर्दा उठा और हुजरे से एक चांद जैसा बच्चा निकला। रसूले ख़ुदा ने उसे हुसैन कह कर आवाज़ दी जब बच्चा क़रीब आया तो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "मेरे लाल उस बच्ची की दोबारा ज़िन्दगी की दुआ कर दो उसका बाप बहुत परेशान है।"

यह सुनना था उस बच्चे ने अपना नन्हा सा हाथ मेरे सर पर रखा और कुछ पढ़ना शुरू किया।

मुझे याद है कि वह बच्चा जितना पढ़ता जाता था मेरे अन्दर ज़िन्दगी के आसार पैदा होते जाते थे जब बच्चा दुआ पढ़ चुका तो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ऐ शख़्स जा तेरी बच्ची को ख़ुदा ने मेरे हुसैन के सदक़े दोबारा ज़िन्दगी अता कर दी।

जब से मैं फिर कभी बीमार न हुई। मेरे बाबा ने मरते वक़्त वसीयत की थी कि बेटी देख जिस हुसैन ने तुझे दोबारा ज़िन्दगी अता की है। जब तक तू ज़िन्दा रहना। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवासे की ज़िन्दगी व सलामती की नज़्र कराती रहना।

औरत यह वाक़या सुना ही रही थी कि हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा सिस्कियां लेकर रोने लगीं। औरत ने घबरा कर पूछा बीबी आप क्यों रोने लगीं, बीबी जल्दी बताइए ख़ैर तो है?

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब बढ़ कर उस औरत ने लिपट गईं सब्र का बन्धन टूट गया।

आंखों के ख़ुश्क सोते फूट पड़े रो–रो कर फरमाने लगे कि ऐ औरत अब हुसैन की सलामती की दुआ न करना, अब वह दुनिया में नहीं रहे। उन्हें ज़ालिमों ने शहीद कर दिया और उनका सर क़लम करके जिस्म को घोड़ों से पामाल कर दिया। उसके बाद घरों में आग लगा दिया। और सारा सामान लूट लिया। उनकी पांच बरस की बच्ची को मार कर कान के गोशवारे छीन लिए।

बेसहारा बहनों के सरों से चादरें छीन लीं ताज़ियाने लगाते हुए बाज़ारों में फिराया गया।

ऐ बीबी अगर तू देखना चाहती है तो ले मैं उसी हुसैन की बहन ज़ैनब हूं, यह उन्हीं का बीमार बेटा है।

और तेरी गोद में उसी हुसैन की यतीम बच्ची सकीना है। जब हमारा कोई दुनिया में न रहा तो हमें मजबूर समझ कर उस कैदखाने में क़ैद कर दिया।

मन्कूल है कि जब शाम होने लगती और चिड़ियां चेहचहाती हुई आसमान से गुज़रतीं तो जनाब सकीना हज़रत सैय्यदा ज़ैनब से पूछतीं फूफी यह परिन्दे शाम के वक़्त कहां जा रहे हैं। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब आंसू पी कर जवाब देतीं बेटी यह परिन्दे अपने–अपने घोसलों में जा रहे हैं।

यह सुन कर हज़रत सकीना अपनी आंखों में आंसू भर कर कहतीं फूफी जान हम कब अपने वतन जाएंगे। ग़म की सताई फूफी बेटी को कलेजा से लगा कर देर तक तसल्ली देती रहतीं।

फूफी की आग़ोश से चिमट कर दिल शिकस्ता सकीना थोड़ी देर तक सिसक कर रोती–रोती सो जाएं। बइख़्तिलाफ़े रिवायत एक दिन हज़रत सैय्यदा ज़ैनब से हज़रत सकीना ने कहा कि ऐ मेरी फूफी आज के बाद आप मुझे नहीं पाएंगी।

मैं आपसे एक वसीयत करती हूं कि जब मेरी रूह निकल जाए तो मेरी लाश को ऐसे मक़ाम में दफन करना जहां की ज़मीन सर्द और ठण्डी हो। ताकि मेरी हड्डियों को तरावट पहुंचे क्योंकि प्यास का सदमा उठाते–उठाते मेरी हड्डियां सोख़्ता हो गई हैं।

बच्ची के जुमले सुन कर असीराने हरम में कोहराम बरपा हो गया चुनांचे जब आपने क़ैदख़ाने में इंतिक़ाल फरमाया तो वसीयत के मुताबिक़ आपको हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन बीमारे करबला ने दफ़न किया। वक़्त दफ़न क़ब्र से दो हाथ निकले आवाज़ आई ऐ बेटा सैय्यद सज्जाद मैं तुम्हारी दादी फातिमतुज़्ज़हरा हूं। लाओ मेरी सकीना को। हज़रत सकीना दादी के हाथों में चली गईं।

एक रिवायत में है कि 225 हिज. में एक शब मुल्के शाम में सैय्यद मुर्तज़ा नामी एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा कि हज़रत सकीना तशरीफ़ लाई हैं और फरमाती हैं कि ऐ मुर्तज़ा मेरी क़ब्र में कुछ पानी आ गया है। कल हाकिम शाम मेरी क़ब्र की मरम्मत का हुक्म देगा।

देखो तुम हाज़िर रहना और क़ब्र से मेरी लाश को निकाल कर अपनी गोद में रखना। जब क़ब्र दुरुस्त हो जाए तो फिर मुझे ख़ाक पर लिटा देना।

सैय्यद मुर्तज़ा कहते हैं कि जब मैं ख़्वाब से बेदार हुआ तो किसी ने मेरे दरवाज़े पर दस्तक दी। दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि हाकिमे शहर ने बुलाया है। मैं हाज़िर हुआ। हाकिमे शहर ने भी वही ख़्वाब बयान किया जो मैंने देखा था। और कहा कि हज़रत सकीना ने तुम्हीं को लाश निकालने का हुक्म दिया है। सिवाए तुम्हारे कोई दूसरा हाथ न लगाए।

सैय्यद मुर्तज़ा हाकिमे शहर के साथ शहज़ादी की क़ब्र पर गये। थोड़ी देर के बाद जब क़ब्र से बाहर निकले तो दोनों हाथों से सर पकड़ कर धाड़ें मार कर रोने लगे। लोगों ने घबरा कर रोने का सबब पूछा तो फरमाया कि जब मैंने शहज़ादी के क़ब्र का तख़्ता हटाया। तो वल्लाह मैंने देखा कि हज़रत सैय्यदा सकीना मेरे मज़्लूम आक़ा की वह बच्ची फटा कुर्ता पहने रुख़्सारों पर तमांचों के नील, बाज़ुओं और नन्हीं–नन्हीं कलाइयों में रस्सियों के निशान लिए अपने बिस्तरे ख़ाक पर आराम कर रही हैं।

शहज़ादी सकीना को जब मैंने गोद में उठा कर क़रीब से देखा तो मेरा कलेजा मुंह को आ गया।

अरे मेरी शहज़ादी के रुख़्सारों पर बहते हुए आंसुओं के निशान अब भी बने हुए हैं। और कानों की फटी हुई लवों में ताज़ा–ताज़ा ख़ून जमा हुआ है।

दमिश्क़ के क़ैदख़ाने में हज़रत सैय्यदा ज़ैनब की नमाज़

एक दिन क़ैदख़ाने में सैय्यद सज्जाद ने अपनी फूफ़ी सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा को बैठ कर नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो आप क़रीब आ गये और ख़ामोशी से बैठ गये। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा जब नमाज़ पढ़ चुकीं तो सैय्यद सज्जाद ने कहा फूफ़ी आज तक हमने आपको कभी बैठ कर नमाज़ पढ़ते नहीं देखा आज क्या बात है कि आप बैठ कर नमाज़ पढ़ रही हैं?

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने कहा कि बेटा सैय्यद सज्जाद क्या बताऊं जब से हम क़ैदख़ाने में आए हैं यज़ीद जितना खाना भिजवाता है वह हमारे बच्चों के लिए नाकाफी होता है। इसलिए हम अपना सारा खाना बच्चों को खिला देते हैं। बेटा चालीस दिन हो गया एक भी लुक़्मा मेरे हलक़ से नीचे नहीं उतरा।

जब तक जिस्म में ताक़त थी हम खड़े हो कर नमाज़ पढ़ते थे मगर अब ताक़त जवाब दे चली है तो हम बैठ कर नमाज़ पढ़ते हैं। ग़र्ज़ कि यह क़ाफ़िला एक अरसे तक दमिश्क़ के क़ैदख़ाने में मुक़ैय्यद था। एक रोज़ यज़ीद ने हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु को तलब किया और कहा कि आप मुझ से कुछ फरमाइश करें।

मरवान भी यज़ीद के दरबार में मौजूद था मरवान ने यज़ीद को मशवरा दिया कि जितना जल्द हो सके अह्ले बैत को मदीना वापस भेज दो, शाम में उनकी मौजूदगी हुकूमत के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है। मुसलमानों को मालूम हो गया है कि यह अह्ले बैत हैं हम उन्हें अभी तक चोर, डाकू और बाग़ी समझ रहे थे। करबला के सही हालात से लोग बाख़बर हो गये हैं।

यज़ीद को यह इत्तिला मिल रही थी कि मुल्क में बेचैनी बढ़ती जा रही है। अब उसके पास अह्ले हरम को आज़ाद करने के अलावा और कोई चारा न था।

इमाम ज़ैनुल-आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु की यज़ीद पलीद से गुफ़्तगू

यज़ीद ने हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबेदीन से कहा कि आप क्या चाहते हैं? तो इमाम ने फ़रमाया कि-

अव्वल : यह कि मेरे वालिद के क़ातिल को मेरे हवाले कर दे।

दोम : यह कि शोहदाए किराम के सिरों को मुझे दे दे ताकि मैं इन्हें लेजाकर उनके जिस्मों के साथ दफ़न कर दूं।

सोम : यह कि आज जुमे का दिन है मुझे इजाज़त दे कि मिम्बर पर चढ़कर ख़ुत्बा पढूं।

चहारम : यह कि हमारे लिये हुए क़ाफ़िले को मदीना पहुंचा दे।

यज़ीद ने कहा कि क़ातिल का मुतालबा दरगुज़र कीजिये।

बाक़ी आपके तमाम मतालबात मंजूर हैं। जिस वक़्त यज़ीद जामा मस्जिद में पहुंचा तो देखा कि शाम के तमाम अमराए रऊसा मौजूद हैं।

यज़ीद सोचने लगा कि कहीं ऐसा न हो कि इमाम ज़ैनुल आबेदीन के ख़ुत्बा देने से अपना बना बनाया काम बिगड़ जाये।

यज़ीद ने फ़ौरन एक शामी ख़तीब को हुक्म दिया कि वह फौरन मिम्बर पर चढ़कर ख़ुत्बा दे।

शामी ख़तीब ने मिम्बर पर चढ़कर अहले अबू सुफियान की तारीफ़ और आले अबू तालिब की बुराईयां ब्यान करना शुरू कर दी।

हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन बर्दाश्त न कर सके आप फौरन खड़े हो गये और आगे बढ़कर फ़रमाया ऐ शामी तू झूटा और फ़ित्ना परवर ख़तीब है।

एक फ़ासिक़ व फ़ाजिर के लिये तू अल्लाह की नाफ़रमानी कर रहा है और अपने को अज़ाबे इलाही का मुस्तहिक़ ठहराता है।

आपने यज़ीद को ललकारा और कहा तू वादा ख़िलाफ़ी क्यों करता है? मुझे ख़ुत्बा पढ़ने का मौक़ा क्यों न दिया? तमाम हाज़िरीने मस्जिद खड़े हो गये और कहा कि हम आज इन्हीं का ख़ुत्बा सुनना चाहते हैं।

जिनकी फ़साहत व बलाग़त का अरब व इज्म में डंका बज रहा है। मजबूर होकर यज़ीद ने आपको खुत्बा पढ़ने की इजाज़त दे दी। हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद के मिम्बर पर तशरीफ़ लाये। अल्लामा अबू इस्हाक़ असफ़र अपनी किताब "नूरुलऐन" में यूं रक़मतराज़ हैं।

हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु अन्हु का खुत्बा

हम्द व नअत के बाद फ़रमाते हैं कि ऐ लोगो! मैं तुम्हें नसीहत करता हूं कि बच्चो दुनिया और उसकी फरेबकारियों से क्यों कि यह वह जगह है जो ज़वाल पज़ीर है। उसके लिए बक़ा नहीं उसने गुज़िश्ता क़ौमों को फना कर दिया है। हालांकि उनके माल तुम से ज़्यादा थे। उनकी उम्रें तुम से कहीं लम्बी थीं, उनके जिस्मों को मिट्टी ने खा लिया और उनके हालात पहले की तरह नहीं रहे तो अब तुम उनके बाद दुनिया व माफ़ीहा से किस बेहतरी की उम्मीद रखते हो।

अफ़्सोस अफ़्सोस! ख़बरदार व होशियार हो जाओ कि इस दुनिया से लिपटे रहना और उसमें मशग़ूल हो जाना बेफाइदा है।

लिहाज़ा अपनी गुज़िश्ता और आइन्दा की ज़िन्दगी पर ग़ौर करो। और नफ़्सानी ख़्वाहिशात से फारिग़ होने और उम्र की मुद्दत ख़त्म होने से पहले इस दुनिया में नेक काम करो। जिसका अच्छा सिला आइन्दा तुम्हें मिलेगा। क्योंकि उन ऊंचे-ऊंचे महलों से बहुत जल्द क़ब्रों की तरफ़ बुलाए जाओगे और अच्छे बुरे कामों के बारे में तुम से हिसाब लिया जाएगा।

खुदा की क़सम बताओ कितने ताजिरों की हसरतें पूरी हुईं और कितने जाबिर हैं जो हलाकत के गड्ढों में जा गिरे जहां उनकी नदामत ने उन्हें कोई भी फाइदा न दिया। और न ज़ालिम को उसकी फरियाद ने।

उसी का सिला उन्होंने पाया जो कुछ दुनिया में उन्होंने किया था। ऐ लोगो! जो मुझे पहचानता है और जो नहीं पहचानता, उसे अपना तआरुफ़ कराता हूं कि मेरा नाम अली है और मैं हुसैन इब्ने अली का

बेटा हूं और फातिमा ज़हरा का लख़्ते जिगर हूं। मैं ख़दीजतुल-कुबरा का फरज़न्द और हमनवा हूं और मैं मक्का मुकर्रमा और सफ़ा व मरवा व मिना का बच्चा हूं। मैं उस ज़ाते कुदसी सिफ़त का बेटा हूं जिस पर मलाइका आसमान से सलात व सलाम पढ़ते है।

मैं उसका बेटा हूं जिसके मुतअल्लिक़ अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त का इरशाद है।

मैं उसका बेटा हूं जो शफ़ाअते कुबरा का मालिक है मैं उसका बेटा हूं जो क़्यामत में साक़ी है हौज़े कौसर का, रोज़े क़्यामत के दिन साहिबे इल्म होगा।

मैं साहबे दलाइल और मोजज़ात का बेटा हूं। मैं उसका बेटा हूं जो करामतों का मालिक और साहबे कुरआन है।

मैं बेटा हूं उस सरदार का जो क़्यामत के दिन मक़ामे महमूद पर फाइज़ होगा।

मैं साहबे शिफ़ा व अता का बेटा हूं। जिसे दरख़शन्दा ताज पहनाया गया।

मैं बेटा हूं साहबे बुराक़ का। मैं बेटा हूं सिफ़ात व हुक्मे इस्माईली रखने वाले का। मैं बेटा हूं साहबे तावील का।

मैं बेटा हूं साहबे सुदूर व दुरूद का।

बेटा हूं मैं आबिद व ज़ाहिद का, बेटा हूं मैं वादे वफ़ा करने वाले का।

बेटा हूं मैं ख़ुदाए मालिक व माबूद के रसूले बरहक़ का।

बेटा हूं मैं अबरारों के सरदार का।

मैं उसका बेटा हूं जिस पर सूरः बक़रः नाज़िल की गई।

मैं उसका बेटा हूं जिसके लिए बहिश्तों के दरवाज़े खोले जाएंगे। मैं उसका बेटा हूं जिसके लिए जन्नते रिज़वान मख़्सूस है। मैं उसका बेटा हूं जिसने प्यासे अपनी जान दी है।

मैं बानी करबला का बेटा हूं। मैं उसका बेटा हूं जिसका अमामा और चादर छीन लिए गये। मैं उसका बेटा हूं जिस पर आसमान के फरिश्ते रोए।

ऐ लोगो! ख़ुदा ने अच्छी आज़माइश के साथ हमारा इम्तिहान लिया। हमें इल्म व हिदायत इनायत फरमाई और हमारे मुख़ालिफ़ों को गुम्राही का झण्डा पकड़ाया। और हमें जुमला आलमीन पर बुज़ुर्गी अता फरमाई।

हमें वह दिया जो अह्ले आलमीन में से किसी को न दिया।

और हमें पांच चीज़ों के साथ मख़्सूस फरमाया जो मख़्लूक़ में से किसी में नहीं पाई जातीं। यानी –

1. इल्म।
2. शुजाअत।
3. सख़ावत।
4. मुहब्बते ख़ुदा।
5. मुहब्बते रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

और हमें वह अता फरमाया जो मख़्लूक़ में से किसी को नहीं अता किया।

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं कि इस ख़ुतबा का यह असर हुआ कि लोग चीख़ मार कर रोने लगे और इस क़द्र हीजान बढ़ा कि यज़ीद ने घबरा कर मुअज़्ज़िन को अजान देने का हुक्म दिया। मुअज़्ज़िन ने अज़ान देनी शुरू कर दी। जब मुअज़्ज़िन ने अल्लाहु अकबर कहा तो इमाम ने जवाब में फरमाया अल्लाहु अकबर फ़ौक़ा कुल्ला कबीरिन। बेशक अल्लाह सबसे बड़ा है।

फिर मुअज़्ज़िन ने कहा अश्हदु अन्ना ला इलाहा इल्लल्लाह और जब मुअज़्ज़िन ने कहा अश्हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह तो हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन ने फरमाया।

बिल्लाहे अलैका अस्कत। तुझे क़सम है ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की ज़रा चुप रह मुअज़्ज़िन ख़ामोश हो गया तो आपने ने यज़ीद से फरमाया :

तरजमा : ऐ यज़ीद सच कह क्या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे नाना हैं या तेरे अगर तू कहे कि मेरे हैं तो तूने सच कहा और अगर तू क़हे कि तेरे हैं तो तू झूठा है। तो यज़ीद ने कहा :

बल जद्दका। बेशक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके नाना हैं।

तो इमाम ज़ैनुल–आबेदीन ने फरमाया :

क्यों क़त्ल किया उनके कुंबा को और क्यों गालियां दीं उनके हरगे मोहतरम को।

यज़ीद यह सुन कर ख़ामोश हो गया और अह्ले मस्जिद चीख़ें मार–मार कर रोने लगे। आलम यह हो गया कि यज़ीद को अपनी जान के लाले पड़ गये। यज़ीद घबरा गया और अपने घर में चला गया। बिल–आख़िर यज़ीद ने सैय्यद सज्जाद से कहा कि आपको रिहा किया जाता है चाहें तो यहीं रहें चाहें तो मदीना चले जाएं। हां आपके बाबा हुसैन के ख़ून का मैं ख़ूं बहा देना चाहता हूं आप उसे क़बूल करें। आपने यह बात अपनी फूफी सैय्यदा ज़ैनब से अर्ज़ की कि फूफी जान यज़ीद बाबा का ख़ूं बहा दे रहा है कहता है कि अपने बाबा का ख़ूं बहा ले लो। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब को जलाल आ गया आपने फरमाया कि उसकी यह जुरअत। बेटा सज्जाद उस से कह दो कि वह किस–किस का ख़ूं बहा देगा असग़र का या अकबर, क़ासिम का या औन व मुहम्मद का, अब्बास का या मेरे भैया हुसैन का? बेटा सज्जाद उस से कह दो कि वह अब ख़ून बहा मैदाने महशर में देगा। जब मेरे बाबा अली रज़ि अल्लाहु अन्हु और मेरी मां फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा और मेरे नाना जनाब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मौजूद होंगे।

आपने फ़रमाया मुझे मदीना जाने दो।

अह्ले बैत का यह नूरानी क़ाफ़िला क़ैदख़ाने से बाहर निकला और नौमान इब्ने बशीर की सरबराही में एक हज़ार सवारों के साथ मदीना रवाना कर दिया गया।

बस एक क़्यामत थी जो गुज़र गई

जब अह्ले हरम क़ैद से आज़ाद हुए जनाब ज़ैनब की ख़्वाहिश पर यज़ीद के शहीदों के सरों को अह्ले हरम के हवाले कर दिया तो जिस शहीद का सर आता था। और जिस बीबी से उसका क़रीबी रिश्ता होता था। वह बढ़ कर उसे ले लेती थी।

जनाब क़ासिम का सर आया तो उम्मे फरवा ने लिया। अली अकबर

का सर आया तो जनाब लैला बढ़ीं। जनाब अली असग़र का सर आया तो रुबाब बढ़ीं।

और जब अब्बास का सर आया तो ज़ौज–ए–अब्बास मौजूद थीं मगर आगे न बढ़ीं।

जनाब उम्मे कुल्सूम ने आगे बढ़ कर अपनी आग़ोश में लिया और फरमाया भैया अब्बास आप मेरी तरफ़ से यौमे आशूरा फ़िदया बन कर गये थे आप मेरी गोद में आइए। तमाम बेटियां रोने लगीं।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के सरे अनवर को छोड़ कर बाक़ी शुहदाए किराम के सरों को दमिश्क़ में दफ़न कर दिया गया। जो आज भी दमिश्क़ के तारीख़ी क़ब्रिस्तान बाबुस्सग़ीर में सड़क के पूरब तरफ़ मरजए आलम बना हुआ है।

दमिश्क़ से मदीना को रवानगी

असीराने हरम का यह नूरानी क़ाफ़िला दमिश्क़ से मदीना की तरफ़ रवाना हुआ। सहराओं, दरियाओं, पहाड़ों से गुज़रता हुआ यह क़ाफ़िला चलता रहा।

कुछ दिनों के बाद जब मदीने के बाग़ात नज़र आने लगे और मदीने की दीवारें नज़र आईं तो जनाब उम्मे कुल्सूम ने एक निहायत बलीग़ और दर्द आमेज़ अश्आर हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत पर पढ़ा। हम यहां सिर्फ़ दो अश्आर पर इक्तिफ़ा करते हैं :

1. ऐ नाना के मदीना तो हम को क़बूल न कर क्यों कि हम हसरतों और रंज व आलाम के साथ आए हैं।
2. जब तुमसे हम निकले थे तू घर भरा था और अब वापस आए हैं तो न मर्द साथ हैं और न ही बच्चे।

शाह अब्दुल–अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह अपनी किताब 'सिर्रुश्शहादतैन' में यूं रक़्मतराज़ हैं कि इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत और शहादत के मक़सद की तक्मील जनाब ज़ैनब व उम्मे कुल्सूम से हुई। क्योंकि उन दोनों बहनों का सब्र व इस्तिक़्लाल दरज–ए–कमाल को पहुंचा हुआ था। (सिर्रुश्शहादतैन)

असीराने हरम का क़ाफ़िला मदीने में

जिस वक़्त अह्ले हरम का क़ाफ़िला मदीने के क़रीब पहुंचा तो हज़रत सैय्यदा ज़ैनब के हुक्म पर क़ाफ़िला बैरूने शहर रोका गया। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने एक शख़्स को शहर में भेजा कि जाकर मदीने में ऐलान कर दे कि अह्ले हरम वापस आ गये हैं। तो सबसे पहले हज़रत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह ने उस क़ाफ़िले का ख़ैर मक़दम किया।

अह्ले मदीना जमाअत दर जमाअत हाज़िर होने लगे। मदीने में कोई ऐसी पर्दादार औरत न थी जो आह व फ़ुग़ां करते हुए बाहर न निकल आई हो। लोगों का इज़्देहाम हो गया। हर तरफ़ रोने की आवाज़ें बुलन्द थीं। हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने तमाम रूदादे सफर पर रौशनी डाली। जिसे अह्ले मदीना सुन कर तड़प गये और बेख़ुद हो गये जिन–जिन हालात का मुक़ाबला अह्ले बैत को करना पड़ा सब पर रौशनी डाली गई।

यह मुक़द्दस क़ाफ़िला मदीने में दाख़िल हुआ हज़रत सैय्यदा ज़ैनब का यह हाल था कि घुटनों के बल चल कर मदीने में दाख़िल हुईं। मदीने के ज़र्रे–ज़र्रे से जो हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु को वाबस्तगी थी वह न किसी तफ़्सील की मुहताज है न तशरीह की। यह मदीना ही तो है जहां हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा पैदा हुए, पले बढ़े और जवान हुए यह वही मदीना है अब जहां सिर्फ़ हज़रत सैय्यदा ज़ैनब थीं और हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु न थे। हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा की यह हालत थी कि ज़ार व क़तार रो रही थीं और अर्ज़ करती जा रही थीं : ऐ नाना जान! हम आपके दरे पाक में हसरत भरे दिलों से लोट आए हैं।

तमाम माओं की गोदें सूनी हो गईं। हम सब्र व रज़ा पर हर हाल में क़ायम हैं। ऐ नाना! हम आपकी चहेती और लाडली बेटियां हैं, ऐ नाना! आज हम पर यह ज़ुल्म हुआ कि हम ऊंटों पर बेहिजाब व बेपर्दा सवार की गईं।

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा का यह हाल था कि आप घुटनों के बल दूध पीते बच्चे की तरह घसीटती हुई मदीने में दाख़िल हुईं इसी तरह रौज़–ए–रसूल तक गईं क्योंकि खड़े होने की सकत न थी। नाना जान के मज़ारे अक़्दस से लिपट कर हज़रत सैय्यदा ज़ैनब बेहोश हो गईं, कोई क्या बताए कि वह क्या मन्ज़र रहा होगा। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने अपने नाना से क्या कहा।

भाई के ईफ़ाए वादा का तज़्किरा किया या उम्मत की शिकायत की। अपने बाज़ुओं के नील दिखाए या भाई का ख़ून आलूद पैरहन पेश किया।

रौज़–ए–रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिलने लगा बाज़ मुअर्रेख़ीन का ख़्याल है कि मदीना में कई दिन तक मातम रहा। हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु नाना के रौज़े पर हाज़िर हुए और दस्तबस्ता अर्ज़ करने लगे : "ऐ नाना जान! दुश्मनों ने हमारा सब कुछ लूट लिया, हमारे वालिदे मोहतरम को बड़ी तौहीन व तहक़ीर के साथ क़त्ल कर दिया।

और आपके जिगर के टुक्ड़े हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु बड़ी बेदर्दी से शहीद हुए। दुश्मनों ने उनका सरे मुबारक काट कर नोक नेज़ह पर बुलन्द किया। लेकिन वह सरे मुबारक नेज़े पर ऐसा चमकता था जैसे आसमान में चौदहवीं का चांद चमकता है।

ऐ नाना! दुश्मनों ने हम पर मज़ालिम के पहाड़ तोड़े, हमारे माल व असबाब को छीन लिया। और हमारे ख़ेमों को लूट लिया हमारा कोई मुआविन व मददगार न था। उन्होंने हमारी तौहीन करने के लिए ऊंटों की नंगी पीठों पर सवार करके शहर–शहर, क़रिया–क़रिया घुमाया और दमिश्क़ में लाकर यज़ीद के दरबार में खड़ा कर दिया।

यज़ीद ने कहा कि मैंने तुमसे अपना मक़्सद हासिल कर लिया और तुम्हारे पिद्र मुअ्ज़म के क़त्ल से मुझे ख़ुशी हुई। क्योंकि बद्र व उहद का बदला लिया है, ऐ नाना जान! उसने तो मुझे भी क़त्ल करना चाहा था मगर मेरी फूफी हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा चिल्ला उठीं और शोर मचाया तो यज़ीद ने कहा उसे छोड़ दो यह आज़ादों में से है।

ऐ नाना जान! कल क़्यामत में उस से हमारा हक़ लीजिए और हश्र में कल फ़ैसला के दिन फ़ैसला कीजिए।"

उसके बाद सरे इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु को पहलूए सैय्यदा ख़ातूने जन्नत में दफन किया गया। हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने वापसी करबला के बाद मदीना मुनव्वरा को अपना मसकन बनाया। और आबादी से अलग थलग रहने लगे।

वलीद बिन अब्दुल–मलिक ने 75 हिज. में आपको ज़हर दिलवा दिया। 57/साल की उम्र पाक में 18 मुहर्रमुल–हराम बरोज़ मंगल पहलूए सैय्यदना हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु जन्नतुल–बक़ीअ़ में दफन हुए। (मिरातुल–असरार)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का शहीद होना था कि यज़ीद ने खुल्लम खुल्ला ज़ना, लेवातत, हराम कारी, माई बहन का बियाह, सूद व शराब ख़ोरी को फरोग़ देना शुरू किया।

मदीना शरीफ़ में यज़ीदी फौज का क़हर

इमाम हुसैन व दीगर शुहदाए करबला की शहादत से उसकी प्यास नहीं बुझी। यज़ीद ने फिर से बीस हज़ार फौज पैदल और सवार मिला कर मुस्लिम बिन उक़्बा की सरकरदगी में मदीना मुनव्वरा की जानिब रवाना कर दी। यह कह कर अगर अह्ले मदीना ख़ामोशी से मेरी बैअ़त क़बूल कर लें तो बेहतर है। वरना बिला ख़ौफ़ व ख़तर अह्ले मदीना को क़त्ल कर देना और उनका माल व अस्बाब लूट लेना और किसी तरह की रिआयत न करना। यज़ीदी फौजें पूरी जाह व जलाल के साथ मदीना मुनव्वरा पर हमला आवर हुईं।

अह्ले मदीना यज़ीद की फौजों की ताब न ला सके और अल–अमां अल–अमां पुकारने लगे। मदीना मुनव्वरा पर ग़लबा पाते ही ऐलान कर दिया कि क़त्ले आम शुरू कर दो, और मदीने की औरतों को मैंने तुम पर हलाल कर दिया।

इतना ही ऐलान करना था कि बस यज़ीदी फौजें, अह्ले मदीना पर टूट पड़ीं और अह्ले मदीना का माल लूटना शुरू कर दिया। इमाम ज़हरी की रिवायत के मुताबिक़ 97 सरदाराने कुरैश और सात सौ हाफ़िज़े कुरआन, सत्तरह सौ मुहाजिरीन व अन्सार और दस हज़ार अह्ले मदीना क़त्ल कर दिए गये जिसमें बच्चे और औरतें भी शामिल हैं।

यज़ीद की फौजों ने मदीना मुनव्वरा की मुक़द्दस ख़्वातीन के साथ बिल-जब्र इस्मतदरी की, मदीना में ज़िना मुबाह कर दिया गया जिसका नतीजा यह हुआ कि एक हज़ार औरतों के पेट से नाजाइज़ बच्चे पैदा हुए।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर कहते हैं कि :

कहा जाता है कि उन्हीं दिनों में एक हज़ार औरतें ज़िना से हामिला हुईं।

यज़ीद के हुक्म के मुताबिक़ तीन दिन तक शहर मदीना में ज़िना को मुबाह किए रखा। शहर के बाशिन्दों का क़त्ले आम किया गया। ग़ज़ब यह कि वहशी फौजों ने घरों में घुस-घुस कर औरतों की इस्मतदरी की। मस्जिदे नबवी शरीफ़ के अन्दर यज़ीदियों ने घोड़े बांधे कई रोज़ तक मस्जिदे नबवी शरीफ़ घोड़ों के पेशाब और लीद से आलूदा रही।

यज़ीदियों के कमीना पन की मिसाल शायद ही तारीखे़ आलम में मिल सके कि जब मदीने में लौटते हुए हज़रत सैय्यदना अबू सईद ख़ुद्री रज़ि अल्लाहु अन्हु के मकान के क़रीब पहुंचे तो उनके मकान में दाख़िल हो गये।

और उनके यहां जब कुछ न पाया तो आपकी दाढ़ी शरीफ़ के बाल नोच डाले और उन्हीं बालों को लेकर चले गये। (करबला के बाद स. 75)

मक्का शरीफ़ में यज़ीदी फौज का क़हर

मदीने की बेहुर्मती से यज़ीद की प्यास अभी नहीं बुझी, उसने अपनी फौज को हुक्म दिया कि अब मक्का मुअज़्ज़मा और कअ्बतुल्लाह को भी ताराज कर डालो।

यज़ीद की फौज हिसीन बिन नमीर की सरकरदगी में मक्का पहुंची और पहुंचते ही फौरन काबा का मुहासरा कर लिया। और इस कद्र संगबारी की कि हर हर तरफ़ सहने काबा में पत्थर ही पत्थर नज़र आने लगे। मस्जिदे हराम के कई सुतून शहीद कर डाले, खान-ए-काबा में आग लगा दी।

64/रोज़ तक बराबर मक्का वालों को क़त्ल करते रहे। काबा का गिलाफ जल गया, दीवारें फट गईं और जो दुंबा हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की जगह ज़िबह हुआ था उसकी दोनों सींगें काबा में रखी हुई थीं जल गईं और उसका चमड़ा भी जल गया। हज़रत सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम के कई तबर्रुकात जल गये। काबा कई रोज़ तक बेग़िलाफ़ रहा। अभी यज़ीदी मक्का में क़त्ल व ग़ारत में मसरूफ थे कि यज़ीद की मौत की ख़बर आई। फौजें मुन्तशिर हो गईं। (जज़्बुल-कुलूब, इब्ने असीर जिल्द 1, स. 31 ता 313, तबरी स. 2 ता 3, अल-बिदाया वन्निहाया स. 219)

फ़ज़ाइले मदीना मुनव्वरा

जिस मदीने की यज़ीद की फौजों ने बेहुर्मती की और उसकी हुर्मत को पाश-पाश कर डाला। उसी मदीने के बारे में रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यूं इरशाद फरमाते हैं :

हज़रत सअद रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि :

जो शख़्स अह्ले मदीना से मक्र व फ़रेब करे या जंग करे तो वह इस तरह पिघल जाएगा जैसे नमक पानी में पिघलता है।

तरजमा : जो अह्ले मदीना के साथ बुराई का इरादा करेगा तो अल्लाह तआला उसको दोज़ख़ की आग में रांगे की तरह पिघलाएगा। (मुस्लिम शरीफ़ जिल्द 1, स. 144)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया :

तरजमा : जिसने अह्ले मदीना को अपने ज़ुल्म से ख़ौफ़ज़दा किया अल्लाह तआला उसे ख़ौफ़ में मुब्तला करेगा और उस पर अल्लाह तआला फरिश्ते और सब लोगों की लानत है। क़यामत के दिन अल्लाह तआला न उसकी फ़र्ज़ नमाज़ क़बूल फरमाएगा न नफ़्ल।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं कि:

तरजमा : जो शख़्स अह्ले मदीना को ज़ुल्म से ख़ौफ़ज़दा करेगा। अल्लाह उसे ख़ौफ़ज़दा करेगा। उस पर अल्लाह और तमाम मलाइका और तमाम इंसानों की लानत है। क़यामत के रोज़ अल्लाह तआला उस से कोई चीज़ उसके गुनाह के फ़िदये क़बूल न फरमाएगा।

हज़रत अबू दरदा रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना :

तरजमा : फरमाते थे पहला वह शख़्स जो मेरे तरीक़े को बदलेगा वह बनी उमैया में से होगा जिसे यज़ीद कहा जाएगा।

इमाम मुल्ला अली क़ारी फरमाते हैं :

तरजमा : और इस हदीस से मुराद यज़ीद बिन मुआविया है। क्योंकि उसी ने मुस्लिम बिन उक़्बा को लश्कर देकर मदीना सकीनीया की तरफ़ भेजा और उसने मदीना को लश्कर के वास्ते तीन रोज़ के लिए मुबाह कर दिया और अख़ियार अह्ले मदीना को कसीर तादाद में क़त्ल किया।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर कहते कि उन्हें अहादीस की बुनियाद पर उलमा के एक गरोह ने यज़ीद पर लानत को जाइज़ रखा है। और एक क़ौल उनकी ताईद में इमाम अहमद बिन हंबल का भी है। (इब्ने असीर स. 170, इमाम पाक और यज़ीद पलीद स. 119 सतर 10)

हज़रत अल्लामा सअ्दुद्दीन तुफ़्ताज़ानी शहर अक़ाइद में यूं फरमाते हैं :

तरजमा : और हक़ यह है कि यज़ीद का हज़रत इमाम हुसैन के क़त्ल पर राज़ी होना और अह्ले बैते नुबुव्वत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एहानत करना उन उमूर में से है जो तवातुरे मानवी के साथ साबित हैं अगरचे उनकी तफ़ासीले आहाद हैं तो अब हम तवक़्क़ुफ़ नहीं

करते। उसकी शान में बल्कि उसके ईमान में अल्लाह की लानत हो उस पर और उसके दोस्तों पर।

और आगे यूं फ़रमाते हैं–

यज़ीद पर लानत भेजना अलल–इत्लाक़ जाइज़ है। इसलिए कि इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के क़त्ल का हुक्म देकर उसने कुफ़्र किया।

अल्लामा इब्ने हजर मक्की यूं फरमाते हैं :

कुछ अजब नहीं कि उस (यज़ीद) के कुफ़्र का फतवा दिया जाए।

हज़रत इमाम अहमद इब्ने हंबल रज़ि अल्लाहु अन्हु से उनके साहबज़ादे हज़रत सालेह ने यज़ीद से दोस्ती रखने या उस पर लानत करने के बारे में पूछा तो हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल ने फरमाया।

तरजमा : बेटा कोई अल्लाह पर ईमान रखने वाला ऐसा भी होगा जो यज़ीद से दोस्ती रखे और मैं उस पर क्यों न लानत करूं जिस पर अल्लाह ने अपनी किताब में लानत की है। मैंने अर्ज़ किया अल्लाह ने अपनी किताब में यज़ीद पर कहां लानत की है। तो फरमाया इस आयत में फ़हल असैतुम अल–आयह कि फिर तुमसे यही तवक़्क़ो है कि अगर तुम्हें हुकूमत मिल जाए तो तुम मुल्क में फसाद बरपा करोगे और क़तअ् रहमी करोगे। ऐसे ही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की है। फिर उनको बहरा और अन्धा कर दिया। फिर इमाम ने फरमाया। बेटा क्या इस क़त्ले हुसैन से बढ़ कर भी कोई फसाद हो सकता है।

इमाम अहमद क़स्तलानी शारह बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं:

तरजमा : और बाज़ उलमा ने यज़ीद पर लानत का इत्लाक़ किया है जैसा कि अल्लामा सअ्दुद्दीन तुफ़्ताज़ानी का यज़ीद पर लानत करना नक़ल किया गया है इसलिए कि जब उसने इमाम हुसैन के क़त्ल का हुक्म दिया था वह काफिर हो गया था और जम्हूर उलमा उस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि जिसने इमाम को क़त्ल किया और जिसने क़त्ल का हुक्म दिया और जिसने उसकी इजाज़त दी और जो उनके क़त्ल पर राज़ी हुआ उस पर लानत करना जाइज़ है। और हक़ बात यही है कि

यज़ीद का इमाम के क़त्ल पर राज़ी होना और उस पर ख़ुश होना और अह्ले बैते नुबुव्वत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तौहीन करना तवातुरे मानवी के साथ साबित हो चुका है। अगरचे उसकी तफ़ासील आहाद हैं पस हम नहीं तवक़्क़ुफ़ करते उसकी शान में। बल्कि उसके ईमान में अल्लाह की लानत हो उस पर और उसके दोस्तों और मददगारों पर।

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती यूं रक़मतराज़ हैं :

तरजमा : अल्लाह की लानत हो इमाम हुसैन के क़ातिल इब्ने ज़्याद और यज़ीद पर इमाम करबला में शहीद हुए और आपकी शहादत का क़िस्सा तवील है। क़ल्ब उसके ज़िक्र का मुतहम्मिल नहीं हो सकता। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा)

क़ातिलाने इमाम हुसैन का इबरतनाक अंजाम यज़ीद की भयानक मौत का मन्ज़र!

हाकिम ने हज़रत सैय्यदना इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की है :

तरजमा : यानी अल्लाह ने अपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वही भेजी कि मैंने यहिया इब्ने ज़करिया के एवज सत्तर हज़ार को मारा और ऐ महबूब आपके नवासे के एवज सत्तर हज़ार और सत्तर हज़ार यानी एक लाख चालीस हज़ार मारूंगा।

यज़ीद एक ऐसे ला इलाज मरज़ में मुब्तला हो गया था जिसकी वजह से उसकी मुंह से बदबू बहुत तेज़ आती थी। उसकी ज़ुबान और तालू में कीड़े पड़ गये थे। जिसकी वजह से उसके घर वाले बेचैन रहते थे। एक दिन रूम से एक आतिश परस्त हकीम बुलाया गया। हकीम ने यज़ीद की नब्ज़ पर हाथ रखा तो उसने बरजसता कहा कि यह तो ला इलाज बीमारी है। तुम जंगल की सैर किया करो। यज़ीद ने फौरन अपने टट्टू सिपाहियों को हुक्म दिया कि फौरन ज़ंगल की सैर को

चलो। सारे सिपाही फौरन तैयार हो गये और जंगल में जा पहुंचे। वहां एक ख़ूबसूरत हिरन नज़र आया यज़ीद ने उसका पीछा किया। हिरन कुछ दूर जा कर ग़ायब हो गया। जब यज़ीद मायूस हो कर वापस होने लगा तो अचानक एक आग की दीवार ज़ाहिर हुई जिसने यज़ीद को चारों तरफ़ से घेर लिया।

रिवायतों में है कि वह सहरा जहन्नम का था जिस जगह जहन्नमियों को क़्यामत तक अज़ाब दिया जाता है। जब यज़ीद की फौज तलाश करते हुए वहां पहुंची तो एक ग़ैबी आवाज़ आई कि यज़ीद जहन्नम के एक दलदल में जा फंसा।

जो आग और सांप और बिच्छुओं से पुर है। जब सिपाहियों ने यह सुना तो अपने–अपने सरों पर ख़ाक डालते हुए दमिश्क़ की राह ली और फरार हो गये।

यज़ीद की हुकूमत कुल तीन साल आठ माह थी। 64 हिजरी में मरवान ने यज़ीद की बीवी से निकाह कर लिया मगर किसी बात पर झगड़ा हो जाने से उस औरत ने मरवान को क़त्ल करवा दिया।

एक बात का ख़ुलासा

बाज़ लोगों का यह ख़्याल है कि यज़ीद शहादते इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु से बरी है और यज़ीद ने क़त्ल करने के लिए नहीं कहा था। बल्कि इब्ने ज़्याद ने क़त्ल करवाया है।

ग़ौर तलब बात

यज़ीद की मौत के बाद इब्ने ज़्याद कूफ़ा से शाम को रवाना हुआ तो रास्ते में वह सवारी पर किसी गहरी सोच में था। उसके रफ़ीक़े सफर मुसाफिर इब्ने शुरैह ने कहा कि क्या आपको नींद आ रही है? इब्ने ज़्याद ने कहा नहीं मैं कुछ सोच रहा था। मुसाफिर बिन शुरैह ने कहा मैं बताऊं आप क्या सोच रहे थे। इब्ने ज़्याद ने कहा बताओ। मुसाफिर बिन शुरैह ने कहा :

तरजमा : आप अपने दिल में कह रहे थे कि ऐ काश मैंने इमाम हुसैन को क़त्ल न किया होता इब्ने ज़्याद ने कहा :

जहां तक मेरे इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु को क़त्ल करने का तअल्लुक़ है तो वह इसलिए था कि यज़ीद ने मुझे हुक्म दिया था कि मैं उनको क़त्ल कर दूं वरना वह मुझे क़त्ल कर देगा। तो मैंने उनके क़त्ल को इख़्तियार किया। (इब्ने असीर स. 55, इमाम पाक और यज़ीद स. 146)

एक हैरत अंगेज़ वाक़या

ख़लीफ़ा हारून रशीद ने एक मरतबा अपने वज़ीर से कहा कि उलमा में से किसी ऐसे आलिम को मेरे पास लाओ जिसने कोई हैरत अंगेज़ बात सुनी हो या बचश्म ख़ुद देखा हो। वज़ीर उस वक़्त एक–एक आलिम के पास गया और पता लगाना शुरू किया लेकिन कोई ऐसा न मिला जो उसके मक़्सद को पूरा कर सके।

वज़ीर को ख़्याल आया कि इसी शहर में एक आलिमा और ज़ाहिदा ख़ातून भी रहती हैं चल कर वहां क़िस्मत आज़माई की जाए। चुनांचे वज़ीर उनके पास पहुंचा उस औरत ने वज़ीर के सवाल करने से पहले ही फरमाया कि फ़लां जगह पर एक ऐसा आदमी है जिससे तू अपना मक़्सद हासिल कर सकता है। जब वज़ीर उस आरिफ़ा के बताए हुए पते पर पहुंचा तो क्या देखता है कि वहां एक शख़्स मौजूद है जिसके न हाथ है न पैर न आंखें, बिल्कुल अपाहिज है। वज़ीर ने सोचा कि कहीं ख़ातून ने मज़ाक़ तो नहीं फरमाया फिर वज़ीर ख़ातून के पास लौट कर आया और सारी कैफ़ियत बयान की। आरिफ़ा ने फरमाया कि ऐ वज़ीर बादशाह को उसके हाथ पैर आंख से क्या मतलब काम ज़बान से है। ऐ वज़ीर तू उस शख़्स को बादशाह के पास ले जा। इसलिए कि वह एक अजीब बात जानता है। चुनांचे वज़ीर उस शख़्स को डोली में बिठा कर बादशाह के पास ले गया।

मामून रशीद ने पूछा ऐ शख़्स तो पैदाइशी अपाहिज है या किसी हादसे में हुआ है। उस बूढ़े ने जवाब दिया कि ऐ बादशाह यह एक हादसे का नतीजा है।

मैं एक मालदार ताजिर था मेरे पास एक बहरी जहाज़ भी था जिसके ज़रिए मैं दूसरे ममालिक में तिजारत करता था। एब बार मैंने जहाज़ पर माल लादा, एक हज़ार मुसलमानों को भी साथ लिया और रवाना हुआ। जहाज़ अचानक एक चट्टान से टकरा कर टुक्ड़े हो गया। सब लोग डूब गये। मैंने एक तख़्ते का सहारा लिया और एक ज़मीन पर जा उतरा। उस ज़मीन का रंग पीला था। मैंने वहां दो रकअत नमाज़ पढ़ी फिर निगाह दौड़ाई, दूर एक मकान नज़र आया। क़रीब गया तो देखा कि एक वसीअ् महल आबाद है। सामने एक हौज़ साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पानी से भरा हुआ है, उसके ऊपर एक शख़्स को फांसी पर लटकाया गया है। उसके सर पर लकड़ियां जल रही हैं और वह शख़्स चिल्ला–चिल्ला कर कहता है कि है कोई जो अल्लाह के नाम पर एक घूंट मुझे पानी पिला दे।

मुझे तरस आ गया मैंने चाहा कि उसे पानी पिला दूं ग़ैब से एक आवाज़ आई ऐ अल्लाह के बन्दे तू अल्लाह के दुश्मन को पानी पिलाएगा। यह सुन कर मैं डर गया और महल में दाख़िल हो गया। महल के अन्दर एक बहुत बड़ा गड्ढा देखा जिसमें आग ही आग भरी हुई थी। उसमें बहुत सारे लोग जल रहे थे। और पुकार रहे थे कि है कोई कि अल्लाह के नाम पर मुझे उस आग से निकाल दे। मैंने चाहा कि निकाल दूं फिर एक आवाज़ आई कि ऐ शख़्स तू नहीं मानता है। हमने तुझे यह सज़ा दी कि तेरे हाथ, पैर, आंख ख़त्म हो जाएं। फिर आवाज़ आई कि चाहे यह अज़ाब बर्दाश्त कर, चाहे जहन्नम को पसन्द कर। मैंने कहा मुझे यही अज़ाब दिया जाए।

फिर मैंने पूछा कि यह कौन लोग हैं और कौन सी सज़ा में गिरफ़्तार हैं। जवाब मिला कि लटकने वाला यज़ीद है। बाक़ी उसके तमाम मददगार हैं। क़्यामत तक इसी तरह इस अज़ाब में मुब्तला रहेंगे। ऐ बादशाह यह उसी का नतीजा है जो तू देख रहा है।

दोज़ख़ का सांप

दोज़ख़ में एक बहुत बड़ा सांप है जिसका नाम शदीद है। हर रोज़ वह सत्तर मरतबा लरज़ता है और उसके जिस्म से ज़हर टपकता है।

अल्लाह तआला उस से इरशाद फरमाता है कि ऐ शदीद तू क्या चाहता है? शदीद अर्ज़ करता है कि ऐ हमारे रब क़ातेलीने इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु को मेरे हवाले कर दे ताकि मैं उन पर अपना ज़हर डालूं। अल्लाह तआला फरमाता है कि ऐ शदीद ठहर क़ातेलीने इमाम को मैं तेरे ही हवाले करूंगा, तू जिस तरह चाहे उन्हें अज़ाब दे।

तरजमा : अल्लामा बैहक़ी व अबू नईम व इब्ने असाकिर व दैलमी हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं। फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का क़ातिल दोज़ख़ के अन्दर एक आग के सन्दूक़ के अन्दर रखा जाएगा। दुनिया के आधे लोगों पर जो अज़ाब अलग–अलग होगा, वह उस पर तन्हा होगा। जहन्नम की ज़ंजीरों से उसके दोनों हाथ और दोनों पैर बंध े रहेंगे, वह जहन्नम में उलटा लटकाया जाएगा। और उस तरह–तरह के अज़ाब होंगे। और वह जहन्नम में हमेशा–हमेशा रखा जाएगा।

मुख़्तार सक़्फ़ी की आमद

क़ातिल ने किस सफ़ाई से पोंछी हैं आस्तीन
वह जानता नहीं कि लहू बोलता भी है

65 हिज. में हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़ीया और मुख़्तार ने ख़ूने इमाम आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु अन्हु का बदला लेना शुरू किया और कहा कि मैं इंशाअल्लाह इसी तरह बनी उमैया और उसके मुआवनीन का ख़ून बहाऊंगा जिस तरह बख़्त नस्र ने यहूदियों का ख़ून बहाया था। (मिरातुल–असरार)

जिस रोज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जंगे तबूक में तशरीफ़

ले गये, उसी रोज़ मुख़्तार कूफ़ा में पैदा हुआ। मुख़्तार के वालिद का नाम उबैदा था और वालिदा का नाम हुलिया था। मुख़्तार के मां–बाप ने मुख़्तार को तमाम उलूम व फ़ुनून पर महारत दे रखी थी। यज़ीद पलीद के मरने के बाद हर चहार जानिब अफ़रा तफ़री का माहौल था। इसी दर्मियान मुख़्तार सक़्फ़ी ख़ूने इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का बदला लेने के लिए निकला। और सबसे पहले मुख़्तार सीधा हज़रत सैय्यदना इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु के पास मदीना पहुंचा और उनकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि हुज़ूर मैं ख़ूने इमाम आली मक़ाम का इंतिक़ाम लेने के लिए निकला हूं, सारे यज़ीदियों को चुन–चुन कर क़त्ल करूंगा। बस आपकी दुआ चाहिए जैसा कि उन्होंने आले रसूल को क़त्ल किया है।

यह सुन कर हज़रत सैय्यदना इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु रोने लगे और फरमाया कि ऐ मुख़्तार अगर वह लोग भाग जाएं तो तू क्या करेगा।

मुख़्तार ने कहा हुज़ूर रब्बे काबा की क़सम अगर वह सांप के सूराख़ में भी छुप जाएं तब भी ख़ूने इमाम का बदला लिए बेग़ैर न छोडूंगा। हज़रत सैय्यदना इमाम ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु से दुआ व इजाज़त लेकर मुख़्तार मदीना से रुख़्सत हुआ और कसीर फौज तैयार किया और हज़रत सैय्यदना मुहम्मद हनफीया की हिमायत में कूफ़ा पहुंचा, यह वही मुहम्मद हनीफ़ा हैं जो हज़रत अली के बेटे हैं।

यज़ीद की क़ब्र

सबसे पहले मुख़्तार ने यज़ीद की क़ब्र खुदवाई उसमें जली हुई हड्डियां निकलीं मुख़्तार ने उन हड्डियों को दोबारा जलवा दिया। उसके बाद मुख़्तार ने हुक्म दिया कि जितने भी लोग करबला में इमाम आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत में शामिल थे उन सबको फौरन ही मेरे रू–ब–रू हाज़िर किया जाए। मुख़्तार का हुक्म सुनते ही कूफ़ा के दरो दीवार लरज़ उठे। मुख़्तार की आंखें ग़ुस्से से सुर्ख़ थीं। मुख़्तार ने ऐलान किया और कहा कि इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के

ख़िलाफ़ तलवार उठाने वाला अगर एक शख़्स भी किसी के घर में मिल गया तो उसकी दीवारें उखाड़ फेंकूंगा और उसकी नस्लों को जला के खाक करवा दूंगा। मुख़्तार ने कहा कि अगर मैं तमाम कूफ़ा वालों को क़त्ल कर दूं तब भी इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के ख़ून के एक क़तरे की क़ीमत अदा नहीं हो सकती।

मुख़्तार ने कहा कि मैं ख़ुदा से अहद कर चुका हूं कि जब तक मुख़्तार की तलवार क़ातिलाने हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु को फ़िन्नार न कर देगी मैं चैन से न बैठूंगा। मुख़्तार ने हुक्म दिया कि सारे लोगों को पकड़–पकड़ कर मेरे सामने हाज़िर किया जाए।

मुख़्तार के इस ख़ौफ़नाक ऐलान से अह्ले कूफ़ा कांप गये और मैदाने करबला में ज़ुल्म व सितम करने वाले यज़ीदी कुत्ते पहाड़ों और जंगलों में छुपने लगे। मगर शायद वह यह नहीं जानते थे कि क़हरे इलाही जब करवट लेता है तो क़ौमे लूत को नीस्त व नाबूद कर देता है, क़ौमे लूत को सफ़्ह–ए–हस्ती से मिटा देता है और बस्तियों की बस्तियां उजाड़ देता है। मुख़्तार की फौज ने हर तरफ़ धावे बोल दिए और क़ातेलीने इमाम की हर जगह तलाश शुरू कर दी। फिर क्या था कि जगह–जगह करबला के ज़ालेमीन पकड़े जाने लगे किसी को पहाड़ की खोह से, किसी को जंगल से, किसी को सहरा से पकड़–पकड़ कर मुख़्तार के सिपाही लाने लगे और मुख़्तार सक़्फ़ी के दरबार में पेश करने लगे।

शिम्र का अंजाम

मुख़्तार के सामने सबसे पहले शिम्र पेश किया गया। यह वही बदबख़्त है, जिसने हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की गर्दन पर तल्वार चलाई थी और शहीद किया था। इमाम पाक की शहादत के बाद एक गांव में भाग गया था और जा कर एक झाड़ी में छुप गया था। मुख़्तार के जासूसों ने उसे पकड़ कर मुख़्तार के दरबार में पेश किया। शिम्र मारे ख़ौफ़ के कांपने लगा। मुख़्तार ने गरजते हुए शिम्र से कहा ओ नाबकार तुझे ज़रा भी ग़ैरत न आई तूने अपने नापाक

हाथों से सैय्यदा के लाल को ज़िबह कर दिया और काबा की दीवार ढा दिया, चिरागे हरम को बुझा दिया। तेरा जिस्म जला कर राख हवा में उड़ा दी जाए। तब भी इमाम आली मक़ाम के ख़ून का बदला नहीं हो सकता मुख़्तार ने जलाल में आकर तलवार उठाई। शिम्र ने कहा कि मैं प्यास से बेचैन हूं, एक घूंट पानी पिला दे। मुख़्तार ने कहा ओ नाबकार! तू वह वक़्त याद कर जब तूने अह्ले बैत पर बाइस हज़ार सिपाहियों का पहरा बिठा दिया था।

अह्ले हरम और उनके बच्चे बच्चियां तीन रोज़ पानी के एक-एक क़तरे को तरस गये। तुझे हरगिज़-हरगिज़ पानी नहीं मिल सकता जहन्नम का खौलता हुआ पानी तेरे इंतज़ार में है। यह कहकर मुख़्तार ने उसके हाथ पैर काट डाले और उसके सर को जिस्म से जुदा कर दिया और नअ्श को कुत्तों के सामने फेंक दिया। (शामे करबला)

हुरमला का अंजाम

अभी शिम्र की लाश तड़प ही रही थी कि इतने में शोर हुआ कि हुरमला पकड़ कर लाया गया है यह वही नाबकार है जिसने हज़रत अली असग़र के गले पर तीर मारा था। जब हुरमला मुख़्तार के रू-ब-रू पेश किया गया तो मुख़्तार की निगाहों में करबला का मन्ज़र घूमने लगा। मुख़्तार मारे ग़ज़ब के कांपने लगा। और जल्लाद को हुक्म दिया कि पहले हुरमला के गले पर तीरों की बारिश की जाए और आख़िरी तीर ऐसा मारो कि गले के आर पार हो जाए। चुनांचे तीरों की बारिश से हुरमला हलाक हो गया और जहन्नम जा पहुंचा। लाश कुत्तों के सामने डाल दी गई। (तबरी)

ख़ौली का अंजाम

हुरमला के बाद ख़ौली गिरफ़्तार करके लाया गया। यह वही ज़ालिम और बेरहम है जिस नाबकार ने हज़रत इमाम आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु अन्हु के सीने में बरछी मारी थी और सरे अक़्दस को तने पाक से जुदा

करके नोके नेज़ह पर बुलन्द करके नाचा था। जब मुख़्तार के सामने पकड़ कर लाया गया तो मारे ख़ौफ़ के कांपने लगा। उसे देखते ही मुख़्तार की आंखें सुर्ख़ हो गईं। और मुख़्तार के सीने में ग़ज़ब की आग भड़क उठी। मुख़्तार ने जल्लाद को हुक्म दिया कि इस लईन के दोनों हाथ काट डालो। जब उसके दोनों हाथ काट डाले गये तो दोनों पांव काटने का हुक्म दिया, तक्लीफ़ की शिद्दत से वह ज़मीन पर तड़पने लगा। मुख़्तार ने कहा तेरी लगाई हुई आग मुसलमानों के सीनों में भड़कती रहेगी। अभी तेरे आमाल की सज़ा काफी नहीं है। उसके बाद मुख़्तार ने ख़ौली के घर वालों को इकट्ठा किया। और उन्हीं के सामने उस नाबकार को तड़पा कर क़त्ल कर दिया और फिर उसे ज़िन्दा जला दिया। मुख़्तार उस वक़्त तक उसकें लाश के पास खड़ा रहा जब तक उसकी लाश जल कर खाक न हो गई। (तारीखे़ तबरी, स. 502, अल–हुसैन स. 165)

अमर सअद का अंजाम

ख़ौली के बाद अमर सअद पेश किया गया। यह वही नाबकार है जिसने करबला में अह्ले बैत पर पानी बन्द किया था और नन्हें–नन्हें बच्चों को पानी के लिए तड़पाया था। यह बदबख़्त जब मुख़्तार के सामने हाज़िर किया गया तो उस पर नज़र पड़ते ही मुख़्तार की आंखों से चिंगारियां बरसने लगीं।

मुख़्तार ने कहा ऐ दुश्मने आले रसूल बता तुझे क्या सज़ा दूं तूने ही तो अह्ले बैत पर पानी बन्द किया था। उसने कहा कि उसका ज़िम्मेदार इब्ने ज़्याद है। मैंने तो सिर्फ़ हुक्म की तामील की थी। यह सुन कर मुख़्तार की आंखें सुर्ख़ हो गईं। इसी दर्मियान ख़बर मिली कि सअ्द का बेटा हफ़्स जो करबला में इमाम पाक के ख़िलाफ़ अपने बाप की मदद कर रहा था गिरफ़्तार करके लाया गया। मुख़्तार ने हुक्म दिया कि उसे फौरन मेरे सामने हाज़िर किया जाए। जब वह मुख़्तार के सामने लाया गया तो मुख़्तार ने जल्लाद को हुक्म दिया कि इब्ने सअद के

सामने ही उसके बेटे का सर तन से जुदा कर दो ताकि उस नाबकार को मालूम हो जाए कि इमाम पाक के दिल पर हज़रत अली अकबर और हज़रत अली असग़र की तड़पती हुई लाश देख कर क्या गुज़रती थी जल्लाद ने जूं ही उसके बेटे की गर्दन पर तलवार चलाई इब्ने सअद चिल्ला उठा। अभी वह अपना सर पीट ही रहा था कि मुख़्तार का हुक्म हुआ कि इब्ने सअद की भी गर्दन मार दी जाए। उस नाबकार की गर्दन को जल्लाद ने उड़ा दिया और दोनों बाप बेटे का सर मुख़्तार ने हज़रत मुहम्मद हनफीया रज़ि अल्लाहु अन्हु के पास भेज दिया।

(तारीख़े तबरी, स. 507, नक़्शे करबला, स. 70)

हुर्रह इब्ने मुनक़िद

इस बदबख़्त ने हज़रत अली अकबर रज़ि अल्लाहु अन्हु के सीने में नेज़ह मारा था। जब मुख़्तार के सामने पेश हुआ तो मुख़्तार ने उस मलऊन के कान और नाक काट लिए और उसकी आंखें निकाल लीं। उसके बाद उस शैतान की गर्दन मार दी गई और मलऊन को आग में जला दिया गया।

ज़्याद इब्ने रिफ़ाह

इसी मरदूद ने हज़रत अब्बास अलमदार रज़ि अल्लाहु अन्हु की आंख पर तीर मारा था। मुख़्तार ने उस मरदूद की दोनों आंखें फोड़ दीं और गर्दन मार दी।

सअूद इब्ने मूद

इसी ने हज़रत क़ासिम रज़ि अल्लाहु अन्हु को शहीद किया था। जब गिरफ़्तार करके मुख़्तार के रू–ब–रू पेश किया गया तो मुख़्तार ने गुस्से में आकर हुक्म दिया कि इस मलऊन को उलटा लटका दिया जाए और उसके एक–एक आज़ा काट दिए जाएं। चुनांचे जल्लाद ने ऐसा ही किया।

रियाह इब्ने कुतुब शबानी

इसी मलऊन ने हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा के सर से चादर उतार दी थी। मुख़्तार ने उस के दोनों हाथ कटवा दिए और उसे क़त्ल करा दिया।

बशीर इब्ने लूत

इसी लईन ने हज़रत सैय्यदा उम्मे कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा का मक़्नआ़ उतारा था और बद ज़बानी की थी। मुख़्तार ने उसकी ज़बान काट दी और क़त्ल करा दिया।

इब्ने ज़्याद का अंजाम

यह वही बदबख़्त है जिस पर रहती दुनिया हमेशा लानत भेजती रहेगी। यह पहले बसरा का गवर्नर था बाद में बसरा कूफ़ा दोनों का गवर्नर बना दिया गया। इसी नाबकार के हुक्म से हज़रत सैय्यदना इमाम मुस्लिम रज़ि अल्लाहु अन्हु और उनके दोनों बच्चों की शहादत हुई। और सरकारे इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु और आपके अह्ले बैत पर पानी बन्द किया गया और अह्ले हरम को तमाम तक्लीफ़ें पहुंचाई गईं।

मुख़्तार ने इब्ने ज़्याद ख़बीस के मुक़ाबले पर हज़रत इब्राहीम मालिक उश्तुर को तीस हज़ार फौज देकर भेजा। मूसल से पच्चीस किलोमीटर की दूरी पर इब्ने ज़्याद और हज़रत इब्राहीम मालिक उश्तुर की फौजों का मुक़ाबला हुआ। हज़रत इब्राहीम की फौज ग़ालिब आई इब्ने ज़्याद की फौज भागने लगी। हज़रत इब्राहीम ने हुक्म दिया कि जो हाथ आ जाए उसे ज़िन्दा न छोड़ा जाए। चुनांचे उस लड़ाई में बहुत सारे यज़ीदी क़त्ल कर दिए गये और 67 हिज. की ठीक दसवीं मुहर्रम को इब्ने ज़्याद मलऊन को दरियाए फ़ुरात के किनारे हज़रत इब्राहीम की फौज ने क़त्ल किया। हज़रत इब्राहीम ने इब्ने ज़्याद का सर मुख़्तार के पास कूफ़ा भेज दिया।

जब मुख़्तार के दरबार में इब्ने ज़्याद का सर पहुंचा मुख़्तार ने सज्द-ए-शुक्र अदा किया। फिर मुख़्तार ने अहले कूफ़ा को जमा किया और इब्ने ज़्याद का सर उसी जगह रखवाया जहां इमाम पाक का सरे पाक उसने रखवाया था।

मुख़्तार ने अहले कूफ़ा को मुख़ातब करके कहा देख लो हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के ख़ूने नाहक़ ने इब्ने ज़्याद को न छोड़ा आज उस नामुराद का सर कितनी ज़िल्लत के साथ यहां रखा हुआ है। छेः साल हुए आज वही तारीख़ है, वही जगह है। इतने में एक ख़ूंख़्वार ज़हरीला काला सांप नुमूदार हुआ। लोग उसके ख़ौफ़ से भागने लगे। वह तमाम सरों में घूमा और इब्ने ज़्याद के सर के पास आया और उसकी नाक में घुस गया और थोड़ी देर के बाद उसके मुंह से निकला इसी तरह तीन बार सांप आता और जाता रहा। फिर वह सांप ग़ायब हो गया। (तिर्मिज़ी जिल्द 2, स. 794, सवानेह करबला, स. 142)

फिर मुख़्तार ने तमाम इराक़ पर क़ब्ज़ा कर लिया और जितने लोग क़त्ले इमाम में शामिल थे एक-एक को पकड़वा कर क़त्ल कर डाला और यज़ीदियों का ख़ातमा कर दिया। इस तरह अल्लाह का वादा पूरा हो गया। एक लाख चालीस हज़ार लोग क़त्ले इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के बदले में मारे गये।

अल्लामा सुयूती मुहाज़िरात में फरमाते हैं कि एक साल कूफ़ा में चेचक हुई उसमें डेढ़ हज़ार लोग अन्धे हो गये, जो करबला में शरीक थे। (मुहाज़िरात)

जिसने इमाम पाक के सर को अपने घोड़े की गर्दन में लटकाया था

यह अल्लामा इब्ने हजर मक्की अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि यज़ीद के लश्कर का एक सिपाही जिसने हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के सरे अनवर को अपने घोड़े की गर्दन में लटकाया था।

कुछ ही दिनों के बाद उसका चेहरा काला हो गया। लोगों ने उस से उसका सबब पूछा कि तू इतना ख़ूबसूरत था इतना काला कैसे हो गया। उसने कहा जिस रोज़ मैंने इमाम पाक के सर को अपने घोड़े की गर्दन में लटकाया था, उसी रोज़ से हर रात को दो शख़्स मेरे पास आते हैं और मुझे पकड़ कर ऐसी जगह ले जाते हैं जहां भड़कती हुई आग होती है। फिर मुझे मुंह के बल उस आग में डाल कर निकालते हैं इसी वजह से मेरा मुंह काला हो गया है। उसके बाद वह बहुत बुरी मौत मरा। (सवाइके़ मुहरिक़ा)

शहादत इमाम की तमन्ना करने वाले का अंजाम

एक बुढे ने बयान किया कि मैंने हुज़ूर सललल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि आपके सामने एक तश्त रखा हुआ है। जो ख़ून से भरा हुआ है और लोग आपके सामने पेश किए जा रहे हैं और आप इस ख़ून से उनकी आंखों में लगा रहे हैं। यहां तक कि मैं भी आपके सामने हाज़िर किया गया तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सललल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं तू क़त्ले हुसैन के वक़्त मौजूद नहीं था तो सरकार ने इरशाद फरमाया तो उसकी तमन्ना तो रखता था कि हुसैन क़त्ल हों फिर आपने मेरी तरफ़ अपनी उंगली से इशारा किया तो मैं अन्धा हो गया। (सवाइके़ मुहरिक़ा)

अब्दुल–मलिक इब्ने उमरैशी कहते हैं कि मैंने कूफ़ा के दारुल–इमारत में हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का सरे मुबारक इब्ने ज़्याद के सामने रखा। देखा उसके बाद उसी जगह उबैदुल्लाह इब्ने ज़्याद का सर मुख़्तार सक़्फ़ी के सामने रखा देखा उसके बाद उसी जगह मुख़्तार का सर हज़रत मुसअब बिन ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु अन्हु के सामने रखा देखा।

कहते हैं कि जब मैंने अब्दुल–मलिक बिन मरवान से उसका तज़्किरा किया तो वह कांपने लगा और फौरन ही दारुल–इमारात से बाहर निकल खड़ा हुआ और दारुल–इमारात की जानिब देख कर कहने लगा कि अब इस मकान को पांचवां सर देखना नसीब न हो। उसके बाद दारुल–इमारात को मिस्मार करा दिया।

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब के आख़िरी अय्याम

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने मदीना मुनव्वरा में क़याम करके अज़्मे मुसम्मम के साथ अपने जिहाद के सिलसिले जारी रखा और अपने पैग़ाम की इशाअत, अपने मक़्सद की तबलीग़ में मस्रूफ़ लोगों के दिलों में इंतिक़ामे हुसैन का जज़्बा पैदा करती रहीं।

मदीने का गवर्नर डरा कि कहीं आपके मदीना में रहने से मक्का व मदीना दोनों शहरों में बग़ावत न फूट पड़े। कहीं यह चिंगारी भड़कती हुई आग न बन जाए। यज़ीद का हुक्म पहुंचा कि जनाब ज़ैनब को मदीना से कहीं और मुन्तक़िल कर दिया जाए। चुनांचे जनाब ज़ैनब को मदीने में न रहने पर मज्बूर कर दिया गया।

आप अपने शौहर के हमराह दमिश्क़ तशरीफ़ ले गईं। बाक़ी ज़िन्दगी के तमाम अय्याम हज़रत सैय्यदा ज़ैनब ने दमिश्क़ में गुज़ारे और वहीं इंतिक़ाल फरमाया। दमिश्क़ में आपका रौज़ा ज़ियारतगाह अवाम व ख़्वास है।

आज शाम का शहर सुबह से शाम तक हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा के नाम से गूंज रहा है। बेशुमार ज़ाइरीन की आम्दो रफ़्त का मरकज़ बना हुआ है।

आप मज़ारे मुक़द्दस पर बुलन्द कंगूरों के साथ एक परचम लहरा रहा है और यह ऐलान कर रहा है कि यह रसूले अख़िरुज़्ज़मां सलल्लाहु अलैहि व सल्लम की उस नवासी का मरक़द है जिसने कूफ़ा और शाम को फतह किया। और आज तक लोगों के दिलों पर उनकी हुकूमत बाक़ी है। उस शहज़ादी के सामने सतवते शाही के सर झुकते हैं और इलम व इरफ़ान के बड़े से बड़े उलमा व मुहद्देसीन जब्बा साई करते हैं। और अवाम व ख़्वास सभी के दामन मुरादों से भरते जाते हैं।

उठा कर एक क़दम भी कोई ज़ालिम चल नहीं सकता
हर एक मज़्लूम के रस्ते की ज़िम्मेदार है ज़ैनब
सफर करती हुई बैअ़त कि जिसने पैर काटे हैं
वह जंगे करबला की आखिरी तल्वार है ज़ैनब

शोहदाए करबला का ख़ून रंग लाया और सलातीने बनी उमैया की हुकूमत ख़ाक में मिल गई

जब हुकूमत बनी उमैया से निकल कर बनू अब्बास के पास आ गई। उस वक़्त बनी उमैया के एक सन रसीदा बुज़ुर्ग से जो अपने ख़ानदान की सियासत और वजूहे ज़वाल से बख़ूबी वाक़िफ़ था, किसी ने उस से बनी उमैया के ज़वाल के अस्बाब पूछे तो उसने कहा कि हम ऐश व इशरत में ऐसे मुनहमिक हो गये कि अपने फराइज़े हुकूमत को बिल्कुल भूल बैठे। हमने अपनी रिआया पर ज़ुल्म व जौर शुरू किया तो वह हमारे इंसाफ़ से मायूस हुए और हम से छुटकारा हासिल करना चाहा।

काश्तकारों पर हमने लगान बहुत ज़्यादा शुरू कर दिया। जिसकी वजह से वह ज़मीनों को छोड़ कर हिजरत कर गये। इस तरह हमारी ज़मीनें वीरान हो गईं और ख़ज़ाने खाली रह गये। हमने अपने वज़ीर पर भरोसा किया, उन्होंने अपने फ़वाइद को हुकूमत के मुनाफ़े पर मुक़द्दम रखा। और हमारे हुक्म के बेग़ैर जो चाहा हुक्म जारी कर दिया और हमको उससे बेख़बर रखा। उन्होंने फौजो की तन्ख़्वाहें देर में देना शुरू कीं, इस वजह से वह हमारे वफ़ादार न रहे और जब हमारे दुश्मनों ने उन्हें अपने साथ होने की दावत दी उन्होंने उसे ख़ुशी से क़बूल किया। और हमारे मुक़ाबले में उनकी मदद की। हम अपने दुश्मनों के मुक़ाबले पर बढ़े मगर अपने इंसाफ़ की कमी की वजह से उनका कुछ बिगाड़ न सके। हमारे ज़वाल की सबसे बड़ी वजह मुल्क व हालात से बेख़बरी हुई। (बहवाला तारीख़ बनू उमैया)

हज़रत मख़्दूम जहानियां जहां गश्त शैख़ जलालुद्दीन बुख़ारी क़ुद्दिसा सिर्रुहू अपनी किताब "ख़ज़ान–ए–जलाली" के सत्तरहवें बाब में लिखते हैं कि सलातीने बनू उमैया ने फ़रज़न्दाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल किया और हज़रत अली और हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु पर लानत भेजते थे। और रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अह्ले बैत पर क़िस्म–क़िस्म के मज़ालिम ढाए। पस मैं उनको दुश्मन जानता हूं और उनको मुसलमान नहीं कहता, बल्कि मुनाफ़िक़ों में शुमार करता हूं। (ख़ज़ान–ए–जलाली, बाब 17, मिरातुल–असरार, स. 203)

सलातीने बनी उमैया की कुल मुद्दते हुकूमत एक हज़ार माह है। क्योंकि उन्होंने नव्वे साल ग्यारह माह तीस दिन हुकूमत की है। और किस बादशाह ने कितने दिन हुकूमत की और किस बादशाह के दौरे हुकूमत में किस इमाम की शहादत हुई है, उसकी तफ़्सील यूं है :

अस्मार सलातीन बनू उमैया	मुद्दते हुकूमत	किस इमाम की शहादत हुई
1. मुआविया बिन अबी सुफ़ियान	20 साल	हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु
2. यज़ीद बिन मुआविया	3 साल 8 माह 14 दिन	इमाम हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु
3. मुआविया बिन यज़ीद	1 माह 11 दिन	
4. मरवान बिन हुक्म	8 माह 5 दिन	
5 अब्दुल मलक बिन मरवान	21 साल 1 माह 20 दिन	
6. वलीद बिन अब्दुल मलक	21 साल 1 माह 20 दिन	इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु अन्हु
7. सुलेमान बिन अब्दलु मलक	2 साल 6 माह 15 दिन	
8. उमर बिन अब्दुल अज़ीज़	2 साल 5 माह 5 दिन	
9. यज़ीद बिन अब्दुल मलक	4 साल 31 दिन	
10. हश्शाम बिन अब्दुल मलक	19 साल 9 माह 9 दिन	हज़रत इमाम बाक़र रज़ियल्लाहु अन्हु
11. वलीद बिन यज़ीद बिन अब्दुल मलक	1 साल 3 माह	
12. यज़ीद बिन वलीद बिन अब्दुल मलक	2 माह 10 दिन	

असमाए सलातीन बनू अब्बासिया	किस इमाम की शहादत हुई
खलीफ़ा अबू मंसूर जाफ़र	हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु
हारुन रशीद	हज़रत इमाम मूसा काज़िम रज़ियल्लाहु अन्हु
मामून रशीद	हज़रत इमाम अली रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु
मअतसम बिल्लाह	हज़रत इमाम तक़ी रज़ियल्लाहु अन्हु
मुन्तज़िर बिन मतवक्कुल	हज़रत इमाम मुहम्मद नक़ी रज़ियल्लाहु अन्हु
खलीफ़ा मअतमद	हज़रत इमाम हसन असकरी रज़ियल्लाहु अन्हु

मक़सदे करबला और इमाम हुसैन का आख़िरी पैग़ाम

दुनिया में इस्लाम की तहफ़्फ़ुज़ व बक़ा के लिए जितनी भी क़ुरबानियां दी गई हैं, उनमें सबसे अहम सैय्यदुशोहदा सरकार इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की क़ुरबानी है। शहादते इमाम हुसैन न बेमक़्सद था न कोई इत्तिफ़ाक़ी हादसा था, न ही दो शहज़ादों की जंग थी।

इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का मक़्सद तख़्त व ताज का हुसूल न था। बल्कि इन उसूलों की सच्चाई का एक बार फिर दुनिया को मुशाहिदा कराना था जो इस्लामी मुआशरे के लिए इस ऐलान के साथ मुक़र्रर किए गये थे कि उनमें कोई तब्दीली नहीं होगी। इस्लाम के सच्चे होने का मुशाहिदा कराना लाज़मी था कि कोई भी हो किसी को यह हक़ हासिल नहीं है कि वह इस्लाम के उसूलों में तब्दीली करे और क़ुरआन व सुन्नत का मज़ाक़ उड़ाए और इस्लामी इक़्तिदार को पामाल करे। यज़ीद उसका मुर्तकिब हो रहा था। अगर यज़ीद का किरदार उसकी ज़ात तक महदूद होता और उससे इज्तिमाई ज़िन्दगी और इस्लाम मुतअस्सिर न होता तो शायद उसका अमल इतना क़ाबिले गिरफ़्त न होता। लेकिन मसनदे ख़िलाफ़त पर बैठना, उसकी तक्ज़ीब करना और जो दीन अल्लाह के प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फैलाया था उसकी बुनियाद यज़ीद ढा देने के दरपे था। इसी

लिए वारिसे रिसालत उठ खड़ा हुआ और फ़रमाया : वारिसे रिसालत के होते हुए इस्लाम का मज़ाक़ नहीं उड़ाया जा सकता। आज दुनिया का कौन शख़्स है जो नामे हुसैन से वाक़िफ़ नहीं। हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की जंग किसी ओहदे की ख़ातिर न थी, उन्होंने यह जिहाद सिर्फ़ इस्लाम को बचाने के लिए किया था। इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अपने अमल और किरदार से ख़ुदा परस्ती के उसूलों की सच्चाई का मुशाहिदा कराया ताकि इंसानी मुआशरे में कोई शख़्स न ज़ालिम बन सके, न ही ज़ुल्म के आगे सर झुकाने के लिए तैयार हो सके। उनका मक़सद इस्लाम का तहफ़्फ़ुज़ था। वाक़ए करबला हमारे लिए एक ऐसे नूर की हैसियत रखता है जिससे हम रहनुमाई हासिल करके अपने किरदार व अमल को रुश्द व हिदायत की तरफ़ ले जा सकते हैं और बुराईयों को छोड़ कर अच्छाइयां को अपना सकते हैं। बअ़्दे करबला जितनी भी शहादतें हक़ व बातिल की हुईं या हो रही हैं या होती रहेंगी, यह सब जुज़्वे करबला हैं। इसलिए कि हुसैनी और यज़ीदी दोनों नज़्रियात क़्यामत तक चलते रहेंगे। और दोनों नज़्रियात की लड़ाई हमेशा जारी रहेगी। दोनों लश्कर हमेशा थे, हैं और रहेंगे। एक का काम निज़ामे हक़ को दरहम बरहम करना है, एक का काम उसकी हिफ़ाज़त करना है। ऐसा नहीं है कि करबला 60 हिज. में ख़त्म हो गया। बल्कि हुसैनी और यज़ीदी दोनों नज़्रियात की लड़ाई सुबहे क़्यामत तक जारी रहेगी। जिसने भी इमाम हुसैन के नज़्रियात की मदद की समझो कि वह लश्करे हुसैनी में से है और जिसने यज़ीद के नज़्रियात की मदद की, वह लश्करे यज़ीद में से है। आप किस जमाअत से हैं, आप ख़ुद यज़ीद के नज़्रियात की मदद की, वह लश्करे यज़ीद में से है। आप किस जमाअत से हैं, आप ख़ुद फ़ैसला कर सकते हैं।

आज भी दोनों जमाअत मौजूद हैं। सरकारे इमामे हुसैन की जमाअत अमन व शान्ति का पैग़ाम देती है और यज़ीद की जमाअत फ़ित्ना व शर, फ़साद व दहशतगर्दी को हवा दे रही है। जिससे इंसानियत के अमन व शान्ति का शीराज़ा बिखर जाए।

नामे करबला सुनते ही हर शख़्स के दिल में यह तमन्ना होती है कि काश मैं भी करबला में मौजूद होता, अगर होता तो हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की मदद करता और उनके मिशन को आगे बढ़ाता

मुसलमानो! अगरचे आप करबला में न थे मगर यह लड़ाई क़यामत तक चलती रहेगी। अभी करबला की लड़ाई ख़त्म ही कहां हुई, लड़ाइयां तो इसी तरह जारी हैं और जारी रहेंगी।

यज़ीद का मिशन था

1. ज़िना खुल्लम खुल्ला किया जाए।
2. शराब आम तरीक़े पर पी जाए।
3. नाच गाना आम कर दिया जाए। और उसी में मस्त रहा जाए।
4. मुहरिमात के साथ अय्याशी की जाए।
5. ख़ुदा और उसके रसूल के क़ानून को पामाल कर दिया जाए।
6. मज़्लूमों पर ज़ुल्म किया जाए।

हज़रत इमाम हुसैन का मिशन यह था

कि ज़िना, शराब, जुआ, गाना, नाच से बाज़ रहा जाए। मज़्लूमों पे ज़ुल्म व सितम न किया जाए और अल्लाह और उसके रसूल के क़ानून की हिफ़ाज़त की जाए ताकि अल्लाह के बन्दों में अमन व शान्ति बरक़रार रहे। अह्ले ईमान के लिए शहादते हुसैन अमन का एक अज़ीम पैग़ाम है। लेकिन जब मुहर्रमुल–हराम का महीना आता है तो सारी दुनिया में उम्मते मुस्लेमा के लिए फ़सादात का ख़तरा लाहक़ हो जाता है। जंग और फित्ना व फ़साद का एक अजीब माहौल बन जाता है।

ग़ैरों की नज़र में क़ौमे मुस्लिम एक इस्तेहज़ा बन जाती है। ग़ैरों के नज़्दीक मुसलमान न तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मुत्तफ़िक़ हैं, न सहाबा और अह्ले बैत पर, न उनका कुरआन पर इत्तिफ़ाक़ है, न इस्लाम पर। बल्कि यह तो ऐसी उम्मत है जो अमन पर भी मुत्तफ़िक़ नहीं है।

शहादते इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का पैग़ाम अमली जद्दो जेहद का पैग़ाम है। मुहब्बते इमाम हुसैन और निस्बते इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु को रस्मी न रहने दिया जाए। बल्कि उसे अमल और हकीकत में बदल दिया जाए, उसे हकीकी तौर पर अपनाया जाए। यही निस्बत और तअल्लुक हमारा ओढ़ना और बिछौना हो। इस निस्बत और तअल्लुक को हकीकी ज़िन्दगी बनाने का मतलब यह है कि यह पहचान लिया जाए कि यज़ीदी किरदार क्या है और हुसैनी किरदार क्या है। यज़ीद ने इस्लाम का खुला इंकार नहीं किया था और न ही बुतों की पूजा की थी। मस्जिदें भी मिस्मार नहीं की थीं। वह इस्लाम का नाम लेता था और बैअत भी इस्लाम के नाम पर लेता था। वह यह भी कहता था कि मैं नमाज़ पढ़ता हूं, इस्लाम का खुला इंकार तो अबू लहबी है।

यज़ीदीयत यह है कि इस्लाम का नाम भी लिया जाए और इस्लाम से धोखा भी किया जाए। इस्लाम का नाम लिया जाए और अमानत में ख़्यानत भी की जाए। नाम इस्लाम का लिया जाए और आमरीयत मुसल्लत की जाए। अपने से इख़्तेलाफ़ करने वालों को कुचला जाए और इस्लाम के मुकद्दस नाम को पामाल किया जाए।

यज़ीदीयत इस्लाम से मुनाफ़िक़त और दजल व फ़रेब का नाम है, इस्लामी निज़ाम के साथ धोखा करने और बैतुलमाल को अपने ऐश व इशरत पर ख़र्च करने का नाम है।

रूहे इमाम हुसैन आज हम से पुकार–पुकार कर कह रही है कि मेरी मुहब्बत का दम भरने वालो! मैं दखना चाहती हूं कि मेरी मुहब्बत रस्मी है या हक़ीक़ी।

मैं देखना चाहती हूं कि मेरी मुहब्बत में आज तुम फिर वक़्त के यज़ीदियों को ललकारते हो या नहीं।

रूहे हुसैन देखना चाहती है कि कौन इस्लाम का झण्डा सर बुलन्द करते हुए तन, मन, धन की बाज़ी लगाता है।

कौन है जो मुझ से हक़ीक़ी प्यार करता है। शहादते इमाम हुसैन का सबक़ यह है कि देखो क्या तुम्हारे दौर के हुक्मराने इस्लाम का नाम लेते हैं कि नहीं। कहीं वह इस्लाम की अमानत में ख़्यानत तो नहीं कर रहे हैं।

हुसैनियत का तक़ाज़ा यह है कि जहां–जहां तुम्हें यज़ीदीयत के किरदार का नाम व निशान नज़र आए तो गुलामे हुसैन बन कर यज़ीदीयत के बुतों को पाश–पाश कर दो। उसके लिए ख़्वाह तुम्हें अपना माल, अपनी जान और अपनी औलाद ही क्यों न कुरबान करनी पड़े।

आइए शहादते इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु से दूसरा सबक़ अमन का हासिल करें। हर किसी को यादे हुसैन अपन–अपने तरीक़े से मनाने की इजाज़त होनी चाहिए। हर एक को अज़्मते सहाब–ए–किराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम मनाने का हक़ हासिल होना चाहिए। ताकि यहां अह्ले बैते अत्हार की अज़मत व मुहब्बत के तराने गाए जाएं, सहाब–ए–किराम की अज़्मत के तराने गूंजें।

जिस सरज़मीन पर सहाब–ए–किराम की बेअदबी और गुस्ताख़ी हो, सहाब–ए–किराम को गाली दी जाए या अह्ले बैत पर तअ्न ज़नी हो, इल्ज़ाम तराशी और गुस्ताख़ी हो फिर वहां मुसलमान ज़िन्दा भी रहें तो मुसलमान बेग़ैरत हैं और मुर्दा हैं। ऐसी ज़िन्दगी से मौत बेहतर है।

ऐ ईमान वालो! हर हाल में तारीख़े करबला को अपनी ज़िन्दगी का आईन बना लो। सब्र का वक़्त आए तो सब्र का पैकर बन कर इस्लाम की हिफ़ाज़त करो और जब बातिल का मुक़ाबला हो तो हक़ के साथ डट कर उसका मुक़ाबला करो। और अपनी औरतों, बच्चों व बच्चियों के अन्दर ऐसा इस्लामी सूर फूंक दो कि वह ज़ुल्म की दीवार को उठा कर फेंक दें। मज़्लूमों की मदद और ज़ालिम का मुक़ाबला अपनी ज़िन्दगी का शेवह बना लो। अमन की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए दास्ताने करबला काफी है।

जब हम इस पर अमल पैरा हो जाएंगे तो ज़ालिम ख़ुद ही फना के घाट उतर जाएगा। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा कूफ़ा व शाम के बाज़ारों में नंगे सर व पैर फिराई गईं, क़ैदियों की तरह दरबारों में पेश की गईं, तअ्न व तन्ज़ बर्दाश्त करती रहीं, उन्होंने किसी भी हाल में ज़ालिम के सामने अपनी गर्दन नहीं झुकाई। यज़ीद की सारी हश्मत और बनी उमैया की सलतनत को अपनी फसीह व बलीग़ तक़रीरों से ख़ाक में मिला दिया।

शहादते इमाम हुसैन के बाद काइनाते इंसानी को दो किरदार मिल गये। नम्बर एक यज़ीदीयत जो दहशतगर्दी, क़त्ल व ग़ारतगरी, ख़ूने इंसानी का इस्तेआरा बन गई और हुसैनियत जो अद्ल व अमन, वफ़ा और तहफ़्फ़ुज़े दीने मुस्तफ़ा की अलामत ठहरी।

क़यामत तक हुसैन भी ज़िन्दा रहेगा और हुसैनियत के परचम भी क़यामत तक लहराते रहेंगे। यज़ीद क़यामत तक क लिए मुर्दा है और यज़ीदीयत भी क़यामत तक के लिए मुर्दा है। इमाम हुसैन की रूह रेगे करबला से पुकार रही है। आज हज़रत सैय्यदा ज़ैनब की रूह उजड़े हुए ख़ेमों से हमें सदा दे रही है। आज अली अकबर, अली असग़र के ख़ून का एक एक क़तरा शुहदाए करबला के ख़ून से रंगीन होने वाला फ़ुरात का किनारा हमें आवाज़ दे रहा है कि इमाम हुसैन से मुहब्बत करने वालो! हुसैनियत के किरदार को अपने क़ौल व अमल में ज़िन्दा करो, हर दौर के यज़ीदियों को पहचानो। यज़ीदीयत तुम्हें तोड़ने, तुम्हारे इत्तिहाद को पारा-पारा करने के लिए सरगरमे अमल है और हुसैनियत तुम्हें जोड़ने के लिए सरगरमे अमल है।

हुसैनियत तुम्हें जोड़ने के लिए उख़ुव्वत व मुहब्बत और वफ़ा की अलमबरदार, यज़ीदीयत इस्लाम के उसूलों को मिटाने का नाम हुसैनियत इस्लाम की दीवारों को फिर से उठाने का नाम, यज़ीदीयते क़ौम की अमानत में ख़्यानत करने का नाम हुसैनियत क़ौम की अमानत बचाने का नाम, यज़ीदीयत ज़िल्लत का नाम हुसैनियत इल्म का नाम, यज़ीयत ज़ुल्म व सितम का नाम हुसैनियत अमन व सलामती का नाम, यज़ीदीयत अन्धेरे की अलामत है और रौशनी का इस्तेआ़रा है यज़ीदीयत ज़िल्लत का नाम है, हुसैनियत इंसानियत को नफ़ा बख़्शने का नाम है।

यह क्या वजह है कि चौदह सौ साल गुज़र जाने पर भी हर साल उनका ग़म ताज़ा होता है। अगर यह शहादत किसी अज़ीम मक़्सद के लिए न थी तो महज़ ज़ाती मुहब्बत व तअल्लुक़ की बिना पर सदियों उसका ग़म जारी रहने के कोई मानी नहीं हैं। और ख़ुद इमाम की अपनी निगाह में इस महज़ ज़ाती व शख़्सी मुहब्बत की क्या क़द्र व क़ीमत हो सकती है। उन्हें अगर अपनी ज़ात इस मक़्सद से ज़्यादा

अज़ीज़ होती तो वह उसे कुरबान ही क्यों करते। उनकी यह कुरबानी तो खुद इस बात का सुबूत है कि वह इस मक़्सद को जान से बढ़ कर अज़ीज़ रखते थे।

अब देखना यह है कि वह क्या मक़्सद था। क्या इमाम ने तख़्त व ताज के लिए अपने सर धड़ की बाज़ी लगा दी थी।

कोई भी शख़्स जो इमाम हुसैन के घराने की बुलन्द अख़्लाक़ी सीरत को जानता है वह यह बदगुमानी नहीं कर सकता कि यह लोग अपनी ज़ात के लिए इक़्तिदार हासिल करने की ख़ातिर मुसलमानों में ख़ूंरेज़ी कर सकते थे।

पूरी तारीख़े इस्लाम इस बात की गवाह है कि हुकूमत हासिल करने के लिए लड़ना और कश्त व ख़ून करना, हरगिज़–हरगिज़ उनका मसलक न था। इमाम आली मक़ाम की निगाहें उस वक़्त मुस्लिम मुआशरे और इस्लामी रियासत की रूह और उसके मिज़ाज और उसके निज़ाम में किसी बड़े तग़ैय्युर के आसार देख रही थीं जिसे रोकने की जद्दो जहद करना उनके लिए ज़रूरी था। हत्ता कि उस राह में लड़ने की नौबत भी आ जाए तो न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि फ़र्ज़ समझते थे। तारीख़ के मुताला से जो चीज़ वाज़ेह तौर से सामने आती है वह यह है कि यज़ीद की वली अहदी और फिर उसकी तख़्त नशीनी से दरअसल जिस ख़राबी की इब्तिदा हो रही थी वह इस्लामी दस्तूरुल–अमल और उसके मिज़ाज और उसके मक़्सद की तब्दीली थी।

इस तब्दीली के पूरे नताइज अगरचे उस वक़्त सामने न आए थे लेकिन एक साहबे नज़र आदमी गाड़ी का रुख़ तब्दील होते ही जान सकता है कि अब उसका रास्ता बदल रहा है। और जिस राह पर मुड़ रही है वह आख़िरकार उसे कहां ले जाएगी। यही रुख़ की तब्दीली थी जिसे इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने देखा और गाड़ी को फिर से सही पटरी पर डालने के लिए अपनी जान लड़ा देने का फ़ैसला किया।

उस चीज़ को ठीक से समझने के लिए हमें देखना यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और ख़ुल्फ़ाए राशेदीन की सरबराही में इस्लाम का जो निज़ाम चालीस साल तक चलता रहा,

उसके दस्तूर की बुनियादी खुसूसियात क्या थीं। और यज़ीद की वली अहदी से मुसलमानों में जिस दूसरे निज़ाम का आग़ाज़ हुआ उसके अन्दर क्या खुसूसियात थी जो दौलते बनी उमैया व बनी अब्बास और बाद के बादशाहें में ज़ाहिर हुईं। इसी तक़ाबुल से हम यह जान सकते हैं कि यह गाड़ी पहले किस लाइन पर चल रही थी ओर इस नुक़्त–ए–इंहिराफ़ पर पहुंच कर आगे वह किस लाइन पर चल पड़ी। और इसी तक़ाबुल से हम यह समझ सकते हैं कि जिस शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सैय्यदा फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा और हज़रत मौला अली रज़ि अल्लाहु अन्हु की आग़ोश में तर्बियत पाई थी वह क्यों इस नुक़्त–ए–इंहिराफ़ के सामने आते ही गाड़ी को इस नई लाइन पर जाने से रोकने के लिए खड़ा हो गया और क्यों उसने इस बात की परवाह न की कि इस ज़ोरदार गाड़ी का रुख़ मोड़ने के लिए उसके आगे खड़े हो जाने का क्या नतीजा हो सकता है।

इस्लाम की अव्वलीन खुसूसियत यह है कि उसमें सिर्फ़ ज़बान से इक़रार ही नहीं बल्कि अमल ज़रूरी है और क़ानूने ख़ुदा पर अमल करना ज़रूरी है न कि किसी बादशाह के क़ौल व फ़ेअ्ल पर।

इस्लाम का मक़्सद ख़ुदा की ज़मीनों में उन नेकियों को क़ाइम करना और फ़रोग़ देना था जो ख़ुदा को पसन्द हैं और उन बुराइयों को दबाना और हटाना जो ख़ुदा को पसन्द नहीं।

मगर इंसानी बादशाहत का रास्ता इख़्तियार करने के बाद मक़्सदे हुकूमत ऐशे दुनिया के सिवा कुछ न रहा। उनके हाथों भलाईयां कम और बुराइयां ज़्यादा फैलीं। भलाइयों के फरोग़ और बुराइयों के रोक थाम के लिए जिन अल्लाह के बन्दों ने काम किया अक्सर वह हुक्मरानों के ग़ज़ब में गिरफ़्तार रहे।

हद यह है कि उन लोगों ने अपने मफ़ाद की ख़ातिर इस्लाम की इशाअत में रुकावटें डालने से दरेग़ न किया जिसकी बदतरीन मिसाल बनू उमैया की हुकूमत में नौ मुस्लिमों पर जिज़्या लगाने की सूरत में ज़ाहिर हुई।

इस्लाम की रूह तक़्वा, ख़ुदा तरसी और परहेज़गारी की रूह थी जिस का सबसे बड़ा मज़्हर रियासत का सबसे बड़ा सरबराह ख़लीफ़ा होता था। हुकूमत के उम्माल, क़ाज़ी और सिपेहसालार सबके सब इस रूह से सरशार होते थे। और फिर उसी रूह से वह पूरे मुआशरे को सरशार करते थे। लेकिन बादशाही की राह पर पड़ते ही मुसलमानों की हुकूमतों और उनके हुक्मरानों ने क़ैसरो किसरा के रंग ढंग और ठाठ बाट इख़्तियार कर लिए।

अद्ल की जगह ज़ुल्म व जौर का ग़लबा होता चला गया, परहेज़गारी की जगह फ़िस्क़ व फ़ुजूर और राग रंग, ऐश व इशरत का दौर दौरा शुरू हो गया। हलाल व हराम की तमीज़ से हुक्मरानों की सीरत व किरदार ख़ाली होते चले गये। सियासत का रिश्ता अख़्लाक़ से टूटता चला गया। ख़ुदा से ख़ुद डरने के बजाए हुक्मरान बन्दगाने ख़ुदा को अपने आप से डराने लगे और लोग ईमान व ज़मीर बेदार करने के बजाए उनको अपनी बख़्शिशों के लालच से ख़रीदने लगे।

यज़ीद के वली अहद के दौर से जो फ़ितने का सिलसिला शुरू हुआ तो आज तक थमने का नाम न लिया और मुसलमानों को अमन व सलामती की तरफ़ पलटना नसीब न हुआ।

ख़िलाफ़त की जगह जब बादशाही निज़ाम आया तो अस्बियत के शयातीन हर गोशे से सर उठाने लगे। शाही ख़ानदान और उनके हामी ख़ानवादों का मरतबा सबसे बुलन्द व बरतर हो गया। उनके क़बीलों को दूसरे क़बीलों पर तरजीही हुक़ूक़ हासिल हो गये। अरबी अज्मी के तअस्सुबात जाग उठे और ख़ुद अरबों में क़बीलों के दर्मियान कशमकश पैदा हो गई।

अब बादशाह और शहज़ादे और उमरा व हुक्काम और सिपेहसालार ही नहीं शाही महल्लात के मुंह चढ़े लौंडी ग़ुलाम तक क़ानून से बालातर हो गये।

लोगों की गर्दनें पीठें और आबरूएं सब उनके लिए मुबाह हो गईं। इंसाफ़ के दो मेअ़्यार बन गये। एक कमज़ोर के लिए, एक ताक़तवर के लिए। मुक़द्दमात में अदालतों पर दबाव डाले जाने लगे। और बेलाग इंसाफ़ करने वाले क़ाज़ियों की शामत आने लगी। हत्ता कि ख़ुदा तरस

फ़ुक़्हा ने अदालत की कुर्सी पर बैठने के बजाए कोड़े खाना और क़ैद हो जाना ज़्यादा क़ाबिले तरजीह समझा ताकि वह ज़ुल्म व जोर के आलाकार बन कर ख़ुदा के अज़ाब के मुस्तहिक़ न बनें।

इन सारे हालात का अगर बग़ौर मुशाहिदा किया जाए यानी करबला से पहले दौराने करबला और करबला के बाद तो एक और अहम बात वाज़ेह होती है। सबसे पहली अहम बात यह कि इस दौर में कई सहाब–ए–किराम भी मौजूद थे। उनमें कई उम्र रसीदा भी हो चुके थे, ताबईन भी थे जिन्होंने अपनी आंखों से सबसे सुनहरे दौर का मुशाहिदा किया था। जैसा कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया था कि ख़ैरुल–क़ुरूने क़रनी मेरा ज़माना सबसे बेहतरीन है। उसके मुक़ाबले में आज पन्द्रहवीं सदी का दौर कोई मुक़ाबला नहीं रखता। अब सवाल यह है कि इतने क़रीबी दौर में भी कई लोग करबला की हक़ीक़त व अहमीयत को न समझ सके।

उसकी असल वजह यह है कि लोगों को ग़लत फ़हमी में रखा गया। ग़लत प्रोपेगन्डा किया गया। यहां तक कि शाम और कूफ़ा वालों को भी असल मुआमले की हवा तक न लगने दी गई। यह कैसे हुआ, वजह क्या थी बहुत ही इख़्तिसार से काम लेकर बात कही जा रही है।

जब ऐलाने नुबुव्वत हुआ तो दुनियाए अरब में एक हीजान शुरू हुआ। एक इंक़ेलाब आया और ऐसी हवा चली कि ज़ुल्मत और कुफ़्र के पहाड़ तिनके बन कर बिखरने लगे। नूरे हक़ के सामने कुफ़्र का अन्धेरा टिक न सका। अरब के बड़े–बड़े क़बीलों ने जो अपने कुफ़्र में मग़रूर थे, उन्होंने पूरा ज़ोर लगाया मगर बिल–आख़िर सबके क़दम उखड़ गये। उनमें पेश–पेश बनू उमैया का क़बीला था। आख़िर फतहे मक्का के दिन जब कोई राहे फरार न नज़र आई तब मज्बूर व लाचार होकर हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पर्दा फरमाने से एक साल क़ब्ल मुसलमान हुए। इस दौरान कई ऐसे भी मुसलमान हुए जिन्हें यह लगा कि अब बचना मुश्किल है, गर्दन मार दी जाएगी, हालांकि वह दिल से न कभी ईमान लाए, न ही उसका इरादा रखते थे।

उन्हीं के बारे में बारी तआला का इरशाद सूरः बक़रह की इब्तिदाई आयात में मौजूद है :

1. आयत नम्बर 8 : और लोगों में से बाज़ वह हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर और यौमे क़्यामत पर ईमान ले आए हालांकि वह हरगिज़ मोमिन नहीं हैं।

आयत नम्बर 11 : और जब उन से कहा जाता है कि ज़मीन पर फसाद बरपा न करो तो कहते हैं कि हम ही तो इस्लाह करने वाले हैं।

आयत नम्बर 12 : आगाह हो जाओ यही लोग हक़ीक़त में फसाद करने वाले हैं मगर उसका उन्हें एहसास तक नहीं।

अब यह रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहमत ही तो थी कि फतहे मक्का में आम मुआफ़ी दे दी गई। लेकिन जो जान बचाने के लिए मुसलमान हुए थे अब उनकी समझ में यह अच्छी तरह आ गया था कि मोमिनों को मैदाने जंग में शिकस्त देना मुम्किन नहीं इसलिए उन्होंने यह रास्ता अपनाया कि मुसलमान बनो। उन्हीं में रहो।

बज़ाहिर आलिम भी बनो और जब इस क़ौम के आम आदमी हम पर भरोसा करने लगें तो उन्हें गुम्राह करना शुरू करो। उनके ईमान खोखले कर दो। मुहब्बते रसूल व आले रसूल से उन्हें दूर कर दो। खुद साख़्ता झूठी हदीसें और ग़लत तफ़्सीरें बयान करो। आम आदमी बज़ाते ख़ुद तो तहक़ीक़ करता नहीं, वह जिसे आलिम समझता है उसी से पूछता है।

ग़र्ज़ेकि हक़ परस्तों को हक़ के शैदाइयों को गुमनामी में धकेल कर दुनिया परस्तों के नामों को तशहीर दी जाने लगी, उनके किरदार को बढ़ा चढ़ा कर पेश किया जाने लगा। मुनज़्ज़म तरीक़े से काम होने लगा।

ग़लत को सही साबित करने की और हक़ को बदनाम करने की रविश शुरू हुई। यह सिर्फ़ इसलिए था कि उन्हें इक़्तिदार मिले, दुनिया व दुनिया की दौलत मिले। ईमान वालों ने कभी उसकी तमन्ना नहीं रखी, वह अज़ ख़ुद दस्तबरदार हो गये।

उन्हें आम मुसलमानों के ईमान को खोखला करने में जो कामयाबी मिली उसके ज़िम्मेदार हम ख़ुद हैं।

हम आम मुसलमान ही तो हैं क्योंकि हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक अहम फरमान को नजर अन्दाज़ कर दिया। खुद सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि इल्म हासिल करो चाहे उसके लिए मुल्क चीन ही क्यों न जाना पड़े यानी चाहे जितनी मशक़्क़तें और परेशानी हों इसके बावजूद इल्म की तलाश में सरगरदां रहो और अपने को ज़ेवरे तालीम से आरास्ता करो। वरना मंज़िले मक़्सूद तक नहीं पहुंच सकोगे। गोया तालीम को इस्लाम में बुनियादी हैसियत हासिल है क्योंकि तालीम के बग़ैर न तो कोई खुदा को पहचान सकता है न रसूल को। न दीन को समझ सकता है, न दुनिया को, न मज़्हब का वफ़ादार हो सकता है न मुल्क व मिल्लत का। न खुद को सुधार सकता है न मुआशरा को। न अहबाब का ख़ैरख़्वाह हो सकता है, न पड़ोसी का, न अच्छाई बुराई में तमीज़ कर सकता है, न हक़ व बातिल में फ़र्क़ ग़र्ज़ेकि दीनी और दुनियवी हर शोबे में तालीम की शदीद ज़रूरत है। खुसूसन आज के जदीद दौर में जबकि मफ़ादात की जंग जारी है, इंसानियत की बक़ा ख़तरे में है। दरिन्दगी का बाज़ार गर्म है, बेहयाई और उरयानियत अपने शबाब पर है, अख़्लाक़ी बेराह रवी आम है, माद्दीयत परस्ती और हवस परस्ती ने समाज व मुआशरा को हिला कर रख दिया है। ऐसे आलम में तालीम की ज़रूरत व अहमीयत मज़ीद बढ़ जाती है।

अब यहां सवाल यह पैदा होता है कि वह कौन सी तालीम है जो एक इंसान को तमाम शोअ़बहाए ज़िन्दगी में कामयाबी दिला सकती है और दीन व दुनिया में उसकी कामिल रहनुमाई कर सकती है। इस सवाल के जवाब के लिए हमें दूर जाने की ज़रूतर नहीं। इस्लाम के इब्तिदाई अहद को देख लीजिए जवाब मिल जाएगा। जब परवरदिगारे आलम ने अपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अव्वलीन पैग़ाम से शर्फ़याब किया तो फरमाया इक़रा बिस्मे रब्बिकल्लज़ी ख़लक़। यानी ऐ महबूब अपने रब के नाम से पढ़ो जिसने आपको पैदा फरमाया है।

इससे मालूम हुआ कि इंसान के लिए वही तालीम मुफ़ीद है जिसमें

परवरदिगारे आलम का नाम शामिल हो जो तालीम रज़ाए इलाही के ऐन मुताबिक़ हो, जो तालीम अख़्लाक़ी इक़्दार और मज़्हबी रिवायात की पासदार हो। जो भाई चारे, उख़ुव्वत व मुहब्बत और इंसानियत की बक़ा की अलमबरदार हो जैसा कि हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है। कि : लबुल–इल्मु फ़रीज़तुन अला कुल्ले मुस्लिम।

"इल्म का हुसूल हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है (चाहे वह मर्द हो या औरत)।

तहसीले इल्म सिर्फ़ मर्दों ही के लिए नहीं बल्कि औरतों के लिए भी ज़रूरी है और वह शरीअ़त व समाज के हुदूद और दाइरे में रह कर बल्कि मर्दों के मुक़ाबले में औरतों को ज़्यादा से ज़्यादा तालीम के हुसूल पर ज़ोर देना चाहिए। क्योंकि वह जिस क़द्र तालीम और तहज़ीब व तमद्दुन से आशना होंगी समाज व मुआशरा इसी एतबार से मुहज़्ज़ब कहलाएगा। यह बात ज़िम्मेदारी से कही जा सकती है कि औरतों की इस्लाह व दुरुस्तगी तमाम अफ़रादे मिल्लत की इस्लाह व दुरुस्तगी की अव्वलीन शर्त है। यही सबब है कि मुहसिने इंसानियत सरकारे दोजहां सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मां की गोद को पहला मदरसा और तर्बियतगाह क़रार देकर यह वाज़ेह कर दिया कि एक अच्छे मुआशरा की तश्कील में औरतों का किरदार बुनियादी होता है और यह कि वह इंसानियत के लिए एक फ़ितरी मुअल्लेमा की हैसियत रखती हैं।

यह इल्म ही तो था कि फातेह शाम हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने कूफ़ा व शाम के दरबारों में अपनी इल्मी लियाक़त से फसीह व बलीग़ ख़िताब करके ज़ालिमों के सामने हक़ की निशानदेही की और अपने ख़ुतबों से इंक़ेलाब बरपा कर दिया और ज़ालिमों के नापाक मन्सूबों को ख़ाक में मिला दिया। लेकिन आज हमारी क़ौम का हाल देखिए इल्म से जैसे दुश्मनी हो, इल्मे दीन का तजस्सुस ही नहीं। हमारा किरदार जो होना चाहिए उसके बिल्कुल उल्टा है। यज़ीदी शक्लें बदल–बदल कर आते हैं अगर इल्म नहीं है तो उनके धोखे में आकर अपनी आक़िबत बरबाद कर लोगे। आज इसी लिए यह बहरूपिए

आलिमों का लबादा ओढ़ कर अपनी साज़िशों में कामयाब हैं और दहशतगर्दी का माहौल पैदा करते हैं ताकि ग़ैर कौमों के दिलों में मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत फैले इस तरह वह इस्लाम से दूर रहें। यही उनकी कोशिश है। यही कोशिश यज़ीद ने भी की थी।

यही कुछ होने लगा था दौरे यज़ीद में। हमारे इमाम ने इस रुख़ को पहले ही देख लिया था, दुनिया के सामने इस्लाम की असल शक्ल वाज़ेह तौर पर लाना ज़रूरी समझा इसीलिए इमामे ज़मां ने अपना सब कुछ दाव पर लगा दिया और दुनिया वालों को दिखा दिया कि इस्लाम की असल शक्ल क्या है। कभी हक़ की आवाज़ ख़त्म नहीं हो सकती हक़ वाले कभी फना नहीं हो सकते।

आइए सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के मुक़द्दस ख़ून की क़सम खा कर हम यह अहद करें कि राहे हक़ से हमारा क़दम हरगिज़ नहीं हटेगा। जीएंगे हुसैनी बन कर, मरेंगे हुसैनी बन कर। यज़ीदीयत यह है कि अमन व अमान का शीराज़ा बिखेर कर दहशतगर्दी का माहौल पैदा कर दिया जाए और मज़्लूमों, कम्ज़ोरों पर ज़ुल्म व सितम किया जाए, अमानत में ख़्यानत की जाए मगर हुसैनियत यह है कि अमन व अमान को बरक़रार रखा जाए, दहशतगर्दी का माहौल न पैदा होने दिया जाए, मज़्लूमों व कम्ज़ोरों की मदद की जाए और उन्हें सीने से लगाया जाए, इसी में अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रज़ा है।

इसी के पेशे नज़र

हज़रत मौलाए कायनात हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ि अल्लाहु अन्हु इरशाद फरमाते हैं कि :

दुनिया एक मकान है, जिसके मकीन सज़ा से बच नहीं सकते हैं, उस वक़्त जब तक वह उसमें मुक़ीम हैं, जो लोग दुनियावी नेमतें हासिल करते हैं। उससे उनको तस्कीन नहीं होती। दुनिया एक जगह है इम्तिहान की जब इंसान दुनिया में क़दम रखता है उसका इम्तिहान शुरू हो जाता है। वह इम्तिहान में डाल दिया जाता है।

जो लोग दुनियावी नेमतों को पाते हैं। वह मखरज समझे जाते हैं और उनको इन खुशियों और नेमतों का हिसाब देना होगा।

लेकिन वह लोग जो आक़िबत के लिए यहां अच्छे काम कर जाएंगे वह दूसरी दुनिया में उसका इन्आम पाएंगे। अक्लमन्द लोगों के लिए दुनिया वैसे ही बेकार है जैसे एक चलते मुसाफिर के लिए साया जो कुछ देर क़ब्ल बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा था और कुछ ही देर में ग़ायब। बेशक वफ़ादारी और ईमानदारी सच्चाई के साथी हैं। मुझे ऐसी कोई ढाल दिखाई नहीं देती जो वफ़ादारी से ज़्यादा किसी शख़्स को बचा सकती है। वह जो हमेशा क्यामत के दिन को अपने सामने तसव्वुर करेगा, वह ध ोखेबाज़ साबित नहीं हो सकता।

अफ़्सोस! हम इस अहद में पैदा हुए जबकि बहुत से लोग फरेबदेही को होशियारी व अक्लमन्दी समझते हैं। जाहिल लोग उनको अक्लमन्द समझते हैं। ख़ुदा की मार हो ऐसे लोगों पर जो दूसरों को धोखा देते हैं। ज़मीने करबला से इमाम हुसैन आवाज़ दे रहे हैं कि ऐ मेरे नाना के उम्मतियो! मैंने अपनी शहादत देकर तुम्हें हर चीज़ से आगाह कर दिया है। ताकि तुम उस पर अमल करके मैदाने महशर में जब आओ तो तुम अल्लाह के सामने और मेरे नाना जान के सामने सुर्ख़रू हो और शर्मिंदगी न हो।

मौला तआला हम सबको इन तमाम बातों पर अमल करने की और ज़िक्रे पंज तन पाक में मरने जीने की और शुहदाए करबला के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अता फरमाए। आमीन आमीन आमीन बेजाहे सैय्यदुल–मुरसलीन।

इंसान को बेदार तो हो लेने दो
हर क़ौम पुकारेगी हमारे हैं हुसैन

शैदा कमाली बलरामपुरी

फ़ज़ाइले आशूरा

हज़रत मौला अली मुश्किल कुशा रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिस शख़्स ने आशूरा के शब में इबादत की तो अल्लाह तआला जब तक चाहेगा उसे ज़िन्दा रखेगा। (गुनियतुत्तालेबीन : स. 438)

सैयदना ग़ौसुल–आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु इरशाद फरमाते हैं कि जिस शख़्स ने शबे आशूरा में रात भर इबादत की और सुबह को रोज़ा रखा तो उसे इस तरह मौत आएगी कि उस शख़्स को एहसास भी न होगा। (गुनियतुत्तालेबीन : स. 427)

शबे आशूरा की इबादत

1. दो रकअत नमाज़ नफ़्ल शबे आशूरा में रौशनी क़ब्र के लिए पढ़ें इस तरकीब से कि दोनों रक्अत में सूरः फातिहा के बाद सूरः इख़्लास तीन, तीन, बार पढ़ें। अल्लाह तआला क़यामत तक उसकी क़ब्र को रौशन फ़रमाएगा।
2. चार रकअत नमाज़ नफ़्ल एक सलाम से पढ़ें, चारों में सूरः फातिहा के बाद सूरः इख़्लास पचास–पचास बार पढ़ें। अल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले के पिछले पचास साल के गुनाह और आइन्दा पचास साल के गुनाह बख़्श देगा।
3. जो शख़्स आशूरा के दिन ग़ुस्ल करेगा उसके एक–एक पानी के क़तरे से एक–एक गुनाह झड़ जाता है।

आशूरा की इबादत

हज़रत अबू क़तादा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रूसलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मुझे अल्लाह से उम्मीद है कि आशूरा का रोज़ा एक साल के क़ब्ल का गुनाह मिटा देता है। हज़रत बाबा फरीदगंज शकर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि आशूरा के दिन जंगल

की हिरनियां भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खानदान की दोस्ती के सबब अपने बच्चों को दूध नहीं पिलातीं। आदमियों के हाल पर अफसोस है और तअज्जुब है कि वह रोज़ा नहीं रखते।

सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह के फरमूदात में मैंने लिखा देखा कि जो कोई मुहर्रम की चांद रात में दो रकअत इस तरह पढ़े कि दोनों में सूरः फातिहा के बाद सूरः इख़्लास दस बार पढ़े। तो उस नमाज़ के पढ़ने वाले को अल्लाह तआला जन्नत में दो हज़ार महल अता फरमाएगा। और हर महल में हज़ार दरवाज़े याकूत के होंगे, हर दरवाज़े पर एक तख़्त ज़बरजद का होगा और उस पर हूर बैठी होगी और छः हज़ार बुराईयां उस नमाज़ी की दूर होंगी और हज़ार नेकियां उसके नाम–ए–आमाल में लिखी जाएंगी।

सरकार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ि अल्लाहु अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं कि जो कोई आशूरा के रोज़ सत्तर मरतबा हस्बियल्लाहु व नेअ्मल वकील पढ़े, अल्लाह तआला उसको बख़्श देगा और उसका नाम औलियाए किराम में तहरीर फरमाएगा।

अक़्वाले ज़र्री

1. मोमिन वह नहीं जिस की महफ़िल पाक हो, मोमिन वह है जिसकी तन्हाई पाक हो।
2. यह दुनिया भी कितनी अजीब है कि ईमानदार को बेवकूफ़ और बेईमान को अक़्लमन्द और बेहया को ख़ूबसूरत कहती है।
3. इंसान दुनिया में इस क़द्र मगन हो चुका है कि उसे पता भी नहीं चलता कि जिस कपड़े से उसका कफन बनना है वह बाज़ार में आ चुका है।
4. सच्चाई निजात देती है और झूठ हलाक करता है।
5. ख़ुद को बदल दो क़िस्मत ख़ुद बख़ुद बदल जाएगी।

6. हंसी की कसरत दिल के मुर्दा होने का सबब हो जाती है।
7. हर किसी को इतनी अहमियत दो जितनी वह तुमको देता है। अगर कम दोगे तो मग़रूर कहलाओगे अगर ज़्यादा दोगे तो ख़ुद गिर जाओगे।
8. इंसान हो कर ऐसे काम मत करो जिस से इंसानियत का दामन दाग़दार हो जाए।
9. ज़िक्र से मुराद ग़फ़लत को दूर करना है।
10. दिमाग़ को अल्लाह ने दिल से ऊंची जगह दी है इसलिए जज़्बात को हर हाल में दिमाग़ के ताबे रखना चाहिए।
11. तहरीक एक ख़ामोश आवाज़ है क़लम हाथ की ज़बान।
12. मुझे मेरे दोस्तों से बचा, दुश्मनों से बचने का इंतिज़ाम मैं ख़ुद कर लूंगा।

मैदाने हश्र और मुरक़्क़ए करबला

क़यामत होगी जो महशर में करबला होगी
बपा अदालत सुल्ताने किब्रिया होगी
उधार जमाअत सुल्ताने अंबिया होगी
इधर जमाअत अहबाबे अश्क़िया होगी
ख़ुदा के हुक्म से लाएंगे जिब्रीले अमीन
उठा के अर्शे मुअ़ल्ला पे करबला की ज़मीन
फ़ुरात होगी वही होगा उसका जोश व ख़रोश
लबे फ़ुरात पे शामी हज़ारों तेग़ बदोश
दरे ख़ैय्याम पे कुछ बच्चे ज़ुअ़्फ़ से ख़ामोश
पड़ा है झूले में शशमाह इक तरफ़ ख़ामोश
खड़ी है ख़ेमा में इक बच्ची प्यास से बेचैन
चचा चचा की सदा है कभी हुसैन हुसैन
पड़ा है दस्त बर दीदह कोई फ़ुरात के पास

अलम पड़ा है फरेरे पे लिखा है अब्बास
न ज़ीस्त की है तमन्ना न ज़िन्दगी की आस
सूए ख़ेय्याम नज़र है कभी बहसरत व यास
कमर को पकड़े हुए एक बुज़ुर्ग आता है
उठा के दस्त बरीदा को बैठ जाता है
उठा के अपने अमामा से रुख़ को साफ किया
फिर अपना रुख़–रुख़े गुलनार पे यह रख के कहा
तुम्हारे बाद न अब लुत्फ़े ज़िन्दगी का रहा
लो आज भाई को तुम भाई कह दो ऐ भैया
सलाम को न उठा हाथ कह दिया भाई
बस उसके बाद न बोले फिर ऐसी नींद आई
बढ़े हुसैन उठाया पिसर को हाथों पर
थी गोया छोटी हमाइल कुरआन के ऊपर
किया पसन्द फिर ऐसा मक़ामे बाला तर
जहां से सूरत बेशेर आए सब को नजर
उठा के रुख़ से एबा फौज से ख़िताब किया
कि अज तुम ने ख़ुदा के नबी को ख़ूब दिया
अजीब बात है कि तुम कलिमा जिसका पढ़ते हो
रसूले हक़ की मुहब्बत का दम भी भरते हो
उसी की आल पे ज़ुल्म व सितम भी करते हो
न हक़ से डरते हो न हक़ के नबी से डरते हो
उसी रसूल का ऐ जालिमो नवासा हूं
मैं बेवतन भी हूं और तीन दिन का प्यासा हूं
सूए नजर में तुम्हारे अगर मैं हूं ख़ाकी
यह जबां तो किसी दहन में नहीं आसी
हैं ख़ुश्क होंठ दहन में जबान है प्यासी
रही है चन्द ही लम्हों की ज़िन्दगी बाक़ी
यह कह के बच्चा से फरमाया कि ख़िताब करो

इमाम ज़ादे हो बेटा सवाले आब करो
यह सुनकर बच्चा ने मुंह से निकाली खुश्क ज़बां
लबों फेरा किया सोज़िश दरों को अयां
हर एक संग से आने लगी सदाए फ़ुगां
ज़मीन लरज़ गई कांप उठी गर्दिशे दौरां
सियाह क़ल्ब कमीने का एक तीर चला
ज़बान थी होंठों पे बच्चा का छेद गया था गला
हुसैन बच्चा को फिर लेकर चन्द गाम चले
प्यासा लाए थे फिर लपके तिश्ना काम चले
लहू से तर गुले रुख़, लेके लाला फाम चले
संभल न सकते थे लेकर ख़ुदा का नाम चले
कहा उठा के यह बच्चे को दोनों हाथों पर
मैं ख़ुश हूं बाज़ आ जा तुझे क़बूल हो कर
ज़मीन में दफन किया रुख़ सिवाए ख़ैय्याम किया
रुबाब ने रुखे गुलगुलों को ग़ौर से देखा
समझ गईं मगर अपनी ज़ुबां से कुछ न कहा
जिगर के दाद को मां के हुसैन ने समझा
कहा अकेले में असग़र हमें बुलाते हैं
रुबाब तो ख़ुदा हाफ़िज़ कि हम भी जाते हैं
हुजूमे यास था ख़ेमे का पर्दा उठता था
कोई लिपटता था क़दमों से कोई सर को मलता था
कोई चला यह मेरा भाई बीन करता था
कोई पड़ा हुआ बीमार आहें भरता था
कोई लिपट के यह क़दमों से कर रही थी फ़ुग़ां
न जाने दूंगी मैं मक़्तल में तुम को बाबा जां
हुसैन ख़ेमे से निकले तो फिर क़याम किया
नबी की आल के पर्दे का इंतिज़ाम किया
न निकले कोई यह ख़ेमा से फिर कलाम किया

उठा के पर्दे को फिर आख़िरी सलाम किया
फरस को जाबिने अस्हाब बावफ़ा लाए
पिसर से मिल के बरादर की लाश पर आए
हुसैन कहते थे मेरे बहादुरो उठो
हुसैन जाता है लड़ने दिलावरो उठो
सफर क़रीब है मेरा मुसाफ़िरो उठो
हुसैन हो गया बेयारो बेदियार उठो
ख़ुदा के नाम पे अब जान देने जाता हूं
न उठो अच्छा न उठो कि मैं ही आता हूं
ख़याल आया कि लड़ना नहीं है गो मन्ज़ूर
समझ न ले यह जमाना हुसैन है मज्बूर
अली के शेर ने दिखलाए जौहरे मस्तूर
पहाड़ जल उठे चमका जो इक शोअ़्ल–ए–तूर
अजीब रंग है मुक़फ़्फ़ल है ज़ुलफ़िक़ारे अली
नज़र यह कहती थी ख़ैबर में लड़ रहे हैं अली
हुसैन ने वह शुजाअत के रंग दिखलाए
हजारों क़त्ल हुए भागे और टकराए
ज़ुबां पे बुज़िदले फरियादुल–अमां लाए
ख़ुदा का वास्ता हर बार दे के चिल्लाए
उधर से आ गई ख़ालिक़ की इरजई की सदा
इधर नियाम में साबिर ने तेग़ को रखा
फरस को मोड़ के मक़्तल में अश्क बार आए
अदू के तीर सितम आए बेशुमार आए
चहार सिम्त से तेगें लिए सवार आए
प्यादे हाथों में पत्थर लिए हजार आए
खड़े थे नरग–ए–आदा में जख़्म खाए हुए
हुसैन ख़ून में सर ता क़दम नहाए हुए
कि पुश्ते जीन पे इक बार डगमगाए हुसैन

ज़मीन पे आ गये सज्दे में सर झुकाए हुसैन
न सज्दा से अभी सर को उठाने पाए हुसैन
गले पे तेग़ थी और शश जेहत में आए हुसैन
बपा यह देख कर महशर में इक क़यामत थी
फलक ने भी जो न देखी वह यह शहादत थी
हुआ यह हुक्मे ख़ुदा का यज़ीद को लाओ
पिसरे ज़्याद को शिम्र व वलीद को लाओ
हर एक साबिक़ व लाहिक़ पलीद को लाओ
यज़ीद नजिस के हर इक मुरीद को लाओ
उठा के डाल दो दोज़ख़ में उन कमीनों को
सताया है मुझे और अर्श के मकीनों को

मनक़बत (1)

फ़ैज़ पाता है उसी दर से हर इंसान अब तक
कश्तिए नूह है शब्बीर का दामां अब तक
दर्से कुरआन से मिला अज़्मे रिसालत का हमें
हम शहे दीं पे लुटाते हैं दिलो जां अब तक
करबला में जो लहू गर्दने असगर से बहा
अर्शे आज़म पे है वह महरे दरख़्शां अब तक
कर दे कुरबान जो भाई पे जिगर के टुकड़े
सानीए ज़हरा सी देखी न कोई मां अब तक
जिसने कुरआन कटे सर से पढ़ा नेज़े पर
हम समझते हैं उसे वारिसे कुरआं अब तक
यौमे आशूरा बहा ख़ून नबी जादों का
सुबह के दोश पे है शामे गरीबां अब तक
जिस तरह क़त्ल हुए कूफ़े में मुस्लिम के पिसर
क़त्ल उस तरह हुआ कोई न मेहमां अब तक

बानिए ज़ुल्म मिटा पाएंगे क्या दीने ख़ुदा
जाते शब्बीर है ईमां की निगहबां अब तक
साढ़े चौदह सौ बरस बाद यह ग़म का आलम
अश्क आलूद है इमरान का दामां अब तक

–इमरान गोन्डवी

मनक़बत (2)

इंसानियत का यारो क़रीना हुसैन है
दीने मुहम्मदी का सफ़ीना हुसैन है
कहती है रोज़ बस यही तारीख़े करबला
इस्लाम तेरा सर, तेरा सीना हुसैन है
दोनों ही अपनी–अपनी जगह बेमिसाल हैं
मक्का अगर हसन तो मदीना हुसैन है
पुश्ते रसूले पाक पे सज्दे में देखिए
सरकार हैं अंगूठी नगीना हुसैन है
सिमटी हैं जिसमें नबियों को सारी अमानतें
क़ैसर मियां वही तो सफीना हुसैन है

जनाब क़ैसर बस्तवी
नाज़िमे आला जामिया उम्मे सलमा
महादेव, सिद्धार्थ नगर

मक़्बूल शुदह मनक़बत

बारगाहे सुल्तानुल–हिन्द ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह

पूरी कर दो मोरी मांगन सुल्तानुल–हिन्द ग़रीब नवाज़
आया हूं तोरे दुवारे साजन सुल्तानुल–हिन्द ग़रीब नवाज़
आज यह कैसा समां है प्यारे मेला लगा है तुमरे दुवारे
नूर से जल थल तुमरा आंगन सुल्तानुल–हिन्द ग़रीब नवाज़
आए हैं दरपे जितने भिखारी कोई है पैदल कोई सवारी
तुमरे नगर की करने दर्शन सुल्तानुल–हिन्द ग़रीब नवाज़
हिन्द में तुझ सा कौन है आया नव्वे लाख को कलिमा पढ़ाया
तू तो है ऐसा मन मोहन सुल्तानुल–हिन्द ग़रीब नवाज़
भारत के तुम महाबली हो मेरे ख़्वाजा जाने अली हो
तेरा दर है दरे पंजतन सुल्तानुल–हिन्द ग़रीब नवाज़
ख़्वाजा उस्मान का सदक़ा दे दो मेरे दिल को नूर से भर दो
तुम पे कुरबान मेरा तन मन सुल्तानुल–हिन्द ग़रीब नवाज़
फना बक़ा की मंज़िल पाते राधा का गुन कभी न गाते
कृष्ण जो खाते तेरा माखन सुल्तानुल–हिन्द ग़रीब नवाज़
अह्ले जहां ने उसको मारा आया है दर पे शैदा बेचारा
उसको बना लो अपना जोगन सुल्तानुल–हिन्द ग़रीब नवाज़

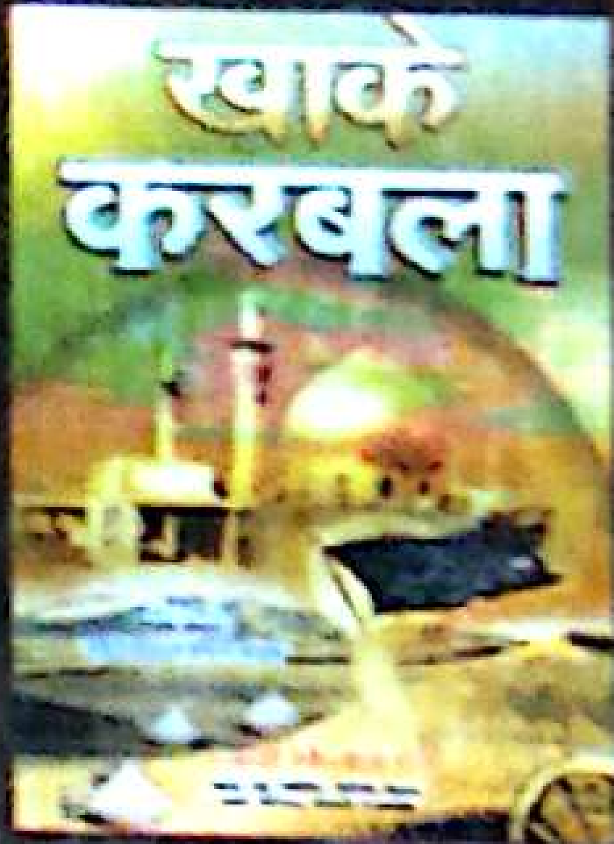
सलाम बहुज़ूर इमाम आली मक़ाम रज़ि अल्लाहु अन्हु

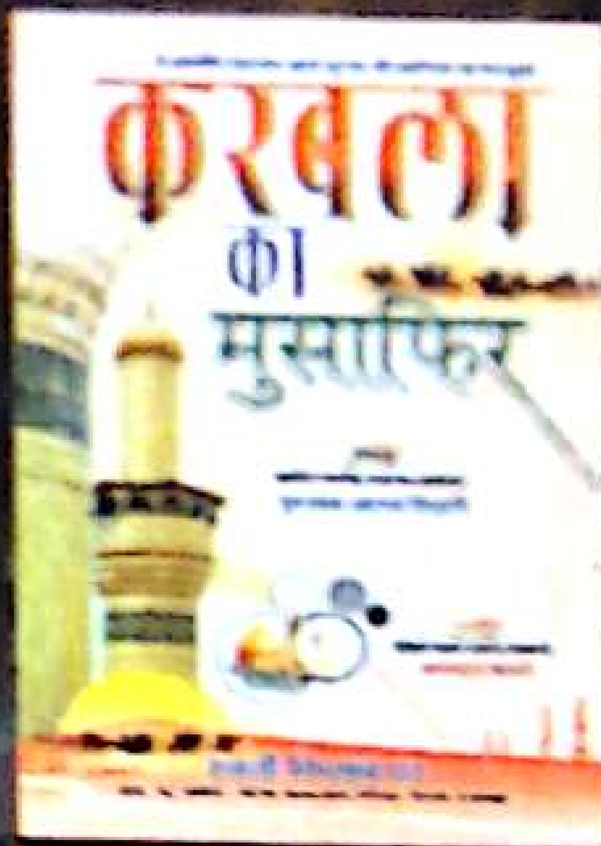
अज़ : हुज़ूर सैय्यदुल–उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद आले मुस्तफ़ा मियां क़ादरी बरकाती मारहरवी रहमतुल्लाह अलैह

तुम्हारे सज्दे को काबा सलाम कहता है
जलाल क़िबल–ए–ख़िज़रा सलाम कहता है
चमन का हर गुल व ग़ुंचा सलाम कहता है
हुसैन तुमको ज़माना सलाम कहता है
चिराग़ व मस्जिद वं मिंबर सलाम कहते हैं
नबी रसूल पयम्बर सलाम कहते हैं
अली व फ़ातिमा शब्बर सलाम कहते हैं
ख़ुदा गवाह कि नाना सलाम कहते हैं
ख़ुदा की राह में सर को कटा दिया तुमने
नबी के दीन पर घर को लुटा दिया तुमने
निशाने कुफ़्र को यक्सर मिटा दिया तुमने
तुम्हें ख़ुदा भी तुम्हारा सलाम कहता है
तुम्हें फलक के सितारे सलाम कहते हैं
तुम्हें कुरआन के पारे सलाम कहते हैं
तुम्हें हरम के मनारे सलाम कहते हैं
इमाम तुम को मदीना सलाम कहता है
सना तुम्हारी वज़ीफ़ा है मेरा आबाई
तुम्हारी मदह तो शेवह है मेरा मौलाई
बस इक नज़र हो जो मुझ पर तो मेरी बन आई
तुम्हारा सैय्यद शैदा सलाम कहता है



MA BAD-E-KARBALA





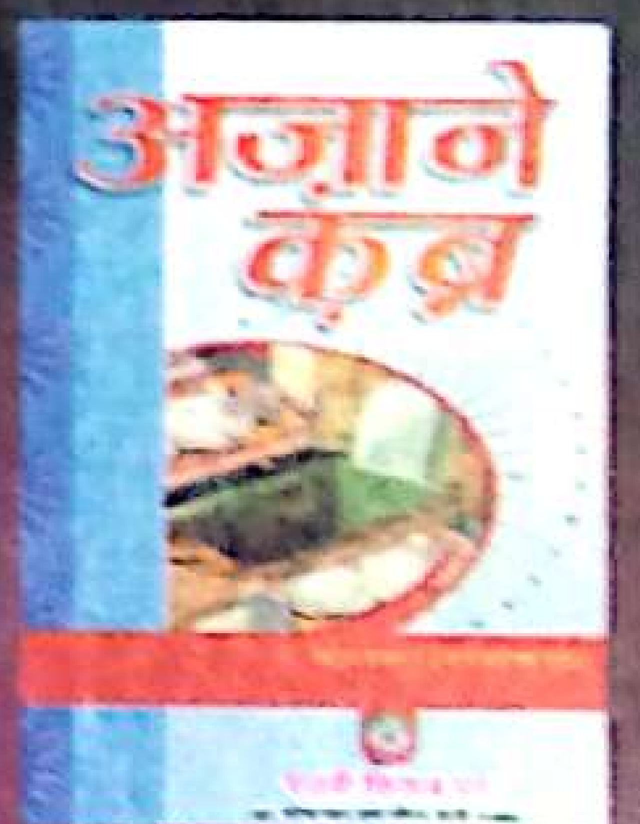






















ISBN 81-89201-33-9
Rs. 80/=

RAZAVI KITAB GHAR
425/2 Matia Mahal Jama Masjid Delhi-6
Contact:. 9350505879,011-23264524
e-mail ID : razavikitabghar@gmail.com